हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

सितम्बर 2017



AL KABIR POLYTECHNIC

A Muslim Minority Vnaided Institution
Recognised by SBTE, Govt. of Jharkhand
& Approved by AICTE Govt. of India

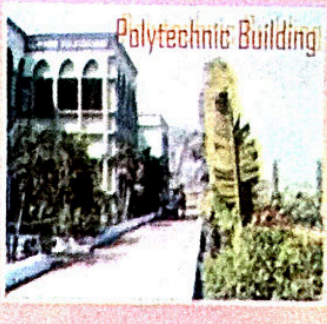

The institute in its academic program imparts three year diploma courses in engineering in following branches.

- Civil Engg.
- Electrical Engg.
- Mechanical Engg.
- Automobile Engg.
- Computer Science & Engg.
- Electronics & Communication Engg.



Kabir Nagar, P.O. Kopali, Via-Mango,
Jamshedpur-831012, Jharkhand
Tel. : 06591-260092, Tele Fax : 06591-260414
E-mail : principal_akpjsr@rediffmail.com
Website : www.al-kabirjsr.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 27 अंक 3 सितम्बर 2017

और लोगों को हज के लिए सामान्य रूप से घोषणा कर दो कि वे तुम्हारे पास हर दूरवर्ती स्थान से पैदल और ऊंटों पर सवार आएं, ताकि वे लाभ देखें जो यहां उनके लिए रखे गये हैं । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

नर हो न निराश करो मन को

नर हो न निराश करो मन को
कुछ काम करो कुछ काम करो
जग में रहके निज नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को ।

संभलो कि सुयोग न जाए चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलम्बन को
नर हो, न निराश करो मन को ।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे
हम भी कुछ हैं यह ध्यान रहे
मरणोत्तर गुंजित गान रहे
सब जाए अभी पर मान रहे
कुछ हो न तजो निज साधन को
नर हो, न निराश करो मन को ।

प्रभु ने तुमको कर दान किए
सब वांछित वस्तु विधान किए
तुम प्राप्त करो उनको न अहो
फिर है यह किसका दोष कहो
समझो न अलभ्य किसी धन को
नर हो, न निराश करो मन को ।

● **मैथिलीशरण गुप्त**



कहां क्या है ?

नर हो न निराश करो मन को (कविता)	–मैथिलीशरण गुप्त	3
कुरआन ज्योति		5
शरीअत की मर्यादाएं (हदीस मंजरी)		6
अल्लाह के प्रति सच्ची निष्ठा... (संपादकीय)		7
वी॰आई॰पी॰ कल्चर (आपके पत्र)		9
अन्नदाता (कविता)	–कन्हैयालाल अग्रवाल 'आदाब'	10
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का जीवंत संदेश (जीवन आदर्श)	–माहिरुल क़ादिरी	11
नमाज़ की प्राचीनता (आस्था)	–एस॰ एम॰ शरीफ़ कुरैशी	15
योग्यता के आकलन का यह कैसा तरीक़ा ? (कैरियर)	–मनीषा सिंह	21
इस्लाम में महिला-अधिकार (महिला जगत)	–जबीं अहमद	23
हज का महत्व (विशेष आयोजन)	–हुस्नुद्दीन अहमद	26-27
कुरबानी का उद्देश्य	–अबू अहमद नूर इलाही	33
त्याग और कुरबानी का महान पर्व	–विद्या प्रकाश	35
लाखों गांवों के करोड़ों युवा बेरोज़गार (दृष्टिकोण)	–वेद व्यास	37
हार्न (प्रेरणा)	–मधु हातेकर	39
फेफड़े का कैंसर : लक्षण व उपचार (स्वास्थ्य चर्चा)	–डॉ॰ ए॰ के॰ दीक्षित	41
कितना कम हुआ भ्रष्टाचार ? (ज्वलंत सामयिक)		43
विश्वास (कहानी)	–डॉ॰ नीरा प्रसाद	45
भारतीय अर्थव्यवस्था पर जी॰एस॰टी॰ के प्रभाव	–शाहिद इलियास	46
कैसे दूर हो किसानों की बदहाली (खेती-किसानी)	–संजीव पांडेय	47
सफलता कैसे प्राप्त करें ? (बालवीथी)		49

कुरआन ज्योति

(36) सच तो यह है कि इनमें से अधिकतर लोग केवल अटकल और गुमान के पीछे चले जा रहे हैं।[44], हालांकि अटकल सत्य की ज़रूरत को कुछ भी पूरा नहीं करता। जो कुछ ये कर रहे हैं, अल्लाह उसको ख़ूब जानता है।

(37) और यह क़ुरआन वह चीज़ नहीं है जो अल्लाह की वह्य और शिक्षा के बिना गढ़ लिया जाए, बल्कि यह तो जो कुछ पहले आ चुका था उसकी पुष्टि और 'विशिष्ट-किताब' का विस्तार है।[45] इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह सृष्टि के शासक की ओर से है।

(38) क्या ये लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने इसे स्वयं रच लिया है ? कहो, "अगर तुम अपने इस आरोप में सच्चे हो तो एक सूरा इस जैसी रच लाओ और एक अल्लाह को छोड़कर जिस-जिसको बुला सकते हो, सहायता के लिए बुला लो।"[46]

–क़ुरआन, 10 : 36-38

---

44. अर्थात जिन्होंने धर्म गढ़े, जिन्होंने दर्शन बनाए और जिन्होंने ज़िन्दगी के नियम प्रस्तावित किये, उन्होंने भी यह सब कुछ ज्ञान के आधार पर नहीं, बल्कि गुमान और अनुमान के आधार पर किया और जिन्होंने इन धर्म-गुरुओं और सांसारिक नेताओं का पालन किया, उन्होंने भी जानकर और समझकर नहीं, बल्कि केवल इस गुमान पर उनका पालन किया कि ऐसे बड़े-बड़े लोग जब यह कहते हैं और बाप-दादा उनको मानते चले आ रहे हैं और एक दुनिया उनके पीछे चल रही है तो वे ज़रूर ही ठीक कहते होंगे।

45. "जो कुछ पहले आ चुका था उसकी पुष्टी है", अर्थात आरंभ से जो आधारभूत शिक्षाएं नबियों के माध्यम से इन्सान को भेजी जाती रही हैं, यह क़ुरआन उनसे हटकर कोई नयी चीज़ नहीं प्रस्तुत कर रहा है, बल्कि उन्हीं की पुष्टि और समर्थन कर रहा है। अगर यह क़िसी नये धर्म की नींव रखने वाले की मानसिक उपज का परिणाम होता तो इसमें ज़रूर यह कोशिश पायी जाती कि पुरानी सच्चाइयों के साथ कुछ अपना निराला रंग भी मिलाकर अपनी अलग पहचान बना ली जाए।

'अल-किताब का विस्तृत विवेचन है' अर्थात उन आधारभूत शिक्षाओं को, जो तमाम आसमानी किताबों का सार (अल-किताब) है, इसमें फैलाकर प्रमाणों और गवाहियों के साथ, उद्देश्य और समझने के साथ, पूरी व्याख्या के साथ और व्यावहारिक परिस्थितियों पर चरितार्थ करते हुए बयान किया गया है।

46. सामान्य रूप से लोग समझते हैं कि यह चुनौती सिर्फ़ क़ुरआन की सशक्त भाषा और शैली और उसके साहित्यिक गुणों की दृष्टि से था। क़ुरआन के मोजज़ा (चमत्कार) होने पर जिस ढंग से वार्ताएं की गयी हैं, उससे इस भ्रम का पैदा होना कुछ असंभव भी नहीं है, लेकिन क़ुरआन का स्थान इससे उच्च है कि वह अपने अनुपम और अपूर्ण गुणों के दावे की नींव केवल अपने शाब्दिक गुणों पर रखे। निस्सन्देह क़ुरआन अपनी भाषा की दृष्टि से भी अनुपम है, मगर वह वास्तविक वस्तु जिसके आधार पर यह कहा गया है कि इन्सानी दिमाग़ ऐसी किताब नहीं लिख सकता, इसके विषय और इसकी शिक्षाओं में चमत्कार के जो-जो पहलू हैं और जिन कारणों से इनका अल्लाह की ओर से होना निश्चित और इन्सान का ऐसी रचना पर समर्थ होना असंभव है, उनको स्वयं क़ुरआन में अलग-अलग मौक़ों पर बयान कर दिया गया है और हम ऐसी तमाम जगहों की व्याख्या पहले भी करते रहे हैं और आगे भी करेंगे। इसलिए यहां वार्ता के लंबे होने के डर से इसे यहीं समाप्त किया जाता है।

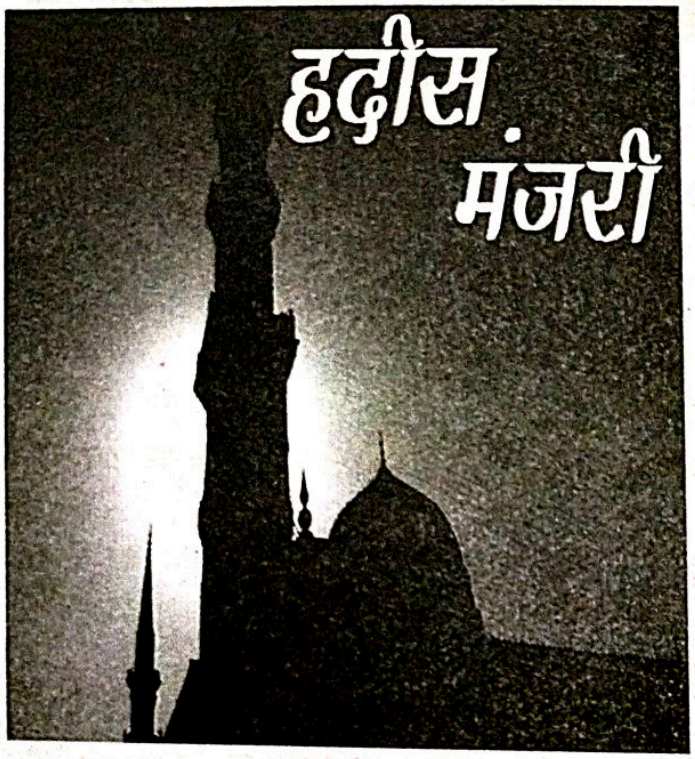

शरीअत की मर्यादाएं

● हज़रत अबू मसऊद उक़्बह बिन अम्र अल-बदरी (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि एक व्यक्ति नबी (सल्ल॰) के पास आया और कहा : मैं सुबह की नमाज़ में फ़लां व्यक्ति के कारण देर से शामिल होता हूं इसलिए कि वह नमाज़ को बहुत लंबी पढ़ाते हैं । रावी कहते हैं कि मैंने नबी (सल्ल॰) को किसी उपदेश और नसीहत में उस दिन से ज़्यादा क्रोधित नहीं देखा । आपने कहा : ''ऐ लोगो ! तुममें से कुछ नफ़रत पैदा करने वाले हैं, तो तुममें से जो कोई लोगों का इमाम बने, तो उसे चाहिए कि वह नमाज़ को संक्षिप्त करे क्योंकि उसके पीछे बूढ़े भी होते हैं और कमज़ोर और वे लोग भी जिनको कोई ज़रूरत होती है ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहती हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) सफ़र से लौटे । मैंने अपने कमरे के सामने के चबूतरे से लगा हुआ बारीक कपड़े का एक पर्दा लटका रखा था जिस पर कुछ चित्र थे । जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उसे देखा, तो आपके चेहरे का रंग बदल गया और आपने उन तस्वीरों को नष्ट कर दिया और कहा : ''ऐ आइशा, क़ियामत के दिन अल्लाह के यहां तमाम लोगों से बढ़कर यातना उन लोगों को दी जाएगी जो अल्लाह की रचना में समरूपता पैदा करने की कोशिश करते हैं ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है कि क़ुरैश के लोग एक मख़्ज़ूमी स्त्री के विषय में बहुत चिन्तित थे, जिसने चोरी की थी । उन्होंने कहा कि उसके विषय में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से कौन बात करे ? फिर वे कहने लगे कि उसामा बिन ज़ैद जो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को बहुत प्रिय हैं, उनके सिवा कौन बात करने का साहस जुटा सकता है ? अतएव हज़रत उसामा ने आपसे बात की तो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''तुम अल्लाह तआला की हद्दों (दंडों) में से एक हद्द के विषय में सिफ़ारिश करते हो ?'' फिर आप खड़े हो गये और संबोधित किया : ''तुमसे पहले जो लोग विनष्ट हुए वे इसी कारण कि जब उनमें का कोई उच्च वर्ग का व्यक्ति चोरी करता तो उसे छोड़ देते । और जब उनमें का कोई कमज़ोर वर्ग का व्यक्ति चोरी करता तो उसको दंड देते । अल्लाह की क़सम, अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती तो मैं उसका भी हाथ काट देता ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने मस्जिद में 'क़िबला' (काबा) की तरफ़ खखार पड़ा देखा, तो आप इसको सहन न कर सके यहां तक कि यह चीज़ आपके चेहरे से भी ज़ाहिर हो गयी । आप उठे और अपने हाथ से उसे खुरच दिया और कहा : ''जब तुममें से कोई अपनी नमाज़ में खड़ा होता है, तो वह अपने रब से गुप्त रूप से बातें करता है । और निश्चय ही उसका रब उसके और 'क़िबला' के बीच होता है । अतः तुममें से कोई 'क़िबला' की ओर न थूके बल्कि अपनी बायीं ओर या अपने पांव के नीचे थूके ।'' फिर आपने अपनी चादर का एक कोना पकड़ा, उसमें थूका और कपड़े को आपस में तहा दिया और कहा : ''या इस तरह करे ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

अल्लाह के प्रति सच्ची निष्ठा एवं भक्ति का प्रदर्शन

इस्लाम विशुद्ध एकेश्वरवादी धर्म है । वह मानव स्वभाव के एकदम अनुकूल है । अतः इस्लाम में अल्लाह को मानने और उस पर ईमान लाने का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि अल्लाह नियंता और कार्यसाधक है, बल्कि इस विश्वास में अल्लाह की सत्ता और उसके गुणों की उचित और पूर्ण धारणा पाई जाती है । यह विश्वास हमें अल्लाह की सत्ता और उसके गुणों की जो कल्पना देता है उसका हमारे जीवन से गहरा संबंध है । यही कारण है कि इस्लाम अल्लाह में विश्वास द्वारा केवल यही नहीं कि आत्मा की शुद्धि, विकास, ईश-भक्ति और नैतिक सुधार का काम लेता है, बल्कि इसी को उसने जीवन के समस्त क्रिया-कलाप और मानव सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला माना है । इस्लाम अल्लाह और बन्दे के बीच किसी मध्यस्थ और एजेंसी का क़ायल नहीं । वह किसी ऐसी अनुभूत और भौतिक चीज़ को रद्द करता है, जिसको मनुष्य अपने सोच-विचार में पूज्य की तरह बसा कर अपना सारा ध्यान, साहस और शक्ति उस पर केन्द्रित कर दे और उसके दामन से चिमट जाए । इस्लाम में न तो मध्यस्थ की गुंजाइश है, न दिखावों की, न तस्वीरों, न मूर्तियों की और न यहां पादरी एवं पुरोहित के क़िस्म का कोई वर्ग पाया जाता है, न कहानियों (ज्योतिषियों जैसे कर्म करने वालों) और मुजाविरों की कोई जमाअत । अल्लाह तआला का स्पष्ट कथन है : "और जब मेरे बन्दे मेरे बारे में तुमसे पूछें, तो मैं निकट हूं । मैं पुकारने वाले की पुकार का जब वह मुझे पुकारता है, उत्तर देता हूं । तो उन्हें चाहिए कि मेरी पुकार का भी उत्तर दें, मुझ पर ईमान रखें, ताकि वे मार्ग पर रहें (क़ुरआन, 2:186)।" इसके अतिरिक्त इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो विचार की पवित्रता, सोच की बुलंदी, नीयत और संकल्प की सुथराई, अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को पूज्य बनाने से सख़्ती से रोक, कर्म में निष्ठा के मानदंडों की उस पराकाष्ठा पर है, जिससे उत्तम मानदंड अकल्पनीय है । यह भी सच है कि एक ऐसी चीज़ की उत्कंठा और आरज़ू प्रत्येक प्राणी के स्वभाव में दाख़िल है, जिसको वह अपनी भौतिक आंखों से देख सके । उसके द्वारा अपने आकांक्षा-भाव को संतुष्टि प्रदान कर सके और सानिध्य व आदर-भाव की उस तीव्र अपेक्षा की पूर्ति कर सके जो सदैव से उसकी प्रकृति में मौजूद है । इसके लिए अल्लाह ने कुछ ऐसी प्रत्यक्ष और अनुभूत चीज़ें नियत की है जो उसकी सत्ता के साथ कुछ विशेषताएं रखती हैं, उसी की ओर जोड़ी जाती है, उसी की कहलाई जाती है और उन पर उसकी इतनी रहमत है कि उनको देखकर अल्लाह का स्मरण बढ़ जाता है । इसके अतिरिक्त उनके साथ बहुत-सी ऐसी घटनाएं, मामले, कर्म और हवाले जुड़े हैं, जो मानव को अल्लाह तआला की निशानियां, उसके इनाम, उसके एकेश्वरवादी धर्म, उसके रसूलों की कोशिशों और उनके धैर्य को याद दिलाती है ।

इन चीज़ों का नाम उसने ''शआइर अल्लाह'' रखा । इनके प्रति आदर-प्रदर्शन को अपने प्रति आदर-प्रदर्शन ठहराया एवं इनमें कोताही को अपने हक़ में कोताही के समान बताया तथा मनुष्यों को इस बात की अनुमति बल्कि दावत दी कि उसके द्वारा वे अपनी छिपी हुई प्रेम-भावना और अत्यांतिक लगाव के प्राकृतिक भाव को संतुष्टि प्रदान करें और अपने लिए शांति एवं सुकून का सामान करें । क़ुरआन में है : ''यह बात हो चुकी है, और जो कोई अल्लाह की (भक्ति से संबंधित) निशानियों का आदर क़रे, तो यह दिलों के तक़वा (धर्मपरायणता) की बात है (22:32)।'' एक और स्थान पर है : ''यह बात हो चुकी, और जो कोई अल्लाह की (निश्चित की हुई) मर्यादाओं का आदर करेगा, तो यह उसके रब के यहां उसी के लिए अच्छा होगा (22:30)।'' इमाम ग़ज़ाली (रह०) के अनुसार, अल्लाह के प्रति आदर और प्रेम-भाव एक विवेकी और अच्छे शील-स्वभाव वाले मनुष्य की वास्तविक आवश्यकता है । वह इसकी पूर्ति के लिए सदैव उत्सुक रहता है । अल्लाह के घर (काबा) और उसके साथ अल्लाह की जितनी निशानियां एवं हज की इबादतें व मक़ामात हैं, वे उसकी इस सच्ची और वास्तविक आवश्यकता को भली-भांति पूरा कर सकते हैं एवं उनसे उसको पूरी संतुष्टि और तसल्ली हासिल हो सकती है । अल्लाह तआला का कथन है : ''और (वह समय याद करो) जब हमने इबराहीम के लिए इस घर (काबा) की जगह ठहराई, (यह कहते हुए) कि मेरे साथ किसी को शरीक न करो, और मेरे घर को तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों एवं (इबादत में) खड़े होने वालों, झुकने तथा सजदा करने वालों के लिए पाक साफ़ रखो (22:26)।'' अल्लाह के घर को ईमान और इख़लास (सच्ची निष्ठा और प्रेम) की उन बुनियादों पर क़ायम किया गया, जिसकी मिसाल संसार में और कहीं नहीं मिलती । सर्वशक्तिमान अल्लाह ने इसको सर्वथा भलाई, बरकत और सारे संसार के मार्गदर्शन का उद्गम बनाया है । इसको पसन्द फ़रमाया, इसे अपनी रहमत से नवाज़ा इसकी नित्यता का निर्णय किया, इसको सौंदर्य और जलाल का परिधान प्रदान किया और दिलों को इसकी ओर आकृष्ट किया । यह घर हर क़िस्म के ज़ाहिरी हुस्न और कृत्रिम शोभा से ख़ाली है और एक ऐसे नगर में स्थित है जो सभ्यता एवं संस्कृति के हंगामों और ज़िन्दगी के पुरशोर धारे से बहुत दूर है, लेकिन फिर भी इसमें वह आकर्षण पाया जाता है कि लोग इसकी ओर खिंच-खिंचकर श्रद्धा-मुग्ध भाव से पहुंचते हैं एवं इसकी एक झलक देखने के लिए बेताब रहते हैं । हज एक पहलू से सबसे बड़ी इबादत है । अल्लाह के प्रेम में मनुष्य अपना कारोबार और अपने परिवार-मित्रों आदि को छोड़कर लंबी यात्रा पर निकलता है । फिर उसकी यह यात्रा साधारण यात्रा की तरह नहीं होती । इस यात्रा में वह अल्लाह की ओर ध्यान देता है । जैसे-जैसे अल्लाह का घर निकट आता जाता है उत्सुकता और प्रेम की अग्नि और अधिक भड़कती जाती है । वह अपने गुनाहों पर लज्जित होता है । सच्चे दिल से तौबा करता और अल्लाह से प्रार्थनाएं करता है कि उसे अच्छे कर्म करने का सौभाग्य प्राप्त हो । ''इहराम'' बांधने के बाद उसकी ज़ुबान से ये शब्द निकलते हैं : ''हाज़िर हूं, ऐ अल्लाह ! मैं तेरी सेना में हाज़िर हूं, हाज़िर हूं तेरा कोई सहभागी नहीं । मैं तेरी सेवा में हाज़िर हूं । निश्चय ही प्रशंसा तेरे ही लिए है । सारी कृपाएं और उपकार तेरे ही हैं, राज्य तेरा ही है, तेरा कोई सहभागी नहीं है ।''

वी॰आई॰पी॰ कल्चर

सरकारी गाड़ियों से लालबत्ती और हूटर उतारने से वी॰आई॰पी॰ कल्चर ख़त्म नहीं होता, बल्कि स्वयं को देश का सर्वेसर्वा मानने की मानसिकता हटाने से वी॰आई॰पी॰ कल्चर ख़त्म होगा । पी॰एम॰ सी॰एम॰ मंत्री राज्यपाल राष्ट्रपति सांसद विधायक ये अपने को भाषणों में तो जनसेवक कहते हैं लेकिन व्यवहार और बर्ताव में तो खुद को खुदा ही मानते हैं ।

कोई कहता है कि उसने बचपन में चाय बेचीं, तो कोई कहता है कि उसने दैनिक मज़दूरी की । कोई कहता है कि उसने एक नेता की रसोई में चाय बनायी, तो कोई कहता है उसने जयप्रकाश आंदोलन में जेल की रोटी खायी, तो कोई कहता है कि मिट्टी के घर में बड़ा हुआ और पेड़ की छांव में पढ़ा लेकिन अब बीसियों सालों से पक्ष-विपक्ष में रहकर या संवैधानिक पदों का लाभ लेकर लाखों-करोड़ों रुपयों की चल-अचल संपत्ति का मालिक बना हुआ है ।

सवाल यह है कि इन नेताओं ने अपने खुद के पैसे से अपने समाज और देश के लिए क्या किया ? कितने ग़रीबों, दलितों, शोषितों, पीड़ितों और वंचितों के आंसू पोछे ? देश का हर आदमी ग़रीब, अमीर, दलित, मुसलमान, ईसाई और सिख सब प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष टेक्स देकर ख़जाना भरता है, जिसे वी॰आई॰पी॰ ख़ाली करते हैं और खुद को जनसेवक कहता है ?

ताजमहल को दुनिया का सातवां अजूबा कहा जाता है और शाहजहां नूरजहां की मुहब्बत का ताबूत कहा जाता है लेकिन इस मुहब्बत के ताबूत को बनाने में जिन बीस हज़ार मज़दूरों के हाथ कटे उसे कोई याद नहीं करता और जिस ख़ज़ाने को बर्बाद किया गया वहां किसकी दौलत थी ? अगर वी॰आई॰पी॰ कल्चर ख़त्म करना ही है तो खुद ये जनसेवक आयकर क्यों नहीं देते ? खुद की सुरक्षा में इतना भारी-भरकम ख़र्च का बोझ खुद क्यों नहीं वहन करते ? क्यों देशवासियों के दिए टैक्स पर आजीवन सुख-सुविधा का भोग करते हैं ? जिन सरकारी अस्पतालों में देश का आम आदमी लाइन में लगकर इलाज कराता है तो ये भी खुद क्यों नहीं लाइन में लगकर अपने नम्बर का इन्तिज़ार करते ? टैक्स देकर भी हर साल हज़ारों आदमी लू और ठंड लगने से मर जाते हैं, लेकिन नेता एक भी नहीं मरता ?

दो हज़ार का बिजली बिल बक़ाया न चुकाने पर आम आदमी का कनेक्शन कट जाता है, लेकिन जनसेवकों पर बिजली टेलीफ़ोन का अरबों रुपया बक़ाया होने के बावजूद उनको वी॰आई॰पी॰ का दर्जा देना लोकतंत्र का सबसे बड़ा पाप है । आम आदमी तो लोअर कोर्ट तक के वकीलों की फ़ीस नहीं भर सकता लेकिन ये जनसेवक करोड़ों रुपयों के वकील खड़े कर देते हैं और ये करोड़ों रुपया वही हैं जो आम आदमी के ही दिये टैक्स से इनकी तिजोरी में पहुंचे हैं और ये अरबों रुपयों के मालिक वकील राज्यसभा में पहुंचकर इन्हीं जनसेवकों की पार्टियों की नुमाइन्दगी करते हैं लेकिन वहां भी ये अपने को जनसेवक ही कहते हैं और मुफ़्त का माल डकारकर वी॰आई॰पी॰ कल्चर ख़त्म करने का उपदेश करते हैं ।

रचना रस्तोगी

189/9 वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ

अनुचित है धर्म का व्यावसायीकरण

वर्तमान अर्थप्रधान युग में धर्म और शिक्षा जैसे पवित्र माने जाने वाले क्षेत्रों पर भी अर्थ का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगत होने लगा है तथा इनका व्यावसायीकरण होने लगा है ।

संसार में प्रचलित इस्लाम, हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिख और पारसी सहित समस्त धर्मों का एक में व सामान्य उद्देश्य व्यक्ति के अन्दर पायी जाने वाली व्याम, क्रोध, अहंकार, मदमस्तर, लोभादि, बुराइयों को नियंत्रित कर जीवन को सन्मार्गावलंबी बनाना है । आदमी को सच्चाई, ईमानदारी तथा नैतिकता का पाठ पढ़ाने तथा उसके चरित्र, आचार-विचार और संस्कार को धर्मानुकूल बनाने के उद्देश्य से विभिन्न धार्मिक विधान किये गये हैं ।

मानव जीवन को इन धार्मिक विधि-विधानों के माध्यम से परवरदिगारे आलम, अल्लाह, ईश्वर, गॉड तथा सारी दुनिया के वाहिद मालिकों ख़ालिक़ से जोड़ने की कोशिश

की गयी है । मगर जब इन धार्मिक अनुष्ठानों को उनके मूल कल्याणकारी और मंगलकारी उद्देश्य से विचलित तथा भ्रमित कर स्वार्थ साधन एवं अर्थोपार्जन का माध्यम बना लिया जाता है तो स्थिति चिंताजनक हो जाया करती है । अफ़सोस की बात तो यह है कि आज हमारे समाज में यही सब हो रहा है तथा नाना प्रकार के धार्मिक विधि-विधान तथा अनुष्ठान व्यवसाय की शक्ल में तब्दील हो गये हैं तथा ठेकेदार उनके ज़रिये अधिकाधिक धनोपार्जन कर जनसामान्य की धार्मिक भावना को अपनाकर अपना उल्लू सीधा करने में लीन है ।

पिछले कुछ सालों से हमारे समाज में "अखंड रामचरित मानस पाठ', 'पांच कुण्डीय' अथवा 'एकादश कुण्डीय यज्ञ' ध्वन तथा 'शारदीय नवरात्रों' में देवी जागरण', 'काली मंदिर' तथा 'पवन पुत्र, हनुमान मंदिर', के श्रृंगार महोत्सव' 'भजन', 'संध्या', 'भंडारा' आदि अनेकानेक धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजनों की बाढ़-सी आ गयी है तथा कोई भी मास पंखवारा ऐसा नहीं गुज़रता जब क्षेत्रों में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में धार्मिक अनुष्ठान न संपन्न किये जाते हों । कार्यक्रम की तिथि से महीनों पूर्ण रसीद पुस्तिका मुद्रित करवा दी जाती है तथा अनुष्ठान के नाम पर बाक़ायदा चंदा वसूली अभियान चलाया जाता है ।

समाज में ऐसे अनेक बड़े-बड़े धनाढ्य धन्ना सेठ साहूकार हैं जो आयकर में छूट पाने के मक़सद से एक मुश्त रक़म संस्था को दानस्वरूप देने को सहर्ष तैयार हो जाया करते हैं । किसी ग़ल्ला आढ़ती ने भंडारा के लिए चार-छह बोरी चावल या आटा दे दिया । किसी कारोबारी ने चार-छह कनस्तर घी तथा सरसों का तेल दान किया । किसी सब्ज़ी व्यावसायी ने दो बोरी आलू, प्याज,, गोभी, बैंगन तथा टमाटर दे दिये । धार्मिक अनुष्ठान तथा भंडारा संपन्न हो जाने के उपरांत संस्था के पदाधिकारी अथवा कार्यक्रम संयोजक ख़र्च के बाद बची धनराशि अपने निजी बैंक खाते में जमा कर देते हैं । अवशिष्ट खाद्य पदार्थों, शाक-भाजी तभी घी-तेल अपने घर ले जाते हैं । उनके महीनों का ख़र्च निकल आता है । इन धार्मिक आयोजनों के भाग लेने तथा अनुष्ठानों को संपन्न करने वाले पुरोहितों तथा मानसपाठी विप्रो का अपना-अपना रेट निर्धारित होता है जिससे कम मिलने पर उनके द्वारा कम सौदेबाज़ी नहीं की जाती है । प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने मंदिरों में अनेक ऐसे पुजारियों के जीवन को निकट से देखा है । वे लोगों की निगाहों से बचकर उससे मंदिर सेवन वेश्यागमन तथा मांसाहार करते हैं, जिससे धार्मिक अनुष्ठानों की विश्वसनीयता संदिग्ध होने लगती है ।

ऐसा नहीं है कि मंदिरों के सारे पुजारी, मध्य तथा धार्मिक अनुष्ठानों के संयोजक इसी कोटि के पथभ्रष्ट हों । आवश्यकता धर्म के मूल वास्तविक रूप को ऐसे पाखंडियों के चंगुल से बचाने की है । धर्म के ऐसे ठेकेदार हर धर्म में विद्यमान है । धर्म की शीतल बयारियों को प्रदूषित होने न दे । उसे चतुर्दिशाओं में प्रवाहित होने दे ताकि सर्वजन का अधिकाधिक कल्याण तथा मंगल संभव हो सके ।

जागृति श्रीवास्तव
अचला देवी घाट रोड, सिपाह, जौनपुर

'अन्नदाता'

आज हमारे देश में, सबसे दुखी किसान
उसके कष्टों का कोई, करता नहीं निदान
करना नहीं निदान समस्याओं के उसकी
कर-कर करके हार गया, वह सबसे विनती
अगर कृषक मजबूर है, कैसे बढ़े अनाज
इसीलिए तो सब तरफ़ महंगाई है आज

खेती का जो हाल है, वह है बहुत ख़राब
मौसम अगर न साथ दे, सब होता बर्बाद
सब होता बर्बाद, और भी इसके कारण
इनका सबको पता, करें क्या इनका वर्णन
कैसे जिए किसान यह सबसे बड़ा सवाल है
होती गुजर न ढंग से, खेती का यह हाल है

कहने को इस देश को कहते कृषि-प्रधान
पर खेतों की ओर ही, सबसे कम है ध्यान
सबसे कम है ध्यान, कृषक की कोई न चिंता
क्या है उसका हाल, किस तरह रहता ज़िंदा
नहीं किसी के पास, उसे कुछ भी देने को
उसे 'अन्नदाता' कहते हैं, बस कहने को ।

■ **कन्हैयालाल अग्रवाल 'आदाब'**
(आगरा, उ०प्र०)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जीवंत संदेश

■ माहिरुल क़ादरी

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का फ़रमान, संदेश, चरित्र-आचरण और जीवन की एक-एक त्रासदी उसी प्रकार जीवित है, जैसे वह मक्का, मदीना, तायफ़, बद्र, हुनैन, ख़ंदक़ और खैबर व तबूक में जीवित, व्यवहार्य, अनुकरणीय और चलायमान थी। अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) के संदेश और जीवन-आदर्श को पतन और विनाश से सुरक्षित बना दिया गया है, सितारों के दीपक और सूर्य-चन्द्र के हंडे बुझ सकते हैं, पर अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०), हिदायत के जिस दीप को लेकर आये थे, वह बुझ नहीं सकता। सैकड़ों धर्म-युद्ध और हज़ारों महाभारत उसको नहीं बुझा सकते, लोगों ने कोशिश करके भी देख ली, पर विफल रहे। यह दीप तो आँधियों को गोद में सदा जला किया है, विरोध इसका कुछ बिगाड़ न सका। अल्लाह से कौन लड़ सकता है ? मुहम्मद (सल्ल०) और उनके संदेश का विरोध वास्तव में खुदा के मुक़ाबले में युद्ध-नाद और युद्ध-घोष है।

तलवार ही नहीं, क़लम, पुस्तक और भाषाओं ने भी अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के विरुद्ध युद्ध मोर्चे बनाए। शैतान झूठे और छली नबियों के भेष में आये, पर झूठ पनप न सका। झूठ खुलकर रहा। बुद्धिजीवियों और विवेकियों की दृष्टि में धूल न झोंकी जा सकी। मूर्ख, भाग्यहीन और दुष्ट ज़रूर इस धोखे में आ गये, उनको आ जाना ही चाहिए था। शैतान को इस दुनिया में अपना मिशन चलाने के लिए कुछ साथी और चाटुकार भी तो चाहिए—सत्य से असत्य का टकराव तो जारी रहेगा। प्रकृति को ज़ोरदार मसलहत छिपी हुई है—पर सत्य वाले, सत्य के अनुयायी असत्य की इस छेड़छाड़ से न घबराते हैं न परेशान होते हैं। ऐसी परीक्षाओं और संघर्षों को देखकर उनका ईमान और बढ़ जाता है और उनकी कार्यशीलता सक्रिय हो उठती है।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का संदेश जीवित है, कार्य जीवित है, आपके मुख से निकला हुआ एक-एक शब्द जीवित है। पवित्र जीवन की एक-एक गति सुरक्षित और जीवित है—फिर मृत्यु और अंत कैसा ? अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) आज भी उसी प्रकार नबी हैं जिस प्रकार आज से चौदह सौ साल पहले थे। समस्त पुण्य नेतृत्वों का केन्द्र अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) का व्यक्तित्व है, जो नेतृत्व और केन्द्र सत्य से हटा हुआ है, वह प्राय: भ्रष्टता और भटकाव है—चाहे क़ौम में वह एक लाख 'अतातुर्क कमाल' ही क्यों न पैदा कर दे।

अदी ने देख लिया

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) निश्चय ही अल्लाह के बन्दे और इन्सान थे और यही 'इन्सान होना' आपके पुर्णता प्राप्त होने का प्रमाण है—पर कैसे बन्दे ? जिसको जन्नत की शुभ सूचना दे दी उस पर जन्नत अनिवार्य हो गयी। ख़ंदक़ की लड़ाई में जब भारी पत्थर हो हुज़ूर ने कुदाल से तोड़ा है तो सल्मान की कुदाल की चोट की रोशनी में शाम, मिस्र, ईरान के वे क्षेत्र देख लिए थे जिन पर आगे चलकर इस्लाम की पताका फ़हराने वाली थी।

हातिमताई को कौन नहीं जानता ? दानशीलता ने उसके सिर पर ख्याति का ताज रख दिया है—उसी हातिम के बेटे थे—अदी, त्वै क़बीले के नामी सरदार, अदी बिन हातिम को भी इस्लाम स्वीकारने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हुज़ूर ने अदी बिन हातिम से फ़रमाया था—

'वह समय निकट आ रहा है जब तू सुन लेगा कि क़ादसिया से एक औरत अकेली चलेगी और मक्के का हज करेगी और उसे अल्लाह के सिवा किसी प्रकार का डर व भय न होगा। बाबिल की धरती का चमचमाता महल मुसलमानों के हाथों जीत लिया जाएगा।'

अदी ने इस भविष्यवाणी के एक-एक अक्षर को अपनी आंखों से पूरा होता देख लिया। नौशेरवां के महल भी मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गये और कादसिया से एक औरत अकेली मक्का को हज करते हुए आती भी देख ली।

मुहम्मद खुदा के रसूल और बन्दे भी—हर प्रकार की भलाइयों के स्वामी—यह भी हुआ है कि घर में कई-कई दिन चूल्हा गर्म नहीं हुआ, उपवास पर उपवास हो रहे हैं,

और यह भी देखा गया कि थोड़े से खाने पर हुज़ूर ने कर कमलों को फेरा और एक गिरोह ने पेट भर कर खाना खाया, फिर भी खाना बच गया । पानी की छोटी-सी छागल में हाथ डाल दिया तो उंगलियों से पानी के फौवारे छूटने लगे और पूरा कारवां अपनी ज़रूरत पूरी करता रहा ।

सबके रसूल

बिना किसी अतिशयोक्ति के पूरी ईमानदारी और ज़िम्मेदारी के साथ कहा जा सकता है कि इतिहास की पुस्तकों में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का संपूर्ण तथा व्यापक व्यक्तित्व नहीं उभरता । किसी के यहां दया और क्षमा ही क्षमा है, कोई युद्ध कौशल और विजय प्राप्ति को उभारता है, कहीं शासन और व्यवस्था की जगमगाहटें हैं और कहीं उपवास और संसार त्याग की सादगी और यही नहीं, कोई कलदानियों को सन्मार्ग का संदेश देता है । कोई बनी इसराईल को संबोधित कर रहा है । किसी को सालबन्द और नैनवा के भटके हुओं को मार्गदर्शन अभिप्रेत है । कोई चीन की राज्य सीमाओं से एक क़दम आगे नहीं बढ़ाता, किसी का संदेश मात्र ईरान के आसपास गूंज कर रह गया । किसी की बांसुरी गोकुल वृन्दावन के पास पड़ोस की गुजरित करती रही–पर मुहम्मदे अरबी का संदेश देश और क्षेत्र की सीमाओं में सीमित न रह सका । प्रशांत महासागर का तट हिन्द और रूम महासागरों के द्वीप, दजला और फ़रात के किनारे, सिंध का मरुस्थल, बेस्तून की पर्वतीय घाटियां, लेबनान और अलबुर्ज़ के टीले, नील की तराई, परनीज़ की चोटियां, फ़ारस के अग्निकुंड, भारत की तीर्थ स्थलियां, चर्चों की मीनारें और मंदिरों के दरो-दीवार इस संदेश से गूंज उठे ।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) के नव-संदेश ने क़ौमों के भाग्य बदल दिये । काले-गोरे, उजले-लाल, नीले-पीले, छोटे-बड़े, ज्ञानी-अज्ञानी, मर्द-औरत, ग़रीब-अमीर ने भी यथारुचि लाभ उठाया । इसी संदेश के कारण गुलाम भी यकायकी पस्तियों से उछल कर शासन और नेतृत्व के पदों पर आसीन हो गये–यह क्रांति चेहरों और शक़्लों की नहीं, चिंतन और दृष्टि की, अंतरात्मा और अंतर्ज्ञान की थी । इसने चोरों और लुटेरों को अति आचरणशील और शांतिप्रिय बना दिया । अवज्ञाकारियों और दुराचारियों में आज्ञापालन और सदाचार की अनश्वर आत्मा को जन्म दिया । इस क्रांति ने शुद्ध-संस्कृति और पवित्र सभ्यता की नींव रखी–और न

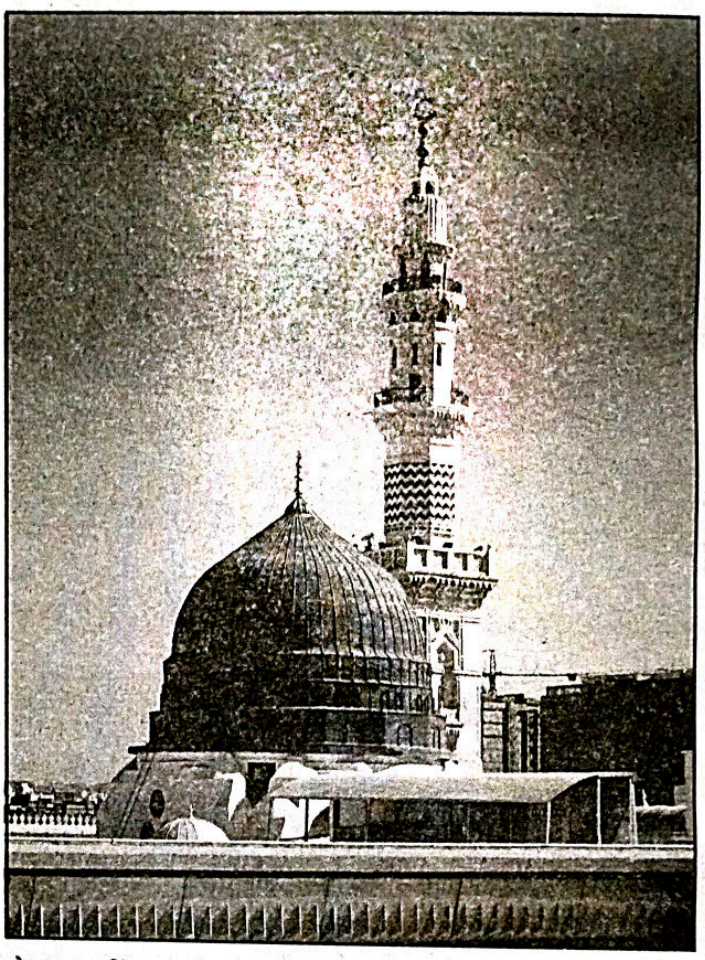

केवल नींव, बल्कि पूरी इमारत खड़ी कर दी, जिसकी एक-एक ईंट यथोचित संतुलन और रचना-कौशल का आदर्श है ।

झलकियां

भक्ति और उपासना की वह स्थिति की रात-रात भर अल्लाह के दरबार में खड़े रहते, मुबारक पांव सूज जाते । साथियों ने कहा कि हुज़ूर ! इतना परिश्रम क्यों करते हैं ? जबकि अल्लाह ने आपके अगले-पिछले गुनाहों को माफ़ कर दिया है । साथियों के इस प्रश्न के उत्तर में आपने कहा–'क्या मैं आज्ञाकारी बन्दा न बनूं ?'

शूर-वीरता की यह दशा कि ख़ूनी लड़ाइयों में जब अच्छे-अच्छों के पैर उखड़ जाते तो आप इस प्रकार अडिग खड़े रहते मानो कुछ हुआ ही नहीं । शांति, धैर्य, निर्भीकता और ख़ुदा की याद–ख़ैबर के विजेता शेरे ख़ुदा हज़रत अली का कथन है कि लड़ाई जब घमासान की हो जाती तो हम अल्लाह के रसूल की शरण खोजते थे । हुनैन की लड़ाई में साथियों के क़दम डगमगा गये थे, आतंक और घबराहट छा गयी थी, पर अल्लाह के रसूल पहाड़ की तरह अडिग खड़े थे ।

एक समय की बात है मदीने में शोर मचा कि लुटेरे आ गये । पूरे नगर में खलबली मच गयी । माताओं ने अपने बच्चों को कलेजे से चिपटा लिया । हर व्यक्ति घबरा रहा था कि न जाने कौन विपदा आने वाली है ? डाकू हथियारों से लैस होकर आये होंगे । न जाने किस-किस की बीवियां विधवा और किस-किस के बच्चों को यतीम होना पड़े--लोग सोच ही रहे थे कि क्या करें, क्या न करें ? हुज़ूर ने तलवार ली और घोड़े पर सवार होकर नगर से बाहर पहुंचे और पूरा चक्कर लगाकर वापस लौटे और तसल्ली देते हुए कहा--'लोगो ! कुछ नहीं है ! कुछ नहीं है !'

विनम्रता का यह हाल कि हुज़ूर किसी के यहां तशरीफ़ ले जाते तो किसी ऊंची जगह और विशिष्ट स्थान पर बैठने का कदापि यत्न न करते । साधारण व्यक्तियों के साथ उन्हीं के बराबर में बैठ जाया करते ।

शीमा हुज़ूर की दूध शरीक बहन थीं । हवाज़िन के क़बीले के लोग गिरफ़्तार होकर आये तो उनमें शीमा भी थीं । उनको देखकर हुज़ूर ने अपनी चादर बिछा दी--शीमा के क़दम और अल्लाह के रसूल मुहम्मद की चादर-आश्चर्य! पर इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? कृपानिधान (सल्ल०) का दान भाव इसी तरह उद्वैलित होता है ।

एक बार की घटना है कि एक व्यक्ति ने श्रद्धाभाव के साथ हुज़ूर के शुभ हाथों को चूमना चाहा तो आपने अपना हाथ खींच लिया और कहा--'यह अजमियों का काम है ।'

हब्श के बादशाह नज्जाशी ने अपने कुछ दूत आपकी सेवा में भेजे । अल्लाह के रसूल (सल्लं०) ने स्वयं उन लोगों का सत्कार किया । साथियों ने कहा--'ऐ अल्लाह के रसूल ! आप क्यों कष्ट करते हैं ? यह काम तो हमें करने दीजिए ।

हुज़ूर ने फ़रमाया--'उन्होंने मेरे साथियों का आदर-सत्कार किया था । मैं उसका बदला देना चाहता हूं ।'

उदारता की यह शान कि अपने परिवार वालों पर सदक़ा (दान पुण्य) हराम कर दिया । हुज़ूर ने सार्वजनिक घोषणा कर दी कि जो कोई मुसलमान मर जाए उसका ऋण में चुकाऊंगा और उसके धन-संपत्ति के वारिस उसके नातेदार होंगे ।

लाडली बेटी फ़ातिमा के सिर पर साबित ओढ़नी भी न थी और सर्वसाधारण में आप माल और दौलत बांट रहे थे । बहुत बार ऐसा हुआ कि मांगने वाले ने मांगा और हुज़ूर ने बकरी का दूध या आटा मांगने वाले को दे दिया और आपके घर में वह दिन उपवास का दिन बन गया--साइल को नाकाम न फेरा, बख़्श दिया जो कुछ घर में था, भूखा सो रहने की आदत, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ।

अल्लाह के रसूल किसी को-माल और जिंस देते तो ख़ूब नीचा तौलते, और किसी से लेते तो इस पर ध्यान न देते । ऊंचा तौल देता तो भी आपको अप्रिय न लगता । माल और दौलत कभी जमा ही न किया । जो कुछ आता ज़रूरतमंदों में खड़े-खड़े बांट देते ।

एक ज़रूरतमंद ने आपकी सेवा में उपस्थित होकर कुछ मांगा । हुज़ूर ने फ़रमाया कि इस समय मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है, तुम मेरे नाम पर किसी से उधार ले लो, मैं तुम्हारा ऋण चुका दूंगा । हज़रत उमर (रज़ि०) वहां बैठे हुए थे, बोले--'अल्लाह ने आपको अपनी सामर्थ्य और शक्ति से बढ़कर काम करने का कष्ट नहीं दिया । इस पर हुज़ूर चुप हो गये । एक श्रद्धालु अंसारी वहां बैठा था, बोला--ऐ अल्लाह के रसूल ! ख़ूब दीजिए । अल्लाह मालिक है तो फिर तंगी का क्या डर ?' अंसारी के उत्तर पर हुज़ूर हो हंसी आ गयी और पवित्र चेहरे पर बिखर-बिखर गयी । फिर कहा--हां मुझे यही हुक्म मिला है ।'

मदीने में एक यहूदी था--'हृदय का स्वच्छ और नीयत का साफ़ । इस्लाम के विषय में वह बहुत कुछ सुन चुका था पर अभी इस धातु के खरा सोना बनने में एक आंच की कमी रह गयी थी । यहूदी ने अपने धर्म ग्रंथ में पढ़ा था कि नबी बड़े ही सहनशील और उदार चेता होते हैं । इसे वह आज़माना चाहता था । उसने आज़माने के लिए अल्लाह के रसूल को खजूरें ऋण के रूप में दे दीं और ऋण चुकाने का जो दिन तय हुआ था उससे पहले वह आ धमका और हुज़ूर की मुबारक चादर को ज़ोर से झटका देकर बोला--मुहम्मद ! तू हमारा ऋण क्यों नहीं देता ? ख़ुदा की क़सम ! तुम अब्दुल मुत्तलिब के घराने वाले बड़े नादहन्द और लेलूट होते हो । हज़रत उमर से सहा न गया और बड़े ही तीखे स्वर में बोले--'ऐ ख़ुदा के दुश्मन ! तूने ख़ुदा के रसूल को जो कुछ कहा है, अगर हुज़ूर की अवज्ञा का डर न होता तो मैं तेरी गर्दन उड़ा देता ।' हुज़ूर ने उमर पर मुस्कान भरी दृष्टि डाली और नम्र स्वर में कहा--उमर ! तुम्हें तो मुझसे ऋण चुकाने के लिए कहना चाहिए था, जाओ इसका ऋण चुका दो । और तुमने जो इसे डराया और

धमकाया है उसके बदले में बीस 'साअ' (पैमाना) और अधिक दे देना ।

यहूदी पर सत्य खुल चुका था । कुछ अधिक सोचने की ज़रूरत न रह गयी थी । वह उसी समय ईमान ले आया और पथभ्रष्ट लोगों की संगति से निकलकर 'इनाम' पाए लोगों में सम्मिलित हो गया ।

अल्लाह के रसूल अपना काम-काज खुद अपने हाथ से करते । कपड़े धो लेते, जूता गांठ लेते, जानवरों को चारा डालते, नौकर के साथ एक दस्तरख़्वान पर बैठकर खाना खाते, छोटे-बड़े सबको सलाम करने में पहल करते । लोगों के सलाम करने का इन्तिज़ार न करते । पहनावा बहुत सादा और खाना मोटा-झोटा, जो सामने आ गया सहर्ष खा लिया ।

हज़रत अनस बिन मालिक कई साल सेवा में रहे, पर हुज़ूर ने कभी किसी काम पर उन्हें सख़्त-सुस्त न कहा । अपने निज के लिए किसी से बदला न लेते, न किसी से लड़ते-झगड़ते और किसी की तर्बियत के ख़िलाफ़ बात का बुरा मानते । हां, धर्म के मामले में उत्तेजित हो उठते-यहूदी का एक लड़का हुज़ूर की सेवा किया करता था, वह बीमार हो गया तो स्वयं उसके घर पैदल चलकर उसका पूछना किया ।

अकारण बात न करते, अधिकतर चुप रहते, ज़रूरत पड़ने पर होंठ हिलते । बातें क्रम के साथ और ठहर-ठहर करते कि कोई गिनना चाहता हो एक-एक शब्द को गिन सकता था । किसी व्यक्ति को उपदेश देना होता तो सबके सामने उसका नाम न लेते, बल्कि इस तरह कहते, आजकल लोग ऐसा-ऐसा करने लगे हैं ।

जब कोई व्यक्ति अपनी ग़लती पर लज्जित होकर क्षमा चाहने के लिए हुज़ूर की सेवा में उपस्थित होता तो मारे लज्जा के गर्दन झुका लेते-यूहन्ना ने हुज़ूर के मक्का में विजयी के रूप में प्रवेश करने के बारे में भविष्यवाणी की थी-'उसके वस्त्र पर सम्राटों का सम्राट और खुदावन्दों का खुदावन्द लिखा होगा ।'

दृष्टि वाले सैकड़ों वर्ष पहले हुज़ूर के पीछे सेनाओं का अनुशासन के साथ चलना अपनी अन्तर्दृष्टि से देख चुके थे-तो यूहन्ना का यही 'सम्राटों का सम्राट' जब मक्का में दाख़िल हुआ तो मुबारक सिर को इतना झुका दिया कि कजावे से लग गया ।

हज़रत उमर कहते हैं कि एक बार मैं अल्लाह के रसूल की सेवा में उपस्थित हुआ । हुज़ूर तहमद बांधे चटाई पर विश्राम कर रहे थे । चटाई के निशान आपके पवित्र शरीर पर उभरे हुए स्पष्ट दिखायी दे रहे थे । घर के एक कोने में सेर दो सेर जौ पड़े थे और दीवार पर चमड़ा लटका था । इस दीन हीनता को देखकर मेरी आंखों में सहज ही आंसू भर आये । हुज़ूर ने मेरी आंखों में उभरी नमी को पहचान लिया । बोले-'ऐ ख़त्ताब के बेटे ! तुझे किस चीज़ ने रुलाया ? मैंने कहा-'ऐ अल्लाह के रसूल ! मैं रोऊं नहीं तो और क्या करूं ? क़ैसर और किसरा तो सोने के तख़्त और हरीर व दीबा के नर्म फ़र्श पर मज़े उड़ाएं और आप ख़ुदा के पैग़म्बर और उसके चुने हुए व्यक्ति इस हाल में बोरिए पर जीवन बिताएं ! हज़रत उमर के उत्तर पर आपने फ़रमाया-'ख़त्ताब के बेटे ! क्या तू इस पर तैयार नहीं है कि उनके लिए दुनिया हो और हमारे लिए आख़िरत ?'

दफ़्तर तमाम गश्त व बपायां रसीद उम्र
माहम चुनां दर अव्वले वसफ़े तो मांदाएम ।

(दफ़्तर का दफ़्तर समाप्त हो गया और उम्र अपने अंत को पहुंच रही है, फिर भी मैं अभी तक आपके पहले गुण का ही बखान करने पर लगा हूं ।)

लेकिन दृष्टि वालों और ज्ञानियों के लिए इन अधूरे चित्रों में ही बहुत कुछ शिक्षा सामग्री मिल सकती है । हृदय में दर्द और मन में निष्ठा हो तो फूल पत्तों को देखकर शिक्षाएं ग्रहण की जा सकती हैं, आंख वालों के लिए घास की एक पत्ती भी प्रकृति-पुस्तक से कम नहीं है । और इस पुस्तक में तो वास्तविकताएं और सच्चाइयां प्रकट की गयी हैं । इन घटनाओं में सत्य है, जीवन है, प्राण है ।

अब किसी के दिल की आंख बिल्कुल ही अंधी हो गयी हों तो उसका कोई इलाज नहीं । अन्तर्दृष्टि में थोड़ी-सी ज्योति भी मौजूद है तो 'जिसका इन्तिज़ार था' को पढ़कर यह कहने पर विवश हो जाएगा-कैसा, और बस यही जीवन सच्चाई का अंतिम मानदंड है ।

रमज़ान की 28वीं 1368 हि० की प्रातः उदित होने वाली है । समीर के झोंके मदमत्त बना रहे हैं, आसपास से कुरआन पाठ की मनमोहक ध्वनि गुंजरित हो रही है और उपन्यासकार हज़रत मुहम्मद पर दरूद व सलाम भेज रहा है । कृपा निधान पर सलाम ! अंतिम रसूल पर सलाम ! मानवता के महान उपकारी पर सलाम ! अब्दुल्लाह के लाडले यतीम पर सलाम !

नमाज़ की प्राचीनता

■ एस॰एम॰ शरीफ़ कुरैशी

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य यह है कि वह नेकी के मार्ग पर चलकर ईश्वर की प्रसन्नता और शाश्वत सुख और शान्ति प्राप्त करे । यह वह धर्म है जिसे इस्लाम कहा जाता है । जिसे अल्लाह ने पसन्द किया है । और इसी 'दिन' की ओर हज़रत आदम (अलैहि॰) से लेकर नबी करीम (सल्ल॰) तक सभी नबियों ने लोगों को आमंत्रण दिया है । इस धर्म का मूल आधार 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) है अर्थात् एक खुदा का इक़रार और शैतानी और तागूती ताक़तों का इन्कार । कुरआन में है :

"और हमने हर जाति में एक पैग़म्बर भेजा, जिसने पैग़ाम दिया कि अल्लाह की बन्दगी करो और 'तागूत' की बन्दगी से बचो ।" (कुरआन, 16:36)

हज़रत ईसा मसीह (अलैहि॰) ने भी कहा है : 'ऐ खुदाबन्द ! अनन्त जीवन यह है कि लोग तुझे एक और सच्चा मानें ।' (यूहन्ना, 17:3)

एक दूसरी जगह है : 'यसूअ ने उत्तर में उनसे कहा कि मेरी शिक्षा मेरी नहीं बल्कि मेरे भेजने वाले की है ।'

(यूहन्ना, 7:16)

लेकिन इबलीस आरम्भ से ही इस 'दीन' पर चलने वालों का शत्रु रहा है । वह आदम की संतान को भटकाने की कोशिश करता रहता है । कहीं नक्षत्र पूजा तो कहीं पूजा और कहीं त्रयवाद को लोगों के लिए शोभायमान बनाकर दिखाता रहता है । और लोगों को उनके स्वाभाविक धर्म से विचलित करने की कोशिश में लगता रहता है । और लोगों को ऐसे गुनाहों में फंसाता रहता है जिससे मनुष्य शाश्वत विनाशता का भागी हो जाता है । इन गुनाहों के परिणामों से बचने का यदि कोई उपाय है तो वह यह कि मनुष्य सत्य मार्ग को अपनाए और पिछले गुनाहों के लिए अल्लाह से क्षमा चाहे । कुरआन में है :

जिन लोगों ने बुरे काम किये और फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए तो कुछ सन्देह नहीं कि तुम्हारा



रब इसके बाद (उन्हें क्षमा कर देगा) कि वह क्षमाशील ओर दयावान् है । –अल-आराफ़ आयत, 153

बाइबल में है : 'यदि हम अपने गुनाहों को मान लें तो वह हमारे गुनाहों को क्षमा करने और सारी पथभ्रष्टता से पाक करने में सच्चा और प्रथम है ।' –पहला पत्र यूहन्ना 1/6

'तो तौबा करो और रुजू करो ताकि तुम्हारे गुनाह मिट जाये ।' –आमाल (22:3)

'तौबा करो और अपने गुनाहों से बाज़ आओ ताकि व्यभिचार (शिर्क) तुम्हारे विनाश का कारण न बने ।'

(हिज़्क़ीइल 30:12)

'तौबा करो क्योंकि आसमान की बादशाही निकट आ गयी है ।' (मत्ता 4:17)

इन आयतों से स्पष्ट है कि अल्लाह सबका रचयिता और 'रब' है, कृपाशील और दयावंत है । वह यदि अपने गुनाहगार बन्दों को क्षमा कर दे तो यह उसकी कृपा है ।

इसलिए कुरआन में यह शुभ-सूचना दी गई है :

'हे नबी ! (मेरी ओर से) कह दो कि मेरे बन्दो ! जिन्होंने अपने आप पर ज़्यादती की है अल्लाह की दयालुता से निराश न होना, अल्लाह तो सब गुनाहों को क्षमा कर देता है और वह तो क्षमाशील और दयावान है ।' –3:53

यह आयत पुकार-पुकार कर कह रही है कि निराशा गुनाह और कुफ़्र है । अल्लाह की क्षमाशीलता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है । जो लोग बोझ तले दबे हुए हैं निराश होकर कुफ़्र का मार्ग न अपनाएं बल्कि अल्लाह की ओर आएं और उससे अपने गुनाहों की माफ़ी चाहें । वेद में है :

आइम यदि दिवा यदि नत्क मेना : सि चकृमाव्यम ।
वायुमा तसदेन विश्वान्मुञ्चत्व हसः (20/15)

'यदि दिन में रात में हम पाप करें इस समस्त पाप एवं दुर्वृत्ति से परमेश्वर हमें मुक्त करे ।'

गुरुग्रन्थ साहब में भी गुनाहों का इक़रार करने के बाद ईश्वर से क्षमा की प्रार्थना की गई है–

'समुद्रों और सागरों में जिस प्रकार असीमित जल भरा पड़ा है कोई उसका अनुमान नहीं कर सकता है, हे मौला ! उसी प्रकार मेरे गुनाह भी अन्दाज़े से बाहर हैं (हे ईश्वर !) तू डूबते पत्थर को तार देता है तू हम पर भी अपनी कृपा कर और हमारे समस्त गुनाहों को क्षमा कर दे ।'

मुक्ति के लिये ईश्वर की सेवा में उपस्थित होना अर्थात् रुकू सजदा और ईश-गुणगान (हम्द-व-सना) करना भी आवश्यक है । बाइबल में है :

'मेरे समक्ष तेरे लिए कोई दूसरा अल्लाह न हो तू अपने लिए कोई मूर्ति या किसी चीज़ का रूप जो ऊपर आसमान पर या नीचे धरती पर या पानी में धरती के नीचे हो न बना । उनके आगे अपने को न झुका और उनकी इबादत (उपासना) कर क्योंकि मैं ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा स्वभिमानी ख़ुदा हूं ।' (ख़ुरूज, 20:2-5)

गीता में इबादत के तीन तरीक़े कार्यमेव तत ।
यज्ञो दान तपाश्रैव पावनानि मनीषणाम । (18/5)

"यज्ञ, दान, तप अवश्य करने चाहिए इन्हें कभी न छोड़ना चाहिए । ये विधियां मानव को पवित्र करती हैं ।"

ग्रन्थ साहब में कहा गया है :

'हे मौला ! तू ही मेरा दाता है मैं तुझसे केवल एक प्रदान चाहता हूं और वह यह कि तू मुझे इबादत की तौफ़ीक़ दे ।'

इस्लामी इबादत में नमाज़ को प्रधानता प्राप्त है । नमाज़ का आदेश तमाम शरीअतों में दिया गया है । अल्लाह कहता है :

'नमाज़ को मेरी याद के लिए पढ़ो ।'

वास्तव में नमाज़ ऐसा पाक और उच्च अमल है जिससे हमारा अल्लाह से संबंध स्थापति होता है और हमको उसकी दयालुता का अधिकारी बनाता है और हमारे ईमान को मज़बूत करता है । प्रतिदिन पांच बार नमाज़ में अल्लाह के सामने करबद्ध होकर खड़ा होना, झुकना, सजदा करना, और उससे दुआ करना वह अलम है जिससे वास्तव में गुनाह माफ़ होते हैं । अल्लाह का फैसला है :

'निश्चय ही ईमान वाले सफल हुए जो अपनी नमाज़ों में नम्रता ग्रहण करते हैं ।'

मनोवैज्ञानिक रूप से भी यह बात सिद्ध होती है कि 'नमाज़ अश्लील कर्मों और बुराई से रोकती है ।'

हिन्दुओं की किताब योग दर्शन में है :

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः । (योगदर्शन 9/2)

अर्थ-योग में चित्त की वृत्तियों को रोकना । मन में उठने वाले विचारों का निरोध करना ।

तदा द्रष्टाः स्वरूपऽवस्थानम् (योगदर्शन 1/3)

वृत्तियों का निरोध होने से द्रष्टा (देखने वाला) अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होता है ।

नमाज़ जीवन में परिवर्तन लाती है, चरित्र को उच्च करती है और सत्यवादी बनने और तौबा करने का उत्तम और न्यायसंगत साधन है । नमाज़ अल्लाह के बन्दों को उनका जीवन उद्देश्य याद दिलाती है और उनमें ज़िम्मेदारी का एहसास उभारती है । जैसा कि ऊपर कहा गया कि नमाज़ का आदेश हर शरीअत में दिया गया है । और इस्लामी शरीअत में नमाज़ अदा करने का जो तरीक़ा है और नमाज़ के जो अंग हैं उनकी पुष्टि बाइबिल से भी होती है ।

अज़ान : दिन-रात में पांच बार हर नमाज़ से पहले मस्जिद के मीनार से अल्लाह के बन्दों को अच्छी आवाज़ में नमाज़ के लिए बुलाया जाता है यह आवाज़ पूरे वातावरण को गुंजित कर देती है । अज़ान में जो कुछ कहा जाता है, वह यह है :

अल्लाह सबसे बड़ा है ! अल्लाह सबसे बड़ा है !!

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई 'इबादत' के लायक़ नहीं ।

मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं !!

नमाज़ के लिए आओ ! भलाई की ओर आओ !

अल्लाह सबसे बड़ा है ! अल्लाह सबसे बड़ा है !!

अल्लाह के सिवा कोई इबादत, उपासना एवं बन्दगी के योग्य नहीं ।

प्रात : काल की नमाज़ में ये शब्द बढ़ा दिये जाते हैं :

'नमाज़ नींद से अच्छी है ।'

नमाज़ के बारे में क़ुरआन में कहा गया है :

निश्चय ही नमाज़ मुसलमानों पर फर्ज़ है वक़्त की पाबन्दी के साथ । -4:103

दूसरी जगह कहा गया है :

'हे ईमान वालो ! जिस समय नमाज़ के लिए पुकारा जाए ... तो तुम अल्लाह की याद की ओर चल पड़ो ।'

-9:62

बाइबल में अज़ान की जगह यह तरीक़ा बयान हुआ है :

'और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि अपने लिए चांदी के नरसिंगे बनवा लें... तो उनको जमात बुलाने ... के लिए काम में लाना और जब वे दोनों नरसिंगे फूंके तो सारी जमात सम्मेलन के ख़ेमे के द्वार पर तेरे निकट इकट्टी हो जाए ।'

-गिनती 10:1-3

पवित्र स्थान पर आदर के रूप में जूते उतारने का आदेश क़ुरआन में यूं है :

'जब वे उसके पास पहुंचे तो आवाज़ दी गई कि हे मूसा ! मैं तुम्हारा रब हूं तो जूतियां उतार डालो, (क्योंकि) तुम एक पाक मैदान तुवा में हो ।' -20:11-12

बाइबल में है :

'तब उसने कहा : इधर पास मत आ । अपने पांव से जूते उतार क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है वह पवित्र भूमि है ।' -खुरूज 5:3, आमाल 6:33

नमाज़ में पाकी और शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिलाया गया है ताकि शरीर के बाहरी भाग गन्दगी से सुरक्षित रहे और आत्मा और शरीर दोनों ताज़ा हो जाएं अतएव क़ुरआन में कहा गया है :

'हे ईमान वालो ! जब तुम नमाज़ को उठने लगो तो अपने चेहरे को धोओ और अपने हाथों को भी कुहनियों समेत और अपने सरों पर हाथ फेरो और धोओ अपने पैरों को भी टख़नों समेत ।' -6:5

बाइबिल में है :

'और मूसा और हारून और उसके बेटों ने अपने-अपने हाथ पांव उसमें धोए । जब वे सम्मेलन के ख़ेमे में प्रवेश करते...अपने आपको धोकर जाते थे जैसा कि खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था ।' -खुरूज, 40:31-32

क़ुरआन में नमाज़ पढ़ने का रुख़ क़ाबा की ओर निश्चित किया गया है । यह इसलिए नहीं कि अल्लाह उसमें रहता है बल्कि इसलिए कि काबा मुसलमानों का केन्द्र है । कहा गया :

'और हर व्यक्ति (धर्म वाले) के लिए एक क़िबला रहा है जिसकी ओर वह (उपासना में) मुंह करता रहा है ।' जैसा कि बाइबिल में है : -2:148

'दानीएल . . . अपने घर आया और उसकी कोठरी की खिड़की योरुशलम की ओर खुली थी । वह दिन में तीन बार व्यवहारानुकूल घुटने टेक कर खुदा की सेवा में दुआ करता और उसके आगे कृतज्ञता दिखाता था ।'

-दानीएल 6:10

मुसलमानों के लिए प्रथम क़िबला बैंतुलमक़दिस (यरुशलम) था लेकिन अल्लाह के अन्त में क़ाबा को क़िबला नियत करना अभीष्ट था । इसलिए हुक्म हुआ : 'तो अपना चेहरा (नमाज़ में) इसी (क़ाबा) की आरे किया करो ।' -क़ुरआन

क़ुरआन में यह आदेश इसलिए है कि ताकि नमाज़ में एक प्रकार का अनुशासन और केन्द्रीयता बाक़ी रहे ।

इस्लाम में इबादत केवल एक अल्लाह के लिए है । वहां गुनाहों की माफ़ी का अधिकार केवल अल्लाह को है । यहां मनुष्यों से साफ़ कह दिया गया : 'हे लोगो ! मुझे पुकारो मैं तुमको जवाब दूंगा ।' मनुष्य अपनी दुआओं में उसे पुकार सकता है, उसके सामने झुक सकता है, उससे अपना संबंध स्थापित कर सकता है और बिना किसी माध्यम के गुनाहों की माफ़ी की और सत्यवादी बनने की प्रतिज्ञा कर सकता है । मार्ग-दर्शन और मुक्ति पाने वालों के लिए क़ुरआन में शुभ-सूचना है ;

'तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, रोज़ा रखने वाले, सजदा करने वाले, नेक कामों का हुक्म देने वाले और बुरी बातों से रोकने वाले अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले (यही लोग ईमान वाले हैं) और हे नबी ! ईमान वालों को जन्नत की शुभ-सूचना दे दो ।' -9:112

नमाज़ के आरम्भ में करबद्ध होकर अल्लाह के आगे

निवेदन किया जाता है : 'हे अल्लाह ! तू पाक है और तू प्रशंसा का अधिकारी भी है और तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी शान सबसे ऊंची है और तेरे सिवा कोई 'इबादत' के योग्य नहीं ।'

'मैं शैतान से बचने के लिए अल्लाह की पनाह लेता हूं ।'

'अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान् है ।'

इसके बाद सूरा फ़ातिहा पढ़ी जाती है । यह क़ुरआन की पहली सूरा है इसका पढ़ना हर नमाज़ की प्रत्येक रकात में आवश्यक है ।

'प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है तो संसार का पालनकर्ता स्वामी है, अत्यन्त कृपाशील और दयावान है । बदले के दिन का स्वामी है । हे अल्लाह ! हम तेरी ही 'इबादत' करते हैं और तुझसे मदद मांगते हैं । हमें सीधा मार्ग दिखा, उन लोगां का मार्ग जिस पर तूने अपनी कृपा की और जिन पर तेरा प्रकोप नहीं हुआ और जो भटके हुए नहीं हैं ।' आमीन!

इसके अलावा क़ुरआन की दूसरी सूरा या क़ुरआन का भाग पढ़ा जाता है और फिर रुकू में जाते हैं अर्थात् अल्लाह के आगे झुक जाते हैं । और धीरे-धीरे बार-बार कहते हैं:

'मेरा रब बड़ी शान वाला हर प्रकार की बुराई से पाक है ।' अल्लाह के सामने घुटनों तक झुकने का आदेश बाइबिल में इस प्रकार है :

'वह (दानिएल) दिन में तीन बार व्यवहारत: घुटने टेक कर अल्लाह के आगे दुआ करता और उसके आगे कृतज्ञता दिखलाता था ।' –दानिएल 6:10

एक जगह है :

'तब इब्राहीम नतमस्तक हो गया और ख़ुदा ने उससे बात-चीत की ।' –पैदाइश 3:17

रुकू के बाद सजदे में गिर जाते हैं । हर रक्अत में दो बार सजदा करते हैं और अल्लाह की महिमा में ये शब्द कहते हैं :

'मेरा रब जो उच्च है हर बुराई से पाक है ।'

अल्लाह के नबी हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने भी अल्लाह को सजदा किया । इंजील में है : 'फिर तनिक आगे बढ़ा और मुंह के बल गिर कर दुआ की ।' –मत्ता 26:39

बाइबल में यशू नबी के बारे में है :

'तब यशू नबी ने ज़मीन पर नतमस्तक होकर सजदा किया ।'

एलिया नबी के बारे में है : 'एलया करमल की चोटी



पर चढ़ गया और धरती पर नतमस्तक होकर अपना मुंह अपने घुटनों के बीच कर लिया ।'

हज़रत मूसा (अलैहि०) के बारे में है :

'और मूसा और हारून जमात के पास सम्मेलन के ख़ेमे के द्वार पर औंधे मुंह गिरे ।' (गिन्ती 20:6)

नमाज़ में सजदे से उठकर घुटने ज़मीन पर टेके हुए अदब के साथ यह पढ़ा जाता है :

'सब मौखिक इबादतें और शारीरिक इबादतें और सब धन-संबंधी इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं । हे नबी ! आप पर सलामती ही के लिए हैं । हे नबी ! आप पर सलामती हो अल्लाह की दयालुता और बरकतें हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर सलामती हो । मैं गवाही देता हूं कि इबादत और बन्दगी के योग्य केवल अल्लाह है और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं ।'

'और ख़ुदावन्द ने इब्राहीम से कहा और मैं तुझे एक बड़ी क़ौम बनाऊंगा और बरकत दूंगा और तरा नाम ऊंचा करूंगा तो तू बरकत का कारण हुआ जो तुझे मुबारक कहे उनको मैं बरकत दूंगा और जो तुझ पर लानत करे उस पर मैं लानत करूंगा और ज़मीन के सब क़बीले तेरे वसीले से बरकत पाएंगे ।' –पैदाइश 12:2-3

मुसलमान नमाज़ की आख़िरी रक्अत में दरूद पढ़ते हैं । इस दरूद में हज़रत इब्राहीम को मुबारक कहने के लिए अत्यन्त प्यारे शब्द आते हैं और हज़रत मुहम्मद और आपके सब मानने वालों के लिए रहमतों और बरकतों की दुआ मांगते हैं :

'हे अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद और आपके मानने वालों पर रहमत भेज जिस तरह तूने हज़रत इब्राहीम और उनके मानने वालों पर रहमत भेजी । निस्सन्देह तू प्रशंसा का अधिकारी और गौरवमान है ।'

'हे अल्लाह ! हज़रत मुहम्मद और आपके मानने वालों को बरकतें दे जिस तरह तूने हज़रत इब्राहीम और उनके मानने वालों को बरकतें दीं । निस्सन्देह तू प्रशंसा का अधिकारी और गौरववान है ।'

इसी हालत में बैठे हुए यह दुआ पढ़ते हैं :

'हे अल्लाह ! मैंने अपने आप पर बहुत जुल्म किया है और तेरे सिवा कोई गुनाहों को क्षमा नहीं कर सकता तू मुझे क्षमा कर अपनी विशेष कृपा से और मुझ पर दया कर । निस्सन्देह तू कृपाशील और दयावान् है ।'

अन्त में दायें-बायें मुंह करके अल्लाह के सब बन्दों के लिए सलामती और दयालुता की दुआ करते हैं और कहते हैं : 'तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत ।'

इसके बाद नमाज़ पूरी हो जाती है । अब हाथ उठाकर जहां दूसरी दुआएं मांगते हैं वहीं दुनिया और आख़िरत की भलाई के लिए दुआ करते हैं :

'हे हमारे रब ! तू हमें इस दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और हमें जहन्नम की यातना से बचा ।'

इंजील की एक महत्वपूर्ण दुआ (Lord's Prayer) भी कुछ इसी प्रकार की है :

'हे हमारे बाप ! जो तू आसमान पर है तेरा नाम पाक माना जाए तेरी बादशाही आए, तेरी मर्ज़ी जैसी आसमान पर पूरी होती है ज़मीन पर भी पूरी हो । हमारी दैनिक रोटी आज हमें दे और जिस प्रकार हमने अपने कर्ज़दारों को माफ़ किया है तू भी हमारे कर्ज़ हमें माफ़ कर और हमें आज़माइश में न ला बल्कि बुराई से बचा ।' आमीन ! –मत्ता 6:9-14

हाथ उठाकर दुआ मांगने का तरीक़ा बाइबिल में बयान हुआ है :

'जब सुलैमान ख़ुदावन्द से यह मुनाजात कर चुका तो ख़ुदावन्द के मज़बह के सामने से जहां वह अपने हाथ आसमान की ओर फैलाए हुए घुटने टेके था उठा ।'

–1 सलातीन 8:54

क़ुरआन और बाइबल के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् यह विदित होता है कि दोनों में एकेश्वरवाद की शिक्षा दी है और एक ख़ुदा समझना उससे मुक्ति की आशा रखनी गुमराही है ।

इस्लामी इबादतों में हार्दिक शांति, मानवीय एकता और ईश्वर की महानता का प्रदर्शन होता है । इस्लाम में इबादत का जो तरीक़ा सिखाया है उससे योगियों की कठिन तपस्याओं ओर संसार त्यागी ईसाई संन्यासियों की दुस्साध्य साधनाओं का निषेध होता है । इस्लाम में इबादत का अभिप्राय केवल यह है कि आपका ईश्वर से गहरा सम्पर्क हो और आप ईश्वरीय नियमों के अनुसार जीवन यापन करें । यही मुक्ति का एक मात्र मार्ग है । इसी मार्ग की ओर सम्पूर्ण संसार के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने दुनिया वालों को बुलाया है और स्वयं इस मार्ग पर चलकर आदर्श प्रस्तुत किया है ।

KIDS CARE

MONTESSORI & PRIMARY SCHOOL



- Montessori to Class - V
- A Huge Playground for Outdoor Games
- Efficient and Trained Teachers
- Learning through Computers
- Homely Environment
- CCTV Monitored

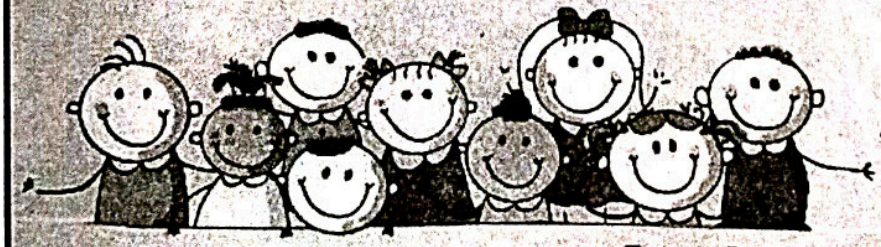

ADMISSION OPEN

A unit of
Al-Falah Educational & Welfare Trust

58, Tiljala Road, Kolkata - 700046

CONTACT : 9874359433 / 9432340275

Website : www.kidscareschool.org

योग्यता के आकलन का यह कैसा तरीक़ा ?

● मनीषा सिंह

अलग-अलग राज्यों के शिक्षा बोर्डों के तहत आधे-अधूरे संसाधनों के बल पर दी जाने वाली शिक्षा और कराई जाने वाली परीक्षा कुछ वैसे ही दृश्य पेश करती है, जैसे फ़िलहाल बिहार विद्यालय परीक्षा बोर्ड (बी॰एस॰ई॰बी॰) को लेकर सामने आये हैं । एक ओर तो इस परीक्षा में चौंसठ फ़ीसद छात्र फेल हो गये-जिस पर परीक्षार्थियों ने काफ़ी हंगामा खड़ा किया है । यही नहीं, आई॰आई॰टी॰ की प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले कई छात्र बोर्ड परीक्षा में नाकाम हुए हैं, जो लोगों की हैरानी का सबब है । पर साथ ही एक बड़ा विवाद बिहार बोर्ड के आर्ट्स टॉपर गणेश कुमार को लेकर पैदा हुआ है ।

यह बात किसी के गले नहीं उतर रही कि झारखंड के गिरिडीह का रहने वाला गणेश इंटर की पढ़ाई करने के लिए ढाई सौ किलोमीटर दूर बिहार के समस्तीपुर के उच्च माध्यमिक स्कूल में क्यों गया । यही नहीं, जिन विषयों को लेकर उसने टॉप किया है, उनमें उसकी जानकारी का स्तर भी अधकचरा बताया गया है । भले ही राज्य सरकार दावा कर रही है कि पिछले साल के गड़बड़झाले के मद्देनज़र इस साल परीक्षा प्रक्रिया में काफ़ी कठोरता बरती गयी । उधर, गणेश ने मैट्रिक में उम्र का फ़र्ज़ी सर्टिफ़िकेट लगाने का अपराध भी क़बूल किया, जिसके लिए उसे गिरफ़्तार कर जेल भेज दिया गया है । पिछले साल भी आर्ट्स में टॉपर रही रूबी राय को नक़ल से परीक्षा पास करने के अपराध में जेल जाना पड़ा था । सरकार ने मामले की जांच कराई थी और बी॰एस॰ई॰बी॰ के तत्कालीन अध्यक्ष और सचिव को गिरफ़्तार किया गया था ।

फ़र्जीवाड़े और नक़ल के बल पर परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाने वालों की गिरफ़्तारी और नक़ल के गोरखधंधे में लिप्त लोगों की धर-पकड़ से बिहार सरकार एक संदेश देने की कोशिश कर रही है । वह अस्ल में उस कलंक को धोना चाहती है, जो पिछले कुछ वर्षों में बिहार के बारे में ऐसी ख़बरों के कारण लगा कि वहां कैसे खुलेआम नक़ल होती है । इस साल सख़्ती का परिणाम यह निकला है कि चौंसठ फ़ीसद छात्र फेल हो गये ।

पिछले साल भी मैट्रिक के आधे से ज़्यादा परीक्षार्थी फेल हो गये थे । साल 2016 की परीक्षा में शामिल क़रीब साढ़े पंद्रह लाख परीक्षार्थियों में से 46.66 फ़ीसद ही सफल हुए थे । मैट्रिक की तरह ही राज्य की इंटर (आर्ट्स) परीक्षा में भी क़रीब तैंतालीस फ़ीसद परीक्षार्थी फेल घोषित किये गये थे ।

लेकिन इतनी सख़्ती के बाद भी घपले नहीं रुक पा रहे हैं, यह बात पहले रूबी राय और अब गणेश कुमार के प्रकरण से साफ़ है । जिस तरह पॉलिटिकल साइंस को प्रिडॉकिल साइंस कहने और उसे पाक-कला से संबंधित विषय बताने वाली छात्र रूबीं राय दोबारा परीक्षा के कई मौक़े देने के बाद आख़िरकार नाकाम साबित हुई थी, उसी तरह गणेश कुमार का संगीत के बारे में ज्ञान बॉलीवुड स्तर का है जिसमें वह टॉप पर है ।

वक़्त आ गया है कि राज्य शिक्षा बोर्डों के बल पर शिक्षा-परीक्षा का तंत्र संचालित कर रहे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश आदि उत्तरी राज्य इस पर विचार करें कि आख़िर क्यों उनकी परीक्षाओं में बिना नक़ल के छात्रों की कामयाबी पचास प्रतिशत तक भी नहीं पहुंच पाती है । नक़ल का कलंक धोने के सिलसिले में छात्रों को गिरफ़्तार करके या कपड़े उतार कर परीक्षा देने को मजबूर करके (जैसा कि

इस साल बिहार के मुज़फ़्फ़रपुर में किया गया जहां सेना में भर्ती के उम्मीदवारों को मात्र जांघिया पहनकर परीक्षा देनी पड़ी) कोई समाधान नहीं निकल सकता-यह समझना होगा।

नक़ल के दोषियों को सींखचों के पीछे भेजते वक़्त यह भी देखा जाना चाहिए कि आख़िर आज हमारी शिक्षा में बच्चों को किस चीज़ के लिए प्रेरित किया जा रहा है। अस्ल में वहां सिर्फ़ एक प्रेरणा है कि कैसे बच्चे हर परीक्षा में अच्छे नंबरों से पास हों ताकि जब किसी नामी कॉलेज और नौकरी की ओर क़दम बढ़ाएं तो उन्हें वहां हताश न होना पड़े। परीक्षा में ये नंबर रटंत विद्या से आते हैं, ट्यूशन-कोचिंग से, पर्चा लीक से या नक़ल से, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

इसके अलावा जिस तरह हर साल ऊंचे-नामी इंजीनियरिंग, प्रबंधन संस्थानों से निकले कुछ छात्रों के लाखों-करोड़ों के शुरुआती पैकेज की चर्चा टी॰वी॰-अख़बारों में होती है, तो अभिभावक सोचने लगते हैं कि क्या उनका बच्चा भी ऐसा करिश्मा कर पाएगा।

ऐसी सोच के साथ वे अभिभावक और छात्र, दोनों नंबरों की होड़ में शामिल हो जाते हैं। पर उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले वे बच्चे इन सुहाने सपनों को साकार करने के लिए क्या करें, जिन्हें पढ़ाई के लिए क़ायदे के संसाधन तक नहीं मिल पाते हैं। उन्हें तो अपने स्कूलों में ठीक-ठाक लैब नहीं मिलती, मास्टरजी के दर्शन भी कभी-कभार ही होते हैं। कई बार बच्चों को मीलों पैदल चलकर स्कूल जाना होता है। गांव-क़स्बों की लड़कियों के लिए तो और मुसीबत भी रहती है क्योंकि रास्ते में शोहदे उन्हें परेशान करते हैं। ऐसी स्थिति में उनके सामने दो ही विकल्प होते हैं, या तो पढ़ाई छोड़ दें या फिर जैसे-तैसे परीक्षा पास कर लें।

गांव-क़स्बों के स्कूलों में न तो पढ़ाई-लिखाई के माक़ूल प्रबंध हैं और न ही वहां शिक्षक पूरे साल पढ़ाने के प्रति गंभीर रहते हैं। वहां कई सरकारी स्कूल तो सिर्फ़ काग़ज़ों पर चलते हैं। ऐसे में नियमित स्कूल आने वाले छात्रों को मामूली जानकारियां भी नहीं मिल पाती हैं।

पिछले साल स्वयंसेवी संगठन 'प्रथम' ने बारहवीं तक के छात्रों पर कई वर्षों में किये गये अध्ययन से एक रिपोर्ट तैयार की थी। इस रिपोर्ट के मुताबिक़ पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र ठीक से दूसरी कक्षा की किताबें भी नहीं पढ़ पाते। इन हालात में छात्रों के लिए परीक्षा पास करने के लिए नक़ल ही एकमात्र ज़रिया बचता है। चूंकि शिक्षक पढ़ाते नहीं हैं, इसलिए परीक्षा के वक़्त छात्रों को नक़ल से रोकने की हिम्मत नहीं कर पाते हैं।

नक़ल रोकने वाला तंत्र भी ज़्यादातर ऐसे अवसरों पर लापरवाह हो जाता है। कई बार पाया गया है कि परीक्षा केंद्रों पर नक़ल रोकने को तैनात पुलिस वाले रिश्वत लेकर इस मामले में आंख मूंद लेते हैं। सवाल है कि जब व्यवस्था ही नक़ल रोकने के बजाय उसे सुचारू रूप से संपन्न कराने में सहयोगी हो जाए तो परीक्षा केंद्रों की वीडियोग्राफ़ी से लेकर छापामार उड़नदस्तों का भला क्या औचित्य रह जाता है ?

यही नहीं, जब बात नौकरी की आती है तो उत्तर प्रदेश-बिहार के सरकारी स्कूलों से पढ़कर आए छात्रों का सीधा मुक़ाबला शहरी कॉनवेन्ट और सी॰बी॰एस॰ई॰ से निकल कर आए छात्रों से होता है जो अंग्रेज़ी भाषा की जानकारी से लेकर तमाम विषयों में अपडेट रहते हैं।

25 yrs. Service (Regd.)

AL KAUSAR HOLY HERBAL

HOSPITAL & RESERCH CENTRE

(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)

Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**

Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)

Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India

Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)

Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days

(Rooms available)

Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

इस्लाम में महिला-अधिकार

■ जबीं अहमद

मनुष्य, अल्लाह की सर्वश्रेष्ठ रचना है । उसने मनुष्य को जो बुद्धि, विवेक और सामर्थ्य प्रदान किया, सृष्टि में किसी भी प्राणी को नहीं प्रदान किया इसके बावजूद मनुष्य यह नहीं समझ सकता कि कौन-सी चीज़ उसके लिए बुरी और अकल्याणकारी है । यह मनुष्यों पर अल्लाह का उदार अनुग्रह है कि उसने अपने पैग़म्बरों और संदेष्टाओं के द्वारा उन्हें अपनी शिक्षाएं दी और उनका मार्गदर्शन किया, ताकि वे अपने सांसारिक और पारलौकिक जीवन को सुन्दर और सफल बना सकें ।

'मनुष्य' शब्द ऐसा है कि उसमें स्त्री और पुरुष दोनों आ जाते हैं । स्त्री मानव की मां है । इस्लाम से पूर्व स्त्रियों की दशा बड़ी दयनीय और तुच्छा थी । इस्लाम ने उन्हें अस्तित्व प्रदान किया और उसके व्यक्तित्व को मान्यता दी । उस ज़माने में जबकि नारी अधिकार की बात से समाज एक तरह से अनभिज्ञ था, इस्लाम ने औरतों को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके स्वाभाविक अधिकार प्रदान किये और कुछ क्षेत्रों विशेष रूप से आध्यात्मिक क्षेत्र में रियायतें भी प्रदान की गयीं ।

इस्लाम ने संपत्ति में उसको हिस्सा भी प्रदान किया, जबकि आज भी कई देशों के संविधानों और समाजों में यह अधिकार उन्हें प्राप्त नहीं है । बड़े कहे जाने वाले देशों के संविधानों में तो अभी सो-डेढ़ सौ साल पहले कुछ प्रावधान हुआ है ।

पवित्र कुरआन में औरतों के अस्तित्व, अधिकार और उनके प्रति व्यवहार से संबंधित बहुत-सी आयतें मिलती हैं । औरतों के अस्तित्व के विषय में कुरआन में आया है–

"लोगो ! अपने 'रब' का ड़र रखो । जिसने तुम्हें एक ही जीव से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत-से पुरुषों और स्त्रियों को फैला दिया ।" (4:1)

"वही (अल्लाह) है जिसने तुम्हें एक जीव से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा बनाया ताकि वह उसकी ओर प्रवृत्त होकर चैन पाये ।" (7:189)

"आकाशों और धरती का बनाने वाला है । उसी ने तुम्हारे लिए स्वयं तुम से जोड़े बनाए...।" (42:11)

"और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुममें से जोड़े बनाए और तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किये, और तुम्हें अच्छी चीज़ों की रोज़ी दी । तो क्या ये नि:सत्य पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इन्कार करते हैं ? (16:72)

आध्यात्मिक क्षेत्र में अधिकार

इस्लाम में औरतों के साथ भेदभाव और पक्षपात नहीं किया गया है और उनकी स्वाभाविक उन्नति के मार्ग प्रशस्त किये गये हैं । इस्लाम की शिक्षा है जैसा जो कर्म करेगा, उसका वैसा ही बदला मिलेगा । उसके साथ यह भेदभाव नहीं रखा जाएगा कि कर्म करने वाला स्त्री है या पुरुष । कुरआन में है–

"तो उनके रब ने उनकी विनय सुन ली कि मैं तुममें से किसी कर्म करने वाले का कर्म अकारथ नहीं करूंगा चाहे वह पुरुष हो या स्त्री । तुम सब एक-दूसरे से हो ।" (3:195)

"प्रत्येक जीव अपनी कमाई के साथ बंधा हुआ है ।" (52:16)

औरतों को नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज्ज आदि धार्मिक ज़िम्मेदारियों में पुरुषों ही के समान अधिकार प्राप्त है । कुछ परिस्थितियों में तो उन्हें इनको संपन्न करने में छूट भी प्रदान की गयी है, उदाहरण के रूप में मासिक धर्म के दौरान वह नमाज़ और रोज़ा से मुक्त रहती है । इसी तरह बच्चा जनने के बाद 40 दिन तक वह नमाज़ और रोज़ा से बरी रहती है ।

औरतों को मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का भी पूरा अधिकार है, लेकिन यह नैतिक दोष की आशंका के कारण पसंदीदा नहीं है । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा–"तुममें से किसी से उसकी औरत मस्जिद जाने के लिए इजाज़त मांगे, तो उसे मना न करे ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने के बारे में जो आदेश पुरुषों के लिए हैं, उनके बिल्कुल उल्टा आदेश औरतों के लिए हैं। पुरुषों के लिए जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना श्रेष्ठ है, परन्तु औरतों के लिए बेहतर है कि वह घर में अकेले की हालत में नमाज़ पढ़े। इमाम अहमद और तबरानी ने उम्मे हुमैद सअदीया की यह हदीस नक़ल की है–

"उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! मेरा जी चाहता है कि आपके साथ नमाज़ पढ़ें। हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया मुझे मालूम है, पर तेरा एक किनारे नमाज़ पढ़ना इससे बेहतर है कि तू अपने कमरे में नमाज़ पढ़े और कमरे में नमाज़ पढ़ना इससे बेहतर है कि तू अपने घर की दालान में नमाज़ पढ़े और तेरा दालान में नमाज़ पढ़ना इससे बेहतर है कि तू अपने मुहल्ले में नमाज़ पढ़े और तेरा अपने मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना इससे बेहतर है कि जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़े।"

सामाजिक क्षेत्र में अधिकार

(1) लड़की की हैसियत से

इस्लाम से पूर्व अरबों के लिए लड़कियां एक आर समझी जाती थीं। उन्हें वे लज्जा का कारण समझते थे। इन अप्रिय भावनाओं के कारण कुछ क़बीले के लोग लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ दिया करते थे। क़ुरआन में 'सन्तान-वध' की घोर निंदा की गयी है और इसे भयानक अपराध बताकर सदा के लिए उसे समाप्त कर दिया गया। क़ुरआन में कहा गया है कि क़ियामत के दिन इस निर्ममता तथा वज्रता का ख़ुदा को जवाब देना होगा–

"और उस वक़्त को याद करो, जबकि उस लड़की से पूछा जाएगा जिसे ज़िंदा गाड़ दिया गया था कि किस अपराध में उसे मारा गया।" (81:8,9)

इस्लाम ने लड़कियों के बारे में अज्ञानता भरी भावनाओं के बिल्कुल विपरीत भावनाओं को जन्म दिया। इसके साथ ही लड़कियों के लालन-पालन की प्रेरणा दी गयी। इसे पुण्य कार्य और स्वर्ग-प्राप्ति का बहुत बड़ा साधन कहा गया। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा है–

"अल्लाह जिस व्यक्ति को इन लड़कियों के कारण कुछ भी आज़माइश में डाले और वह उनके साथ अच्छा व्यवहार करे तो वह उसके लिए जहन्नम से बचाव का कारण होगी।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

सामान्य रूप से लड़कों से अधिक प्रेम किया जाता है। भोजन, वस्त्र, शिक्षा-दीक्षा आदि में लड़कियों की अपेक्षा लड़कों पर अधिक ध्यान दिया जाता है। परंतु इस्लाम ने इसे अन्याय तथा अत्याचार क़रार दिया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा–

"जिस व्यक्ति के लड़की हो, वह न तो उसे ज़िंदा गाड़े, और न उसके साथ निंदित व्यवहार करे और न उस पर अपने लड़के ही को प्रभुता दे, तो अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल करेगा।" (अबू दाऊद, मुस्तदरक हाकिम)

(2) पत्नी की हैसियत से

विवाह के कारण औरत का व्यक्तित्व पति के व्यक्तित्व में न तो गुम हो जाता है और न ही वह उसकी शासित और दासी होती है। विवाह के बाद जहां वह कुछ नयी ज़िम्मेदारियां संभालती है वहीं कुछ नये अधिकारों की स्वामिनी भी होती है।

पति-पत्नी का संबंध मूलत: प्रेम का संबंध है। औरत और मर्द के बीच अल्लाह ने स्वभावत: जो प्रेम आकर्षण और खिंचाव रख दिया है, क़ुरआन ने एक जगह उसका उल्लेख इन शब्दों में किया है–

"उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति से जोड़े बनाए ताकि तुम उनके पास शांति प्राप्त करो और तुम्हारे मध्य प्रेम और दया पैदा कर दी। निश्चय ही इसमें निशानियां है उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं। (30:21)

इस्लाम ने इसकी प्रेरणा दी है कि पति अपनी पत्नी के क़ानूनी हक़ ही न अदा करे, बल्कि इससे आगे बढ़कर उसके साथ अच्छे से अच्छा व्यवहार करे। बीवी के साथ सद्व्यवहार प्रत्येक स्थिति में होना चाहिए।

हमें सद्व्यवहार की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के कथनों में मिलती है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि मोमिनों में सबसे पूर्ण ईमान वाला वह है जो आचरण-अख़्लाक़ में सबसे अच्छा है और तुममें सबसे अच्छा वह है जो औरतों के प्रति अच्छा व्यवहार रखता हो।

(3) मां की हैसियत से

इस्लाम में अल्लाह और रसूल के बाद सबसे ऊंचा स्थान मां का है। इस्लाम ने मां और बाप दोनों के साथ सद्व्यवहार का आदेश दिया है और उनके आज्ञापालन को

कहा है, इसलिए कि इन्सान पर दोनों ही बड़े एहसान हैं । क़ुरआन में है–

"हमने इन्सान को ताकीद की कि वह अपने मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करे । उसकी मां ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी उठा कर उसे अपने पेट में रखा और दो वर्षों में उसका दूध छूटा । हमने हुक्म दिया कि मेरा शुक्र अदा कर और अपने मां-बाप का कृतज्ञ बन । मेरी ही ओर तुझे पलटना है ।" (31:13)

बच्चे के पालन-पोषण में मां व बाप दोनों हा हाथ होता है, परन्तु मां का उपकार बाप से अधिक होता है । क्योंकि मां शिशु को नौ मास तक पेट में रखती है और प्रसव-वेदना को सहती है अपने रक्त से बने दूध का सेवन कराती है तथा बड़े होने तक उसकी उचित देखभाल करती है । इन सब कार्मों में सिर्फ़ मां ही शरीक होती है न कि बाप । इसलिए उसका उपकार बाप से अधिक है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने बाप के साथ भी सद्व्यवहार का आदेश दिया है, पर मां के साथ सद्व्यवहार पर इससे अधिक बल दिया है । आप (सल्ल०) ने कहा–

"मैं आदमी को उसकी मां के बारे में ताकीद करता हूं, मैं आदमी को उसकी मां के बारे में ताकीद करता हूं, मैं आदमी को उसकी मां के बारे में ताकीद करता हूं, मैं आदमी को उसके बाप के बारे में ताकीद करता हूं ।"

(इब्ने माजा, मुस्तरक हाकिम, 4:150)

सांस्कृतिक क्षेत्र में अधिकार

औरत को अपने पति के चुनाव का पूरा-पूरा अधिकार दिया गया है । उसकी रज़ामन्दी के बिना कोई व्यक्ति उससे निकाह (विवाह) नहीं कर सकता । यदि वह अपनी इच्छा से किसी ईमान वाले व्यक्ति से निकाह, कर ले तो उसे कोई व्यक्ति रोक नहीं सकता, सिवाय इसके कि वह मर्तबे से गिरा हुआ हो, तो इस शक्ल में उसके सरपरस्तों को आपत्ति करने का हक़ है । लेकिन एक नापसन्दीदा और नाकारा पति के मुक़ाबले में औरत को खुलअ लेने और निकाह ख़त्म कराने के अधिकार प्रदान किये गये हैं ।

विधवा और तलाक़शुदा औरतों और ऐसी तमाम औरतों को जिनके निकाह क़ानून के मुताबिक़ ख़त्म कर दिये गये हों या जिनको अलगाव के आदेश के द्वारा पति से पृथक कर दिया गया हो, दूसरे निकाह का बिना शर्त अधिकार प्रदान किया गया है और इस बात को साफ़ कर दिया गया है कि उन पर पिछले पति या उसके किसी रिश्तेदार का कोई हक़ बाक़ी नहीं इस्लाम में विधवा और तलाक़शुदा औरतों के लिए कोई समस्या नहीं है । यह बात बिल्कुल खुली हुई है ।

औरत और मर्द के बीच दीवानी और फ़ौजदारी क़ानूनों में पूरी बराबरी क़ायम की गयी है । ज़ान व माल और इज़्ज़त की हिफ़ाज़त में इस्लामी क़ानून औरत और मर्द के बीच किसी प्रकार का फ़र्क़ नहीं करता ।

इस्लामी राज्य में औरत को लिखने-बोलने की पूरी आज़ादी है । औरत अपनी संस्था बना सकती है । अपने समाचार-पत्र और पत्रिकाएं निकाल सकती है । सरकार की आलोचना कर सकती है और अपने अधिकारों की मांग कर सकती है । हर प्रकार की समस्याओं पर अपनी राय प्रकट कर सकती है । इस्लामी राज्य में औरत की शिक्षा अनिवार्य सेवाओं के अंतर्गत मानी जाती है ।

आर्थिक क्षेत्र में अधिकार

इस्लाम से पूर्व औरतें आर्थिक हैसियत से बहुत कमज़ोर थीं । इसी आर्थिक कमज़ोरी की वजह से वे गुलामी की ज़िन्दगी बिताती थी । परन्तु इस्लाम ने औरतों को आर्थिक क्षेत्र में पूरा-पूरा अधिकार प्रदान किया । वह औरत को विरासत के ज़बरदस्त अधिकार देता है उसे अपने पिता से, पति से, बेटे से और दूसरे क़रीबी रिश्तेदारों से विरासत मिलती है ।

पति से उसको महर भी मिलती है । औरत अपने अधिकारों द्वारा प्राप्त धन का अपनी इच्छानुसार उपभोग कर सकती है । उसमें दख़ल देने का न तो पिता को अधिकार है और न पति तथा अन्य लोगों को । साथ ही वह अपना धन किसी व्यापार में लगाती है या मेहनत करके कुछ कमाती है तो वह उसकी मालिक भी होती है ।

ज़रूरत पड़ने पर इस्लाम औरतों को नौकरी करने की भी इजाज़त देता है । अपनी योग्यता के अनुसार वे किसी भी क्षेत्र में बाइज़्ज़त काम कर सकती है ।

यही कारण है कि इस्लाम में औरत की आर्थिक हैसियत इतनी मज़बूत हो गयी है कि वह कभी-कभी पुरुष से ज़्यादा बेहतर हालत में होती है । इस्लामी बैतुलमाल में औरतों का हक़ रखा गया है । यदि कोई क़र्ज़दार औरत मर जाए और अपने पीछे कुछ न छोड़े तो उसका क़र्ज़ इस्लामी राज्य अदा करेगा ।

हज का महत्व

■ डॉ॰ हुसनुद्दीन अहमद

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का फ़रमान है कि इस्लाम की इमारत पांच अरकान पर क़ायम है–कलिमा-ए-शहादत, नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज । यह बात सभी को मालूम है कि बग़ैर कलिमा तय्यबा के इक़रार के कोई शख़्स इस्लाम में दाख़िल नहीं होता । इसके इक़रार के बाद उस पर लाज़िम आता है कि इस्लाम पर अमलपैरा रहने के लिए बाक़ी चार अरकान पर अमलपैरा रहे । इन अरकान में से दाख़िल कर देता है ।

दूसरी तरफ़ इन्कार तो न करे मगर जान-बूझकर या लापरवाही की वजह से किसी भी रुक्न से ग़फ़लत बरते तो गुनाहे कबीरा (बड़ा पाप) करता है और फ़ासिक़ कहलाता है ।

ये चार अरकान किसी मुसलमान को अकारण परेशानी में डालने के लिए फ़र्ज़ नहीं किये गये, बल्कि ज़िन्दगी गुज़ारने का पहलू अपने चरम रूप में इनमें मौजूद है । यह बात बहरहाल सुनिश्चित है कि इन अरकान की हिक्मतें और तक़ाज़े हमारे समझ में आएं या न आएं, उन पर अमल करना फ़र्ज़ है और इबादत है ।

अल्लाह ने अपनी इबादत के जो तरीक़े सुनिश्चित किये हैं, हमें उन पर निस्संकोच अमल करना चाहिए । लेकिन अगर हम यह मालूम करें कि इन इबादतों में बंदे के लिए क्या हिक्मतें छुपी हैं–तो न सिर्फ़ यह कि इनकी महत्ता का पता चलता है, बल्कि बंदे में वलवला और जज़्बा भी उभरता है । और शांति व सुकून भी हासिल होता है ।

निम्न आलेख में हम संक्षेप में हज की हिक्मतों का अध्ययन करेंगे । इसके बादहज की सही अदाएगी की शर्तों का अध्ययन करेंगे । तीसरी बात जिस पर हम रोशनी डालेंगे वह हज के मनासिक हैं यानी हज का तरीक़ा क्या है और इसकी महत्ता क्या है । आख़िर में हम हज के उन असरात व बरकात का संक्षेप में जायज़ा लेंगे जो हमारे समाज पर पड़ते हैं ।



हज की अहमियत

सन 9 हिजरी में जब सूरह आले इमरान की आयत नम्बर 97 नाज़िल हुई तो हज फ़र्ज़ हुआ और इस आयत में लोगों को हुक्म दिया या कि जो सामर्थ्य (इस्तेताअत) रखते हों, वे अल्लाह के घर का हज करें । अब इस्तेताअत से क्या मुराद है, इस पर गुफ़्तगू हम 'हज की शर्तें' अध्याय में आगे करेंगे । यहां हम हज की परिभाषा, उसकी अहमियत पर रोशनी डालेंगे । अल्लाह का यह घर जिसके हज के लिए हुक्म दिया गया है, मक्का मुअज़्ज़मा में है । अल्लाह सूरह आले इमरान की आयत नम्बर 96 में इसका उल्लेख करता है और इसकी फ़ज़ीलत बयान करता है ।

सबसे पहले लोगों के लिए जो अल्लाह का घर इबादत की ख़ातिर बनाया गया वह 'बक्का' में है । हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) जब हज़रत हाजिरा और हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) को फ़ारान की वादी के रेगिस्तान में अल्लाह के हुक्म के अनुसार छोड़कर चले गये तो हज़रत हाजिरा ने पानी की तलाश में भाग-दौड़ की (इसी को सअी कहते हैं) जब पानी का चश्मा (स्रोत) पाया तो आपने इसके गिर्द मुंडेर बना ली । पानी की वजह से परिंदे आये । परिंदों को देखकर जानवर भी पानी की तलाश में आये । शाम (वर्तमान का सीरिया देश) से यमन के दर्मियान जब तिजारती क़ाफ़िलों ने चरिंद व परिंद देखे तो वे भी इस तरफ़ आकर्षित हुए और उन्होंने पानी के पास बस्ती आबाद कर ली और उसे

अनुष्ठान और प्रभाव

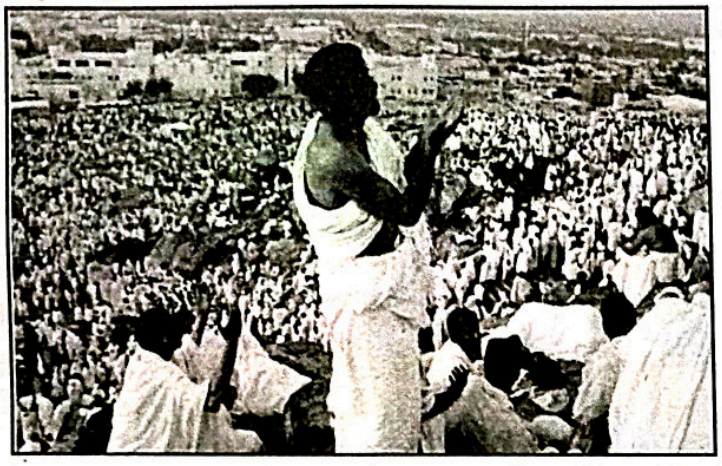

'बक्का' कहा । शामी भाषा में 'बक्का' के माने बस्ती या शहर के हैं । बाद में यही लफ़्ज़ अरबी भाषा में 'मक्का' बन गया !

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) जब 6-7 साल बाद दुबारा वापस आये तो यह जगह आबाद हो चुकी थी और हज़रत इस्माईल खेलने और दौड़ने लगे थे । अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ दोनों ने अल्लाह के जर्जर घर की तामीर दुबारा उन्हीं बुनियादों पर की जिन पर वह घर बनाया गया था । साथ-साथ वे यह भी दुआ करते जा रहे थे कि ऐ अल्लाह हम दोनों को अपना मुसलमान (आज्ञापालक) बना । हमारी औलाद से उम्मते मुस्लिमा खड़ी कर और हमें इस घर में इबादत के तरीक़े भी सिखा । (सूरह बक़रा, आयत-125)

अल्लाह ने न सिर्फ़ यह कि उनकी दुआ क़बूल की, बल्कि इस घर में इबादत का तरीक़ा (मनासिक) भी बताया । हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने वह मशहूर दुआ भी मांगी कि उन्हीं में से एक रसूल भेजे जो उन्हें किताब व हिक्मत की तालीम दे और उनका तज़किया (अंत:करण की शुद्धि) करे । अल्लाह ने यह दुआ भी क़बूल फ़रमाई ।

जब हज की ये आयतें नाज़िल हुईं तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने यह ख़ुत्बा दिया और फ़रमाया—लोगो ! अल्लाह ने बेशक तुम पर हज फ़र्ज़ किया है, लिहाज़ा तुम हज करो । एक सहाबी ने पूछा, क्या हर साल ? आप (सल्ल॰) ने जवाब नहीं दिया । दूसरी मर्तबा फिर पूछा, आपने जवाब नहीं दिया । तीसरी मर्तबा फिर पूछा, आपने फ़रमाया—अगर मैं हां कह दूं तो तुम्हारे लिए हर साल हज करना कठिन हो जाएगा । देखो ज़्यादा सवाल न पूछा करो, तुमसे पहली क़ौमें ज़्यादा सवाल पूछने की वजह से हलाक हुईं । (मुस्लिम)

इस तरह यह बात वाज़ेह हो गयी कि हज सिर्फ़ एक ही मर्तबा फ़र्ज़ है । एक अन्य हदीस में हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि हज और उमरा साथ करो । दोनों ग़रीबी और गुनाहों को ऐसा दूर कर देते हैं जैसे भट्टी में सोना और लोहा जब पिघलता है तो गंदगियों का झाग साफ़ कर दिया जाता है । (तिरमिज़ी)

एक हदीस में हज़रत अली (रज़ि॰) की रिवायत है कि हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि जो सफ़र का ख़र्च रखता हो और सवारी रखता हो, वह अगर हज न करे तो चाहे यहूदी होकर मरे चाहे ईसाई होकर मरे । (तिरमिज़ी) इस हदीस से यह बात बिल्कुल वाज़ेह हो गयी है कि हज फ़र्ज़ हो जाने के बाद अगर कोई मुसलमान इस फ़र्ज़ को अदा न करे तो उसमें और यहूदी या ईसाई में कोई फ़र्क़ नहीं है ।

यह बिल्कुल इसी तरह की हदीस है कि एक मुसलमान अगर नमाज़ तर्क कर दे तो कुफ़्र की सरहद में दाख़िल हो जाता है—या अगर कोई साहिबे निसाब ज़कात न दे तो उसमें संघर्ष (क़िताल) किया जाएगा । हज की अहमियत उस घटना से भी उजागर होती है कि किसी ने इमाम अबू हनीफ़ा (रह॰) से पूछा कि सबसे अफ़ज़ल इबादत कौन-सी है ? आपने फ़रमाया कि फिर आना । आपने उस वक़्त तक हज नहीं किया था । जब आपने हज कर लिया तो आपने जवाब दिया कि सबसे अफ़ज़ल इबादत हज है । हक़ीक़त भी यह है कि जो मशक़्क़त, ईसार (त्याग), मेहनत, वक़्त, सब्र, इन्साफ़ (ख़ुदा की राह में ख़र्च), हुक़ूक़ की अदाएगी इस इबादत में है, वह किसी अन्य इबादत में नहीं है । और यह सब अल्लाह की बन्दगी और रज़ा की ख़ातिर है ।

हज को जामअउल इबादात (इबादतों का संग्रह) भी

कहा जाता है । वजह यह है कि हज के मनासिक के दौरान नमाज़ की अदाएगी फ़र्ज़ है । सदक़ा (दान-पुण्य) और इन्फ़ाक़ बहुलता से करना चाहिए और फिर इन्सान सोम (रोज़ा) भी इख़्तियार करता है । अगर ये तमाम बातें न करे तो हज ही नहीं होता, हज क़बूल नहीं होता । अगर एक शख़्स हज करे, लेकिन नमाज़ न पढ़े तो हज क़बूल नहीं । एक शख़्स ग़लतियों और गुनाहों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित-दान) न दे, साहिबे निसाब है लेकिन क़ुरबानी न करे-तो हज निरर्थक कर्म-कांड रह जाएगा । एक शख़्स अगर उद्दंडता, सरकशी और यौन संबंधों से अपने को न बचाए यानी अगर हज के दौरान लड़ाई-झगड़ा, गाली-गलौच करे, पत्नी से यौन संबंध बनाए रखे-अगरचे खाने की इजाज़त है, मगर शिकार करके खाता है तो गोया उसने 'सौम' (व्रत) नहीं अपनाया । उसका हज ऐसी सूरतों में उस वक़्त तक क़बूल नहीं जब तक कफ़्फ़ारा न अदा करे ।

ग़ौर कीजिए तो नमाज़ के दौरान न ज़कात की अदाएगी ज़रूरी है, न रोज़ा और न हज । इसी तरह ज़कात की अदाएगी के वक़्त न नमाज़, न रोज़ा और न हज अदा करना ज़रूरी है । रोज़े की हालत में भी हज की अदाएगी ज़रूरी नहीं । मगर हज के दौरान नमाज़ की अदाएगी, सदक़ा व ख़ैरात करना उद्दंडता से बचना ज़रूरी है । इसीलिए यह जामअ-उल-इबादात है औ अफ़ज़ल तरीन इबादत ! हज की अहमियत को समझ लेने के बाद अब हम संक्षेप में हज की शर्तों पर रोशनी डालेंगे ।

हज की शर्तें

सबसे पहले इस बात को समझना ज़रूरी है कि हज जैसे ही फ़र्ज़ हो यानी उसकी शर्तें पूरी होती हों, उसका अदा करना ज़रूरी है, वरना हनफ़ी फ़िक़्ह के तहत आदमी गुनहगार है (दुर्रे मुख़्तार)। और जब तक हज अदा नहीं कर लेता वह इस गुनाह में मुब्तिला रहता है । पहली शर्त यह है कि इन्सान आक़िल व बालिग़ हो । एक मंदबुद्धि या पागल शख़्स पर हज फ़र्ज़ नहीं क्योंकि वह इबादत का शऊर नहीं रखता । इसी तरह बालिग़ होना ज़रूरी है, नाबालिग़ या बच्चे का हज नहीं होता । हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि बच्चे को चाहे दस हज करा लो, मगर उसके बालिग़ होने पर उसका हज का फ़र्ज़ उसे अदा करना है । इसके मांने यह है कि गर्मी व सफ़र और दीगर मशक़्क़त का भार बच्चे पर न डाला जाए कि उससे उसका फ़र्ज़ अदा नहीं होता ।

तीसरी शर्त यह है कि इन्सान आज़ाद हो, अपनी मर्ज़ी और शऊर के साथ हज करे । गुलाम अपने स्वामी की मर्ज़ी के अधीन है और उसका काम हर वक़्त स्वामी की सेवा करना है । चौथी शर्त यह है कि साहिबे इस्तेताअत (सामर्थ्यवान) हो । यही वह शर्त है जो प्राय: बार-बार सामने लाई जाती है । इसलिए कि पहली तीन शर्तें अमूमन आजकल के मुस्लिम समाज में हर शख़्स पूरी करता है । लफ़्ज़ 'इस्तेताअत' में पांच-छह बातें शामिल हैं, मुमकिना सूरत में ये सभी पूरी होनी चाहिए । अगर इनमें से कोई एक बात पूरी नहीं होती तो इस्तेताअत (सामर्थ्य) का निहितार्थ पूरा नहीं होता ।

पहली बात माली हालत है । माल आम हालात में अस्ल ज़रूरत से ज़्यादा हो, क़र्ज़-मुक्त हो । माल रास्ते के सफ़र के ख़र्च और सवारी के लिए पर्याप्त हो, जोकि समाज में अपनी हैसियत, हिफ़ाज़त व सेहत के मुताबिक़ और ज़रूरी हो । इसी तरह वह सफ़र पर जाने से पहले उन तमाम अफ़राद का ख़र्च उस वक़्त के लिए जबकि वह हज के सफ़र पर होगा, मुहैया कर सके । उसके पीछे उसके घर वालों के ख़र्च की ज़िम्मेदारी उस पर है । यह ख़र्च भी घर वालों की अपनी हैसियत व सेहत के मुताबिक़ और ज़रूरी हो ।

एक शख़्स ऐसी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है कि तीन वक़्त अच्छा खाता है, सवारी के लिए कार है, काम-काज के लिए नौकर है, वह हज का इरादा करता है । हज के सफ़र और सवारी के ख़र्चों का हिसाब लगाता है और यह रक़म जमा करता है-लेकिन इसकी वजह से वह अपनी कार बेचता है, नौकर को निकाल देता है, और हज से वापसी तक खाने, कपड़े, इलाज के ख़र्चों में कमी कर देता है कि उसकी ग़ैर-मौजूदगी में उसके घर वाले बस से सफ़र करें, अपना काम ख़ुद करें, खाना सिर्फ़ दो वक़्त खाएं कि किसी तरह वक़्त गुज़ार लें कि वह शख़्स हज कर ले-तो ऐसा शख़्स साहिबे इस्तेताअत नहीं है, हज उस पर फ़र्ज़ नहीं है । मुमकिन है कि हज के सवाब के बजाए घर वालों को तकलीफ़ में रखते पर उसकी बाज़पुर्स हो ।

इसी तरह इस्तेताअत के तहत इतना वक़्त भी होना ज़रूरी है कि वह हज के मनासिक पूरे कर सके । अगर कोई शख़्स ऐसी नौकरी करता है कि उसे दो दिन से ज़्यादा छुट्टी नहीं दी जा सकती कि क़ौम, मुल्क या स्वामी किसी ख़तरे का शिकार हो जाए-और दो दिन में हज के मनासिक पूरे नहीं हो सकते और सफ़र पूरा नहीं हो सकता-तो ऐसा शख़्स साहिबे इस्तेताअत नहीं, उस पर हज फ़र्ज़ नहीं ।

इस्तेताअत के तहत तीसरी बात यह है कि हज का इच्छुक बीमार न हो । अगर मर्ज़ ऐसा है कि बढ़ जाने का ख़तरा है या मर्ज़ फैल जाने का ख़तरा है यानी कोई संक्रामक रोग है तो ऐसे मरीज़ पर हज फ़र्ज़ नहीं ।

चौथी बात यह है कि अगर रास्ते में ख़तरा हो, पाबंदी हो, भय हो-जैसे जंग हो रही हो, ख़तरनाक जानवर हो, लुटने का अंदेशा हो, सफ़र की पाबंदी हो, क़ैद हो जाने का डर हो-तो ऐसी सूरत में भी हज फ़र्ज़ नहीं रहता ।

औरतों के लिए पांचवीं बात यह है कि हज के सफ़र पर महरम (घर का ऐसा सदस्य जिससे पर्दे का हुक्म नहीं है) साथ हो । मगर कोई महरम नहीं मिल रहा है तो जान-पहचान की औरतों के साथ हज पर जाए । अगर यह भी मुमकिन नहीं हो तो वह हज पर नहीं जा सकती । ऐसी हालत में उस पर हज फ़र्ज़ नहीं । अगर महरम साथ है या कुछ जान-पहचान की औरतें साथ हैं और हज की अन्य शर्तें पूरी कर रही है, तो फ़ौरी तौर पर हज फ़र्ज़ है । हज फ़र्ज़ होने पर कोई मर्द उसे रोक नहीं सकता । चाहे वह शौहर हो, बाप या वली (संरक्षक)। रोकने वाला गुनहगार है ।

औरत के लिए एक शर्त और है कि वह इद्दत के दिनों में न हो ।

पांचवीं शर्त यह है कि सफ़र और हज में बिदअतों (ग़लत रस्में) से बचा जाए । हुज़ूर (सल्ल०) के सामने एक बूढ़ा पेश किया गया, जो अपने लड़कों के कंधों के सहारे पैदल सफ़र कर रहा था और उससे चला नहीं जा रहा था । मालूम हुआ कि उसने पैदल सफ़र की मन्नत मानी है । आप (सल्ल०) ने नाराज़गी का इज़हार किया और हुक्म दिया कि उसके लिए सवारी मुहैया की जाए और यह उससे सफ़र करे । इसी तरह एक अन्य रिवायत है कि आपने देखा कि मताफ़ में एक शख़्स की नाक में रस्सी पड़ी है और उसे खींच रहे हैं । पूछा यह क्या है ? बताया गया कि य अल्लाह के दरबार में अपने को ज़लील कर रहा है । आप हुक्म दिया कि इसकी नकेल काट दी जाए और यह सीध होकर तवाफ़ करे ।

इसी तरह हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के सामने एक और पेश की गयी कि यह ख़ामोश रहती है और इसने ख़ामोश हज की मन्नत मानी है । हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ने हुक्म दिया क वह बात करे । अल्लाह को उसकी ख़ामोशी क ज़रूरत नहीं है । ग़र्ज़ यह कि इस क़िस्म की फ़िज़ूल मन्नत और बिदआत से अपने हज को बचाना चाहिए और सिर्फ़ वही तरीक़ा अपनाना चाहिए जो हुज़ूर (सल्ल०) ने करके दिखाया है ।

इस शर्त पर हम पहले भी रोशनी डाल चुके हैं कि हज की मक़बूलियत के लिए यह ज़रूरी है कि गाली-गलौच झगड़ा, उद्दंडता और यौन-संबंधों आदि से इन्सान अपने क बचाकर मनासिक अदा करे । वरना सिवाय निरर्थक मशक़्क़त के कुछ हासिल न होगा । हज के मनासिक (अनुष्ठान) क्या हैं, इनकी अहमियत और हिक्मत क्या है । आइए अब इन पर रोशनी डालते हैं ।

सबसे पहले हम हज के मायने समझ लें । शब्दकोश में हज का भावार्थ है कि किसी जगह की ज़ियारत का इरादा करना । शरीअत की शब्दावली में इसका अर्थ है-विशेष दिनों में, विशेष समयों में बैतुल्लाह और उसके आसपास के विभिन्न स्थानों की ज़ियारत और उसके मनासिक (मज़हबी रस्में) अदा करना । जब कोई इन्सान इनकी ज़ियारत के लिए निकलता है तो वह इसका एहसास रखता है कि इसमें वक़्त ख़र्च होगा, माल ख़र्च होगा, मशक़्क़त करनी होगी घर वालों, रिश्तेदारों और वतन व रोज़गार से दूरी होगी । इ सबके बावजूद जब वह हज पर जाता है तो यक़ीनन ख़ौफ़े ख़ुदा और अल्लाह से मुहब्बत और बंदगी का इज़हार करत है । अपने को बुराई से बचाता है । उसके आमाल औ किरदार की इस तरह इस्लाह होती है और तक़वा (ईश परायणता) परवान चढ़ता है, बशर्ते हज के तमाम मनासिक को उसकी अस्ल रूह व हिक्मत के साथ अदा करे औ अल्लाह से मग़फ़िरत चाहे ।

इन मनासिक में हज के दो अरकान हैं । फ़िक़्ह हनफ़ी

के तहत बाक़ी या तो वाजिब, सुन्नत या शराइत हैं । लेकिन अपनी जगह सब ही कोई न कोई हिक्मत रखते हैं । दो अरकान वक़ूफ़े अरफ़ात और तवाफ़े ज़ियारत है । हज के मनासिक निम्न हैं–

1. इहराम

अज्ञानकाल में लोग हरम काबा पर पहुंचकर अपने कपड़े उतार देते थे, कि यह दुनिया की गंदगी से भरे हुए हैं और नंगे होकर तवाफ़ क़रते थे कि इस तरह इन्सान सब एक हो जाते हैं । लेकिन नंगा होना अश्लीलता का प्रदर्शन है–अल्लाह इसे पसंद नहीं करता । अल्लाह ने सूरा आराफ़ में फ़रमाया कि ऐ आदम की औलाद हर इबादत या मस्जिद में अपनी ज़ीनत इख़्तियार करो । अत: लिबास लाज़िमी है । अब सवाल यह पैदा होता है कि सादगी और मसावात (समानता) का इज़हार कैसे हो । चुनांचे इस्लाम ने हिदायत की कि दो सफ़ेद चादरों में अपने को लपेट लो । अब हर शख़्स इन्हीं दो कपड़ों में अल्लाह के दरबार में हाज़िरी दे । देखने वाले यह न समझ सकें कि दास कौन है और स्वामी कौन । अमीर कौन है और ग़रीब कौन । कौन किस जाति, नस्ल, कल्चर और सभ्यता से ताल्लुक़ रखता है । अल्लाह के दरबार में सब इन्सान बराबर हैं ।

बन्दा व साहब व मोहताज व ग़नी एक हुए
तेरे दरबार में पहुंचे तो सभी एक हुए ।

यह भी मुमकिन था कि हरम पहुंचकर सब लिबास बदल लें । मगर इससे पहले लोग अपने लिबास की वजह से पहचान लिए जाते थे । इसलिए हुक्म हुआ कि मीक़ात में दाख़िल से पहले लिबास तब्दील करो, ताकि पहचान बिल्कुल न हो सके । अब अगर कोई पहले से किसी को नहीं जानता तो लिबास की वजह से उसके लिए पहचान संभव न रही । जब इहराम पहन लिया तो गोया अल्लाह के दरबार में हाज़िरी के लिए तैयार हैं । अत: उसी वक़्त अल्लाह से मुनादी शुरू की जाए कि ऐ अल्लाह हम तेरे दरबार में हाज़िर हैं । 'लब्बैक ला-शरीक ल-क लब्बैक' और जब सारे इन्सान एक ही लिबास में एक ही मक़ाम पर अपनी हाज़िरी का नारा बुलंद करते हुए चारों तरफ़ से हरम के लिए चलते हैं ऐसा महसूस होता है गोया अल्लाह की फ़ौज है, जो अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिए अल्लाह के घर की तरफ़ बढ़ रही है ।

2. तवाफ़

बैतुल्लाह का तवाफ़ (परिक्रमा) हाज़िर होने पर आस्तानाबोसी है । हिजरे असवद (काबा में स्थापित काला पत्थर) से सबका तवाफ़ शुरू होता है, मानो यह हाज़िरी या रजिस्ट्रेशन का स्थान है । बैतुल्लाह को बायीं जानिब रखकर तवाफ़ शुरू होता है, गोया डिसिपिलिन की तालीम दी जाती है और इसी हिजरे असवद पर तवाफ़ ख़त्म होता है । और यहीं से बंदा अल्लाह के घर से रवाना होता है । मानो इसका रजिस्ट्रेशन है कि उसने अपना काम अंजाम दिया और अब दूसरी ड्यूटी पर रवाना हो रहा है ।

हज़रत उमर (रज़ि॰) का वह क़ौल याद कीजिए कि, ऐ हिजरे असवद तू एक पत्थर के सिवा कुछ नहीं, अगर हुज़ूर (सल्ल॰) ने तुझे बोसा न दिया होता तो मैं भी तुझे बोसा न देता । हिजरे असवद हमारे लिए इबादत का मर्कज़ नहीं, बल्कि इबादत की शुरुआत और अंत का मक़ाम है, प्रतीक (शिआ) है, डिसिपिलिन सिखाने का एक बिन्दु है । जब बंदा अल्लाह के घर हाज़िरी दे देता है तो वहां से चलकर सफ़ा व मरवा पहाड़ियों की तरफ़ जाता है ।

3. सई : सफ़ा व मरवा

सफ़ा और मरवा पहाड़ियों के बीच अब वह सई (आवागमन) करता है तो गोया इस बात की तर्बियत हासिल करता है और इसका इज़हार करता है कि अल्लाह की राह में इसी तरह संघर्ष के लिए तैयार है । अल्लाह की राह में चढ़ाई चढ़ना हो या उतरना, चलना हो या दौड़ना-इसकी तर्बियत लेता है । बार-बार करना है तो बार-बार करने के लिए तैयार है । ग़रज़ यह कि जिस्मानी मशक़्क़त करने के लिए हर वक़्त तैयार है । सई के बाद वह अरफ़ात के मैदान की तरफ़ रवाना होता है और वहां ठहराता है ।

4. पड़ाव : अरफ़ात, मिना व मज़दलफ़ा

अल्लाह का सिपाही जब अल्लाह की राह में जिहाद के लिए निकलता है, घर-बार छोड़ता है, बीवी-बच्चे, रिश्तेदार, माल-दौलत सबको भुलाकर दुनिया के आराम को त्याग देता है और खुले मैदान में ख़ेमों में क़याम करता है । जहां तक निगाह जाती है ख़ेमे ही ख़ेमे नज़र आते हैं । वतन से दूर रेगिस्तान में आख़िर वह क्यों पड़ाव डाले हुए है ? पहली

बात यह कि वह आख़िरत का मंज़र देख ले । यहां हर शख़्स व्यक्तिगत तौर पर अल्लाह की बारगाह में तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है । उसे न बीवी-बच्चे याद आते हैं, न माल व संपत्ति । वहां ख़ाक में अटा, बाल बिखराए हुए अल्लाह ही की बारगाह में खड़ा अपनी ग़लतियों, कोताहियों, गुनाहों और कुकर्मों की माफ़ी मांग रहा होता है-और अल्लाह अपने बंदों की इस हालत को पसंद फ़रमाता है और कहता है कि आज जो ये मांगेंगे मैं उन्हें दूंगा, ये मेरे पास उलझे बाल और धूल में अटे हुए आये हैं ।

दूसरी बात यह कि अल्लाह के सिपाहियों का विशाल समूह सिर्फ़ इसलिए रेगिस्तान में ख़ेमाज़न है कि यह अल्लाह का हुक्म है । जंगी हालात में सिपाही जिस तरह ज़िन्दगी गुज़ारता है, उसकी तर्बियत लेता है । इसी तरह यहां भी वह दिन-रात गुज़ारता है, ज़िन्दगी का ऐश्वर्य अल्लाह के नाम पर क़ुरबान करने को तैयार है ।

5. शैतान को कंकड़ी मारना

अल्लाह का सिपाही यह तीन मर्तबा कंकड़ियां क्यों मारता है ? यह बात इसलिए है कि एक मुसलमान इस बात का शऊर पैदा करे कि अल्लाह के दीन की तरफ़ जिसका हाथ उठेगा, अल्लाह के रास्ते में जो भटकाएगा, सन्मार्ग (सिराते मुस्तक़ीम) से हटाएगा-अल्लाह का मुजाहिद उससे संघर्ष करेगा । कुछ न होगा तो ज़मीन पर पड़ी हुई कंकड़ी ही से लड़ेगा ।

6. क़ुरबानी

अल्लाह का बंदा अपना माल ख़र्च करता है, सदक़ा व ख़ैरात करता है, जानवर क़ुरबान करता है । उसका गोश्त ख़ुद खाता है, रिश्तेदारों में तक़सीम करता है, ग़रीबों-मिस्कीनों को देता है । अल्लाह के बंदों को याद रखता है, बंदों के हुक़ूक़ अदा करता है । क़ुरबानी तक़वा पैदा करने का एक उम्दा तरीक़ा है । मुशरिकीन जानवर ज़िब्ह करके ख़ून ख़ाना-काबा की दीवार से चुपड़ देते थे और गोश्त छोड़ देते थे । अल्लाह फ़रमाता है कि अल्लाह को गोश्त और ख़ून नहीं पहुंचता, बल्कि तुम्हारा तक़वा पहुंचता है । तक़वा का सबक़ है कि क्या तुम अल्लाह की राह में क़ुरबानी दे सकते हो ? माल ख़र्च कर सकते हो ? उसके शुक्रगुज़ार बंदे बन सकते हो...?

7. सिर मुंडवाना

अज्ञानकाल में रिवाज था कि जब कोई व्यक्ति गुलाम ख़रीदता था तो सार्वजनिक स्थल पर उसका सिर मुंडवाया जाता था । यह गोया इस बात का ऐलान था कि यह शख़्स आज से फ़लां का गुलाम है और उसी का हुक्म मानने का अधीन है । हाजी जब सिर मुंडवाता है तो गोया यह इस बात का ऐलान है कि वह अब बाक़ायदा अल्लाह की गुलामी में आ गया है । अब उसी के अहकाम के ताबअ है और ज़िन्दगी अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ गुज़ारेगा । दूसरे मायने यह भी हैं कि अब वह गंदगियों, गुनाहों और ग़लतियों से पाक-साफ़ होकर दुबारा दुनिया में आ रहा है, जहां पर अल्लाह की बंदगी करेगा और पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ारेगा ।

हज की बरकतें और असरात

हज के मनासिक की अदायगी से जो बरकात व असरात इन्सानी समाज दिखाई देते हैं, उनका जायज़ा हज की हिक्मतें समझने के लिए ज़रूरी हैं ।

पहली बात तो यह समझ ली जाए कि यह फ़ितरते इन्सानी है कि अब हमें सान्निध्य (तर्क़रुब) और प्रेम अपेक्षित हो तो उन लोगों का तरीक़ा अपनाया जाए जो ख़ुद अल्लाह के प्रिय हैं । इसीलिए हज के मनासिक हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) और उनके घर वालों के किए हुए आमाल के मुताबिक़ है ।

दूसरी बात यह है कि हज के मनासिक प्रेम और समर्पण भाव से ओत-प्रोत हैं । इनसे अल्लाह के सामने पूर्ण समर्पण, स्नेह और अधीनता का प्रदर्शन होता है । दीवानावार तवाफ़ और सई किये जाते हैं और रेगिस्तान में भावनात्मक रूप से ज़ाहिर किया जाता है कि अल्लाह से बंदे का ताल्लुक़ क़ायम व मज़बूत है ।

तीसरी बात यह है कि इन पवित्र स्थलों की ज़ियारत से जहां उम्मत के सरदार के आसार हों, ईमानी कैफ़ियत में ताज़गी पैदा होती है । इसकी दिव्यता और बरकतों से इन्सान फलीभूत होता है । यह वह पत्थर है जिसे हुज़ूर (सल्ल॰) ने चूमा, यह वह जगह है जहां हुज़ूर (सल्ल॰) ने तवाफ़ किया । ये वे स्थल हैं, जहां हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) हज़रत इस्माईल (अलैहि॰) और हज़रत हाज़रा (अलैहि॰) के क़दम पड़े ।

यही हाल हाजी का बैतुल्लाह से लेकर अरफ़ात तक के क़ामात की ज़ियारत से होता है । चौथी बात यह कि जब ह इन ज़ियारतों से फ़ारिग़ होकर निकलता है तो जीवन ऐसा वच्छ और पवित्र होता है, मानो अभी जन्म लिया है । सारे नाह माफ़ हो चुके होते हैं । हुज़ूर (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि जिसने हज किया और अपने को उद्दंडता और काम-वासना । बचाए रखा, वह इस तरह वापस हुआ कि जिस तरह उस न था, जिस दिन उसकी मां ने उसे जन्म दिया' बुख़ारी)। गोया अल्लाह ने उसके सारे पिछले गुनाह माफ़ कये । अब वह नये सिरे से अपने जीवन की स्वच्छ तख़्ती र नेकी और तक़वा के आमाल लिख ले ।

पांचवीं बात यह है कि जहां नमाज़ व्यवस्था एवं नुशासन सिखाती है, ज़कात इस अनुशासन के लिए साधन उपलब्ध कराती है, रोज़ा नुशासन का शुद्धि एवं पवित्रीकरण (तज़किया) रता है-वहां हज इस अनुशासन और व्यवस्था सामूहिक गति पैदा करता है । हर जिस्म जो हतमंद हो, दौलतमंद हो और मुत्तक़ी (ईश-रायण) हो-लेकिन घर से बाहर न निकले, रकत न करे, जद्दोजेहद न करे किस काम ा ! वह जिस्म उस वक़्त कारआमद और र्थक है जब वह हरकत करे । हज इन्सानी भ्यता में यह हरकत पैदा करता है ।

छठी बात यह है कि इस हरकत के धार पर ही एक जगह पर मुस्लिम-एकता ौर मुस्लिम शक्ति का दृश्य देखने में आता । तौहीद का मर्कज़ क़ायम होता है । करूपता, समरसता और सद्भाव क़ायम ता है । इसी तरह सातवीं बात यह है कि ल्लाह के सिपाहियों का एक विश्व-स्तरीय गठन वजूद में आता है । आठवीं बात यह कि संगठन निरर्थक है यदि वह एकजुट प से ज़िन्दगी गुज़ारने का फ़ैसला न करे र उस पर अमल न करे ।

अतएव इस विश्व-सम्मेलन में इस माअत के लिए सामूहिक व सियासी फ़ैसले किये जाने चाहिएं कि यही इस सुन्नत का उद्देश्य है । हुज़ूर (सल्ल॰) ने सिर्फ़ इबादते आशिक़ाना ही नहीं अंजाम दी, बल्कि सियासी व समाजी निर्देश भी अरफ़ात, मिना व मुज़दलफ़ा के मैदानों में दिये । आपने फ़रमाया–

'लोगो! मेरे बाद एक-दूसरे की गर्दन न मारने लगना, तुम्हारी इज़्ज़त, जान व माल एक दूसरे पर हराम है । आज से सारे सूद मेरे क़दमों के नीचे हैं । बच्चा जिसके बिस्तर पर पैदा हुआ, उसका है । ज़ानी (व्यभिचारी) के लिए पत्थर । जिस तरह औरतों पर तुम्हें अधिकार हैं, उसी तरह तुम पर औरतों के अधिकार हैं । आज से काले, गोरे, अजमी व अरबी सब बराबर हैं । किसी को किसी पर श्रेष्ठता नहीं आदि-आदि !



दिमाग़ीन®
ब्रेन टॉनिक
• दिमाग़ीन हर आयु के मानसिक एवं शारीरिक रूप से व्यस्त लोगों के लिए लाभप्रद है।
• दिमाग़ीन एक पोषक एवं औषधीय गुणों से परिपूर्ण फल आँवला (मुख्य घटक) द्वारा तैयार किया जाता है, जिसमें विटामिन 'सी' सबसे अधिक मात्रा में पाया जाता है तथा इसमें केल्शियम एवं आयरन भी पाया जाता है।
• दिमाग़ीन एकाग्रता बढ़ाता है साथ ही थकान कम करता है।
• दिमाग़ीन मुंह की दुर्गंध दूर करता है तथा पाचन को सुधारता है।
• दिमाग़ीन एक अत्यंत स्वादिष्ट, स्फूर्तिदायक एवं शक्ति से भरपूर यूनानी औषधि है।


दवाख़ाना तिब्बिया कालिज
मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ़

क़ुरबानी का उद्देश्य

■ अबू अहमद नूर इलाही

जानवर की क़ुरबानी अल्लाह की क़ुरबत (समीपता) हासिल करने के ज़रियों में से एक निहायत ही उच्च ज़रिया है । माल व जान की क़ुरबानी के बग़ैर इन्सान अपनी ज़िन्दगी के बेहतरीन उद्देश्यों को हरगिज़ हासिल नहीं कर सकता । दुनिया के भौतिक एवं नश्वर उद्देश्य भी क़ुरबानियों के बग़ैर हासिल नहीं हो सकते । अल्लाह की समीपता और उसकी रज़ामंदी जो इन्सानी ज़िन्दगी का परम उद्देश्य है, उसके लिए तो बड़ी से बड़ी क़ुरबानी की ज़रूरत है ।

इन्सान के पास भौतिक संसार में सबसे क़ीमती चीज़ उसकी जान है । ज़रूरत पड़ने पर ख़ुदा की राह में अपनी जान की क़ुरबानी देना ख़ुदा के बन्दों पर लाज़िम है । अगर जान के बदले अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) हासिल हो जाए तो यह सौदा बहुत ही सस्ता है । जान की क़ुरबानी के बाद दूसरे दर्जे पर अपनी प्रिय चीज़ों की क़ुरबानी है जैसे माल, दौलत आदि ।

क़ुरबानी चूंकि इन्सानी फ़ितरत का तक़ाज़ा है, इसलिए इन्सान की उत्पत्ति के साथ ही क़ुरबानी का सिलसिला भी शुरू हो जाता है । अत: हज़रत आदम (अलैहि॰) जो सबसे पहले इन्सान थे, उन्हीं के ज़माने से क़ुरबानी का प्रचलन भी शुरू हो चुका था । जैसा कि क़ुरआन में उनके दो बेटों की क़ुरबानी का ज़िक्र मौजूद है–'उन्हें आदम के दो बेटों का वाक़िया सुनाइये, जबकि दोनों ने क़ुरबानी दी थी–एक की तो क़बूल हो गयी मगर दूसरे की क़बूल न हुई ।'

इसी तरह हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) को बेटे की क़ुरबानी का हुक्म हुआ । चूंकि अल्लाह का मक़सद उनके बेटे की जान लेना नहीं था बल्कि उनके ईमान का ख़ुलूस (निष्ठा) का इम्तिहान अपेक्षित था । इसलिए उनके बेटे की जगह मेढ़े की क़ुरबानी क़बूल फ़रमायी, ताकि आने वाली नस्लें भी इस इबराहीमी सुन्नत पर अमल कर सकें ।

क़ुरबानी पर एतिराज़

अल्लाह का इरशाद है–'हमने हर उम्मत के लिए

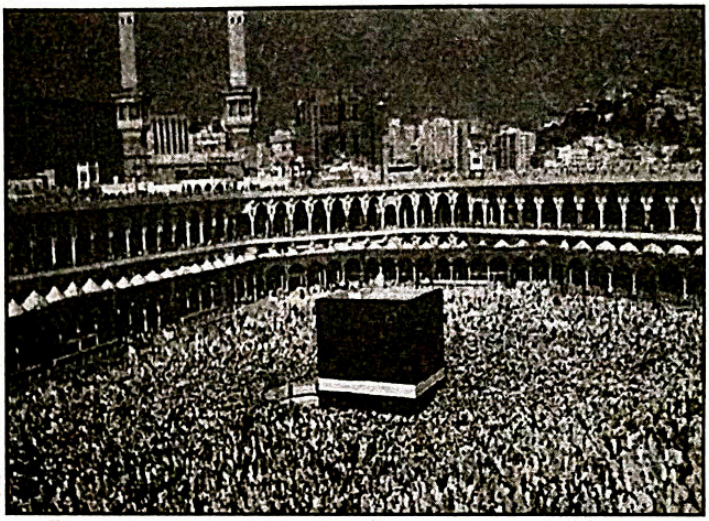

क़ुरबानी करना मुक़र्रर किया है ताकि वे उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें अता किये थे ।' अल्लाह की तरफ़ से तो हर ज़माने में हर उम्मत को यही हुक्म मिला था कि जानवरों की क़ुरबानियां महज़ अल्लाह की रज़ा और उसकी क़ुरबत हासिल करने के लिए दिया करें । लेकिन मक्का के मुशरिकों ने अल्लाह के नेक बन्दों के लिए–जिन्हें वे ख़ुदा की तरफ़ से प्रतिनिधि, दिव्यात्मा समझते थे–क़ुर्बानियां, मन्नतें और नज़्रें देना शुरू कर दीं तो अल्लाह ने अपने आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के ज़रिये अल्लाह के लिए क़ुरबानियां और नज़्रें देने की क़दीम सुन्नत (सनातन परंपरा) को फिर से जारी करवाया ।

क़ुरबानी के लिए अगरचे वक़्त मुक़र्रर है, मगर इसके लिए कोई ख़ास जगह सुनिश्चित नहीं है । कुछ लोगों का यह कहना है कि क़ुरबानी सिर्फ़ मक्का में हाजियों के लिए जाइज़ है । इसके सिवा दुनिया के अन्य क्षेत्रों के लिए जाइज़ नहीं । दूसरे, यह कि क़ुरबानी करना बेरहमी है । इसलिए क़ुरबानी करने के बजाय जानवर की क़ीमत सदक़ा (दान) कर देनी चाहिए ताकि उससे ग़रीबों का फ़ायदा हो । इनका यह कहना सरासर ग़लत और शैतानी वसवसा है । हदीस से साबित है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) मदीना में पूरे दस साल क़ुरबानी करते रहे, जबकि हज मक्का में होता है । रहा बेरहमी का सवाल उठाना, तो अल्लाह जो सारी कायनात का

ख़ालिक़ (स्रष्टा), मालिक, सर्वशक्तिमान और पालनहार है, जब ख़ुद उसी ने क़ुरबानी का हुक्म दिया है तो फिर इस क़िस्म की बहानेबाज़ी आक़ा की नाफ़रमानी के समान है और ग़ुलामी के आदाब के सरासर ख़िलाफ़ है ।

रही यह बात कि क़ुरबानी की जगह सदक़ा कर देना चाहिए, इस तरह एक तरफ़ तो क़ुरबानी अदा हो जाएगी और दूसरी तरफ़ ज़रूरतमंदों, ग़रीबों को फ़ायदा पहुंचेगा जो क़ुरबानी के ज़रिये नहीं पहुंच सकता । हर साल क़ुरबानी की सूरत में लाखों रुपया ज़ाया होता है, अगर यह जन-कल्याण (रिफ़ाई काम) में ख़र्च किया जाए तो इससे मुल्क और मिल्लत को बहुत फ़ायदा पहुंच सकता है । इन एतिराज़ों का जवाब यह है–

पहली बात तो यह है कि सदक़ा क़ुरबानी का बदला नहीं हो सकता । इसलिए कि तमाम इबादतों की एक ज़ाहिरी सूरत है एक बातिनी (आंतरिक) हक़ीक़त...या यूं कहिये कि एक ज़ाहिरी शरीर और एक उसकी आत्मा । जिस तरह हर शरीर में उसके अनुरूप आत्मा होती है, उसी तरह हर इबादत की हक़ीक़त और रूह (अन्तर्भावना) उस इबादत ही के अनुरूप होती है । जो हिकमत और रूह एक इबादत में कारफ़रमा होती है, वह किसी दूसरी इबादत में नहीं पायी जा सकती । मसलन सदक़ा की ज़ाहिरी सूरत है माल ख़र्च करना और उसकी आंतरिक भावना है इन्सानों से हमदर्दी, समानता और कल्याण की भावना उत्पन्न करना । इसी तरह क़ुरबानी की एक ज़ाहिरी सूरत है यानी जानवर ज़िब्ह करना । एक उसकी रूह है यानी त्याग, उत्सर्ग (ईसार) की भावना उत्पन्न करना । जिस तरह एक चीज़ की रूह दूसरी चीज़ में नहीं डाली जा सकती, उसी तरह एक इबादत की रूह दूसरी इबादत में नहीं पायी जा सकती । लिहाज़ा ईसार का जो जज़्बा जानवर की क़ुरबानी से पैदा हो सकता है वह सदक़ा से हरगिज़ नहीं पैदा हो सकता । इसकी मिसाल तो ऐसी है जिस तरह किसी शख़्स को प्यास लगी हो और हम उससे कहें रोटी खा लो, या जिसे भूख लगी हो उससे कहें पानी पी लो । चूंकि रोटी और पानी के मक़सद अलग-अलग हैं, इसलिए एक चीज़ का मक़सद दूसरी चीज़ के इस्तेमाल से हरगिज़ हासिल नहीं हो सकता ।

जब हमें जानवर की क़ुरबानी का हुक्म दिया गया है तो इस हुक्म की तामील क़ुरबानी ही से हो सकती है, सदक़ा से नहीं हो सकती । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि क़ुरबानी के दिनों में जानवर की क़ुरबानी से बढ़कर कोई अमल अल्लाह को महबूब नहीं । आप (सल्ल॰) ने यह भी फ़रमाया कि क़ियामत के दिन क़ुरबानी का जानवर सही सलामत साक्षात हाज़िर होगा और उसके शरीरांगों, बाल और प्रत्येक ख़ून की बूंद के बदले क़ुरबानी देने वाला अज्र व सवाब (पुण्य) का हक़दार होगा । क़ुरबानी का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले ही क़ुरबानी अल्लाह के यहां क़बूल हो जाती है । इसलिए क़ुरबानी ख़ुशी-ख़ुशी दिया करो ।

इस्लाम से पहले लोग क़ुरबानी करके उसका गोश्त बैतुल्लाह (काबा) के सामने लाकर रखते थे और उसका ख़ून बेतुल्लाह की दीवारों पर लथेड़ देते थे । क़ुरआन ने बताया कि ख़ुदा को तुम्हारे इस गोश्त और ख़ून की ज़रूरत नहीं है, उसके यहां तो क़ुरबानी के वे ज़ज़्बात पहुंचते हैं जो ज़िब्ह करते वक़्त तुम्हारे दिलों में बेदार होते हैं या बेदार होना चाहिए । क़ुरबानी गोश्त और ख़ून का नाम नहीं है, बल्कि उस हक़ीक़त का नाम है कि हमारा सब कुछ ख़ुदा के लिए है और उसी की राह में क़ुरबान होने के लिए है ।

क़ुरबानी करने वाला सिर्फ़ जानवर के गले पर ही छुरी नहीं फेरता बल्कि वह सारी नापसन्दीदा ख़्वाहिशों, दुष्इच्छाओं के गले पर ही छुरी फेरकर उन्हें ज़िब्ह कर डालता है । इस शऊर के बग़ैर जो क़ुरबानी की जाती है, वह इबराहीम (अलैहि॰) और इस्माईल (अलैहि॰) की सुन्नत की नहीं बल्कि एक क़ौमी रस्म है, जिसमें गोश्त-पोस्त की फ़रावानी व बहुलता तो होती है लेकिन तक़वा (ईश-परायणता) नापैद होता है जो क़ुरबानी की रूह है । क़ुरआन में अल्लाह फ़रमाता है–

'अल्लाह को इन जानवरों का गोश्त और ख़ून हरगिज़ नहीं पहुंचता बल्कि उसे तुम्हारी जानिब से तुम्हारा तक़वा पहुंचता ।' (सूरह हज्ज, आ॰ 38)

ख़ुदा के दरबार में वही अमल मक़बूल और स्वीकार्य है, जिसका प्रेरक ख़ुदा का तक़वा हो । इरशाद है–'अल्लाह सिर्फ़ मुत्तक़ियों (ईश-परायण लोगों) का अमल ही क़बूल करता है ।' (सूरह अल-माइदा, आ॰ 27)

त्याग और क़ुरबानी का महान पर्व

■ विद्या प्रकाश

प्रतिवर्ष इस्लामी कैलेंडर के अंतिम बारहवें मास ज़िलहिज्जा की दस तारीख़ को परंपरागत रूप से श्रद्धा और विश्वास की भावना के साथ इस्लाम धर्मावलंबियों द्वारा ईदुल-अज़हा का पर्व मनाया जाता है ।

इस पर्व पर क़ुरबानी के संबंध में क़ुरआन मजीद में विवरण है । इसमें क़ुरबानी देने के लिए किसी पशु विशेष का नामोल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन स्थापित परंपरानुसार इस दिन ऊंट, भेंड़ अथवा बकरे की क़ुरबानी का प्रचलन है ।

ईदुल अज़हा का प्रमुख संदेश मनुष्य के आचरण में त्याग और बलिदान की भावना का संचारण तथा अल्लाह के प्रति असीम श्रद्धा भक्ति प्रकट करना है । हज़रत इबराहीम (अलैहि०) की बेमिसाल क़ुरबानी का त़ाल्लुक़ इस पर्व से है । इसमाईल और इसहाक़ उनके दो बेटे थे । जब अल्लाह तआला की ओर से उन्हें अपनी प्यारी वस्तु को उनके लिए राहे ख़ुदा में क़ुरबान करने का हुक्म हुआ तो इबराहीम (अलैहि०) अपने प्रिय पुत्र इसमाईल को क़ुरबान करने के इरादामंद हो गये । उन्होंने जब इस संबंध में अपने बेटे को बताया तो भी ख़ुशी-ख़ुशी इसके लिए रज़ामंद हो गये । इसके बाद इबराहीम (अलैहि०) ने अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर अपने कलेजे के टुकड़े लख़्ते जिगर पर छुरी चला दी लेकिन अल्लाह ने उनके बेटे के स्थान पर दुंबा खड़ा कर दिया और इबराहीम (अलैहि०) की क़ुरबानी क़बूल कर ली ।

इबराहीम (अलैहि०) की इस ख़ुदापरस्ती से प्रसन्न होकर ख़ुदा ने इबराहीम (अलैहि०) के निवास स्थान पर निर्मित इबादतगाह को दुनिया भर के इस्लाम धर्मावलंबियों की इबादत का सबसे बड़ा केन्द्र बना दिया तथा प्रत्येक मोमिन मुसलमान के लिए ज़िन्दगी में कम से कम एक बार उसकी ज़ियारत को अनिवार्य बना दिया और इसके साथ ही आवश्यक रूप से क़ुरबानी करने का भी हुक्म दिया ।

इबराहीम अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी और बेमिसाल क़ुरबानी से संबंधित यह वाक़िया मौजूदा ज़िन्दगी के दौर में भी प्रेरक और प्रासंगिक है । वर्तमान समाज में मानव जीवन दिन-ब-दिन भोगवादी होता जा रहा है । न खान-पान और न काम वासना पर हमारा नियंत्रण है । चलचित्र गृहों में प्रदर्शित की जाने वाली फ़िल्मों तथा टी०वी० सीरियलों में सेक्स खुल्लमखुल्ला परोसा जा रहा है । सिनेमा हाल में बालिग़ों के लिए दिखलायी जाने वाली फ़िल्मों के शो में सोलह-सत्रह साल के कमसिन किशोरों से लेकर पैंसठ-सत्तर साल के वृद्धों को आसानी से लाइन लगाकर टिकट ख़रीदते देखा जा रहा है तथा वे तरह-तरह के रतिज रोगों के शिकार हो रहे हैं ।

यौनाकांक्षाओं की तृप्ति और अधिकाधिक अर्थ प्राप्ति के लिए मानव हर प्रकार का नैतिक-अनैतिक, उचित-अनुचित कर्म करने को उतावला और उन्मत्त है । आज व्यक्ति की आर्थिक उन्नति तो हो रही है, मगर नैतिक और चारित्रिक पतन की क़ीमत पर । आये दिन नये-नये आर्थिक घोटालों का ख़ुलासा हो रहा है ।

इबादतगाह में लोगों की भीड़ कम होती है, मगर मयखानों, जुआघरों, सनेमाघरों और वेश्यालयों में लोगों की भीड़ ज़्यादा नज़र आती है । इस परिस्थिति में इबराहीम (अलैहि०) का त्याग हमारे लिए अनुकरणीय है । आज शानदार बंगला, वातानुकूलित कार, टेलीविज़न, मोबाइल फ़ोन का क़ीमती हैंडसेट और मूल्यवान स्वर्णाभूषण होकर भी हमारा मन अशांत, तनावग्रस्त तथा अवसादग्रस्त है तथा हम हार्ट और हाइपरटेंशन के मरीज़ हैं ।

इन समस्याओं से मुक्ति और शांति प्राप्ति का एकमेव उपाय इबराहीम (अलैहि०) के त्यागमय जीवनादर्शों का अनुसरण है । इबराहीम (अलैहि०) द्वारा पाक परवरदीगारे आलम की ख़ुशनूदी के लिए नूरचश्म बेटे इसमाईल की क़ुरबानी तो एक प्रतीक है जिसका वास्तविक अभिप्राय और निहितार्थ यह है कि हम सांसारिक विषय वासनाओं, लाभ के लोभ, विजयासक्ति और मायामोह से बचें तथा नियम संयम से रहें । तभी हमारी आत्योन्नति, आत्म-सुधार और आत्म-शांति संभव है ।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

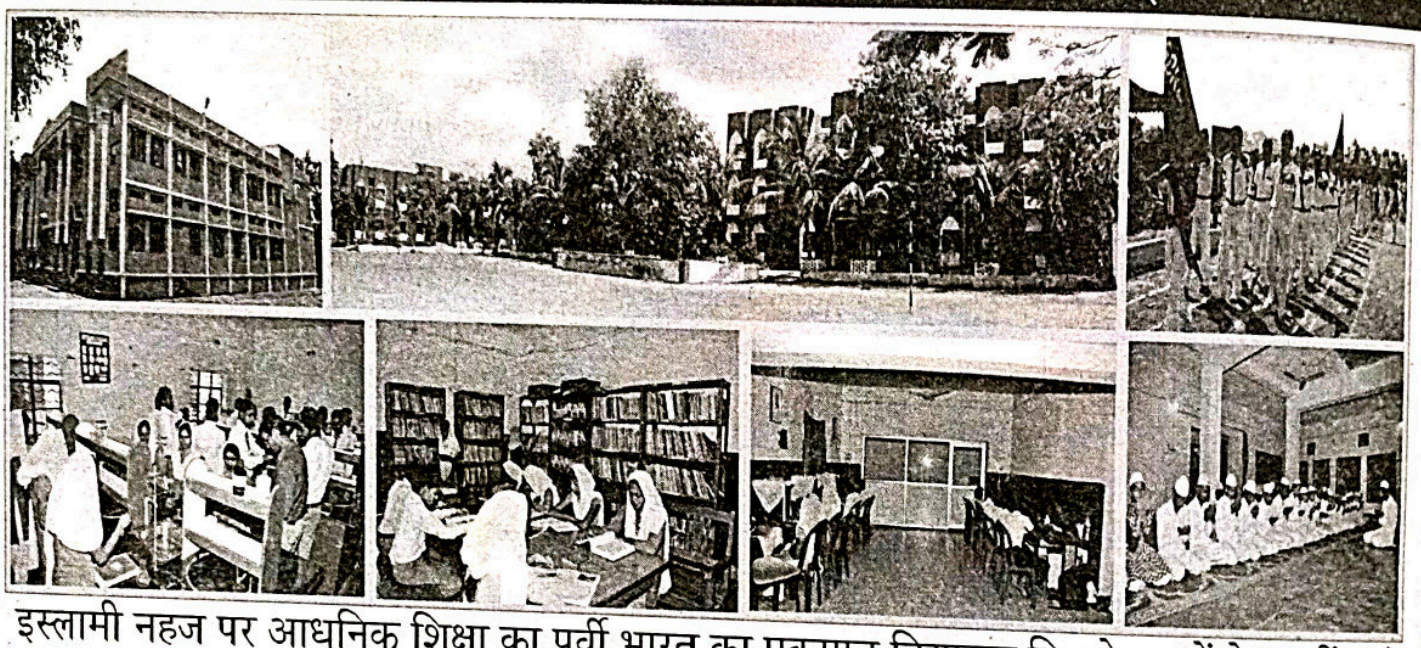

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम.ए., वी.एड.ए (अलीग.)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम.एस.सी., बी.एड.
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

लाखों गांवों के करोड़ों युवा बेरोज़गार

■ वेदव्यास

देश के क़रीब 65 करोड़ युवा हैं जो 35 वर्ष से कम आयु के हैं । इधर नये भारत में कोई 6 लाख 40 हज़ार गांव हैं और इनकी अधिकतर आबादी बेरोज़गार है, क़र्ज़ में डूबी है, भूमिहीन परिवार अधिक है, रहने को कच्चा मकान तक नहीं है । अधिकांश गांवों में सड़क, पीने का पानी, स्वास्थ्य सेवा, स्कूल और महिलाओं के लिए शौचालय तक नहीं है । लेकिन नया भारत एक बात में दुनिया का सबसे बड़ा अजूबा है और बेरोज़गारों की फ़ौज जल, जंगल और ज़मीन की चौकीदारी में गांवों से शहर और शहरों से राजधानी और राजधानी से लालक़िले तक अफरा-तरफी में भटक रही है ।

सच यह है कि लाखों गांवों के करोड़ों युवा बेरोज़गारी की महामारी के शिकार हैं और कोढ़ में खाज की तरह 1990 से लेकर अब तक या तो आत्महत्याएं कर रहे हैं या फिर अपराधी बन रहे हैं या फिर राजनीति में भाड़े के सैनिक बनकर असंतोष, अराजकता, विक्षोम और लूटपाट करने वाली धर्म-जाति की वाहिनी तथा रक्षक दल बनाकर लोकतंत्र को, राष्ट्रवाद में बदल रहे हैं । अब से बात भी सामने आ गयी है कि 2014 में नये भारत को जनादेश बनाने वाली गांवों में युवा बेरोज़गारों की फ़ौज ही थी तो विकास और धर्म-जाति बचाने की दुहाई लेकर सोशियल मीडिया पर सपनों का तूफ़ान मचा रही थी । ये इस विश्वास में थी कि कांग्रेस जाएगी तभी अच्छे दिन आएंगे ।

लेकिन भारत के ग्रामीण युवा बेरोज़गारों की आज की विडंबना यह हं कि नये भारत की नयी सरकार-नोटबंदी, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, जनधन खाता, स्वच्छता मिशन, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, कालाधन मिटाओ, भ्रष्टाचार हटाओ जैसी सैकड़ों योजनाओं तथा धूमधाम के बाद भी आज यह तक नहीं बता रही है कि विकास दर 7 प्रतिशत ले जाने के बाद भी ग़ैर-खेती किसानी क्षेत्र भी एक प्रतिशत से ज़्यादा नौकरियां क्यों नहीं दे पा रही है ?

अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आने के बाद तो स्थिति यह हो रही है कि सूचना प्रौद्योगिकी (आई०टी०) में भारत के युवाओं का भविष्य अंधकार में फंसता जा रहा है और भारत में विदेशी पूंजी निवेश के अकाल से नये रोज़गार ख़त्म हो रहे हैं तथा ग्रामीण युवाओं में भारी निराशा और उत्पाद-उपद्रव बढ़ रहे हैं । एक सरकारी जानकारी के अनुसार अकेले राजस्थान में पिछले तीन साल में सबसे अधिक धरने, प्रदर्शन, सड़क बंदी पुलिस मुठभेड़ और पत्थरबाज़ी भी युवा बेरोज़गारों ने ही किये हैं, जबकि विपक्षी दलों की राजनीति सांप-छछंदर हो गयी है और सभी तरफ़ पुलिस अधिकारी, गौरक्षक और भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो का जलवा मीडिया में पसरा हुआ है । यहां तक कि स्थानीय टी०वी० चैनल और अख़बार भी घर-गृहस्थी की वारदातों, थाना-कचहरी की रिपोर्ट और पुलिस कांस्टेबलों के बयानों से ही भर पड़े हैं । अभी हमने राजस्थान की ग्रामीण पत्रकारिता के वरिष्ठ साथी बद्रीनारायण ढाका की महत्वपूर्ण शोधपूर्ण पुस्तक 'ग्राम युवा' पढ़ी तो पता चला कि हम पूरी तरह घाटे की खेती में, क़र्ज़ के जाल में और शराब, चोरी, डकैती और कंपनियों की खुली लूट के बाज़ार में इतने बुरे फंस गये हैं कि युवाओं के रोज़गार तो दुर्लभ है और युवा ग्रामीण आसपास के शहरों-क़स्बों में आकर लूटपाट और मारधाड़ का कारोबार चला रहे हैं ।

हमें आश्चर्य तो यह लगता है कि नयी राजनीति का नया भारत केवल शहरों तक सिमट गया है और बेरोज़गारी की समस्या को कोई समझना ही नहीं चाहता और पुलिस, फ़ौज सिपाही को ही आर्थिक बदहाली से निबटने की ज़िम्मेदारी अब दे दी गयी है । गांवों में युवा बेरोज़गारी का ऐसा हाल है कि विकास और सद्भाव का आधार ही मिट रहा है । हम आंकड़ों से सच्चाई की आंख में धूल नहीं झोंकना चाहते और केवल ध्यान दिलाना चाहते हैं कि भारत की बदहाली को जानने के लिए नये भारत के निर्माताओं को अपने पांवों तले की आग को देखना चाहिए । क्योंकि मोर नाचता है तो सुंदर लगता है लेकिन जब वह अपने पांवों की तरफ़ देखता है, तो रोता है । ग्रामीण भारत के करोड़ों बेरोज़गार अभी मुक्त बाज़ार और टेक्नॉलोजी की जादूगरी से अराजकता की तरफ़ जा रहे हैं, क्योंकि ग़ैर-बराबरी कम नहीं हो रही है । अत: समय रहते गांवों के युवा बेरोज़गारों तक कोई दाल-रोटी का जुगाड़ करिए । (वि०फ़ी०)

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE
INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)
Mumbai (Maharashtra)

Chairman : Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

हार्न

■ मधु हातेकर
(पुणे)

अक्सर हम किसी भी व्यक्ति को उसके रहन-सहन या उसके पेशे से परखने की ग़लती कर बैठते हैं । समाज के निम्न स्तर का सीधा-साधा व्यक्ति भी कभी-कभी कोई ऐसी सीख दे जाता है कि उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते । एक दिन मैं अपने एक दोस्त के घर उससे मिलने टैक्सी से जा रहा था । रास्ते में ट्रैफ़िक कम होने से टैक्सी वाला अच्छी तरह चला रहा था ।

इतने में टैक्सी के सामने हाथ गाड़ी पर बहुत-सा सामान लादे एक हाथ गाड़ी वाला इस धूप में भी अपनी गाड़ी ढकेले जा रहा था । हालांकि कोई दूसरा वाहन हमारी टैक्सी के आगे नहीं था, पर हाथ गाड़ी धीरे-धीरे आगे जाने से टैक्सी भी धीरे-धीरे आगे जा रही थी । कुछ देर तक ये तमाशा तो देखता रहा, पर आख़िर मेरा संयम टूट गया और मैंने टैक्सी वाले से कहा–

हार्न बजाओ न, कब तक इस हाथ गाड़ी वाले के पीछे चलते रहेंगे । मेरे दो बार कहने पर भी टैक्सी वाले पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा, फ़िर कुछ देर बाद इसके पहले कि मैं कुछ कहूं, टैक्सी वाला बोला-साहब । आप जो कह रहे हैं, वह ठीक है, पर कोशिश करके भी उस बेचारे को गाड़ी आने पर अपनी गाड़ी आगे निकालने को जगह नहीं मिल रही ।

उसकी मजबूरी हम समझ नहीं सकते । वह हाथ गाड़ी वाला जो गाड़ी चला रहा है वो अपना ख़ून जलाकर गाड़ी चला रहा है । हमारी गाड़ी गैस से चल रही है उसकी मजबूरी हमें समझ लेना चाहिए । उनका सम्मान करना चाहिए । शारीरिक श्रम करने वाले के लिए मेरे मन में भी सहानुभूति है पर उनका सम्मान करना चाहिए ये बात आज मुझे इस टैक्सी वाले ने सिखा दी । सहानुभूति और सम्मान दो अलग-अलग है । इन दोनों का फ़र्क़ आज इस अनपढ़ टैक्सी वाले से सीखने को मिला ।

ऐसी ही एक बात मुझे उस दिन मालूम हुई, वो ये कि गाड़ी में हार्न किस लिए होता है । इसका प्रयोजन क्या है ? इसके बारे में भी हमने कभी सोचा ही नहीं गाड़ी तो हार्न की ज़रूरत क्यों पड़ी इसका अपेक्षित उत्तर मुझे आज मिला । टैक्सी वाले ने कहा–पहले लोग पैदल चलते थे या फिर बैलगाड़ी या टांगों पर जाते थे । कुछ सालों बाद पेट्रोल से चलने वाली मोटरें आयी । मनुष्यों के साथ ही गाय, बैल, भैंस, बकरियों जैसे जानवर भी सड़क पर चलते थे । ऐसे में गाड़ी को आगे चलाना मुश्किल होता था । उन्हें रास्ते से हटाने के लिए हार्न की ज़रूरत पड़ी । हार्न की आवाज़ सुनते ही पैदल चलने वाले या जानवर रास्ते से हट जाते थे और गाड़ी वाला आसानी से गाड़ी आगे निकाल सकता था ।

पहले तांगों में और कार, मोटरों में गेंद जैसे भांपू हाथ से बजाने वाले हार्न होते थे । बाद में नये-नये तरह के अलग-अलग आवाज़ों के हार्न आये पर कुछ बहुत कर्कश आवाज़ों के हार्न आये । इनकी आवाज़ भी इतना लाउड होती है कि कई बार कानों पर हाथ भी रखने पड़ते हैं । इसकी ध्वनि प्रदूषण भी अधिक फैलाती है । फिर भी लोग ज़ोर-ज़ोर से हार्न बजाते हैं । स्कूल और अस्पताल के पास हार्न बजाना मना होते हुए भी लोग हार्न बजाते हैं । सिग्नल पर भी अक्सर देखा गया है । रेड सिग्नल है । सामने की गाड़ी जब तक रेड सिग्नल है । तब तक सामने वाला गाड़ी बढ़ा नहीं सकता । फिर भी पीछे के कुछ गाड़ी वाले हार्न बजाते ही रहते हैं । हालांकि हार्न जानवरों के लिए बनाए गये थे पर आजकल शहरों में सड़कों पर जानवर नहीं चलते पर अब मनुष्य ही जानवर हो गया ।

'कान्ति' (मा०) का आगामी विशेषांक

'इस्लामी जीवन दर्शन'

लेख एवं अन्य सामग्रियां आमंत्रित हैं–
संपादक, 'कान्ति' (मा०), दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-25, editorkanti@yahoo.com

हमारी अहम पुस्तकें

आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ० मुहम्मद अहमद	50.00
अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	70.00
एकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	35.00
एक ईश्वर की धारणा	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	40.00
परलोक की छाया में	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	90.00
पहेली जीवन की	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	12.00
रिसालत	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	45.00
लोगोः हिसाब का समय निकट आ चुका है	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	14.00
खुदा की गुलामी इंसान की बुलन्दी	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	18.00
जीवन मृत्यु के पश्चात्	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
बनाव और बिगाड़	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
शान्ति-मार्ग	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
सोचने की बातें	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
प्यारी माँ के नाम इस्लामी संदेश	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	10.00
मानव जीवन और परलोक	शोबा-ए-दावत	24.00
मुक्ति-मार्ग	इनामुर्रहमान ख़ाँ	10.00
मौत के बाद क्या?	डॉ० शाहिद अली	10.00
मरने के बाद क्या होगा?	बिन्तुल इस्लाम	60.00
सत्य की खोज	मौलाना वहीदुद्दीन खाँ	22.00
नबी करीम (सल्ल०) की दुआएँ (पाकेट साइज़)	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	64.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें?	खुर्रम मुराद	26.00
रोज़ा और उसका असली मक़्सद	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
इबादत	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम में पाकी और सफ़ाई	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	20.00
नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं?	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इमान की कसौटी	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
खुतबाते हरम	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
नमाज़	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	14.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS NEW DELHI
मरकज़ी मकतबा इस्लामी पब्लिशर्स

MMI PUBLISHERS

D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

फेफड़े का कैंसर : लक्षण व उपचार

■ डॉ॰ ए॰ के॰ दीक्षित

जहां पहले, फेफड़े का कैंसर होने की अधिकतम आयु सीमा चालीस वर्ष थी, वहीं जनसामान्य में धूम्रपान व तम्बाकू के बढ़ते सेवन ने यह आयु सीमा घटाकर पच्चीस-तीस वर्ष कर दी है । हाल ही में भारत के तीन प्रमुख शहरों क्रमशः बंगलौर, बम्बई एवं मद्रास में किये गये सर्वेक्षणों व शोध कार्यों से यह ज्ञात हुआ है कि अन्य शहरों की अपेक्षा बम्बई में 'फेफड़े के कैंसर' की संख्या सबसे ज़्यादा है ।

फेफड़े के कैंसर के पनपने पर शरीर में कुछ लक्षण दृष्टिगोचर होने लगते हैं । अगर शरीर में काफ़ी दिनों तक खांसी, बलगम आदि की शिकायत बनी रहे तो ये लक्षण फेफड़े का कैंसर होने की मुख्य चेतावनी मानी जा सकती है । अन्य लक्षणों में प्रमुख हैं–सीने में दर्द, सांस लेने में तकलीफ़, निमोनिया दमा, आवाज़ में भारीपन, गले व चेहरे पर सूजन, भूख में कमी, थकान, वज़न में कमी आदि । इसके अलावा दूरस्थ अंगों में आक्रमण के कारण शरीर के अन्य हिस्सों पर भी कुछ लक्षण उभर सकते हैं, जैसे–सरदर्द, कमज़ोरी, भूख न लगना और हड्डियों में दर्द ।

कभी-कभी फेफड़ों का कैंसर शरीर के हारमोंस में असंतुलन पैदा कर देता है, जिससे शरीर में मौजूद नमक का स्तर काफ़ी कम हो जाने के कारण रोगी बेहोशी की अवस्था में चला जाता है । ध्यान देने योग्य बात यह है कि अगर उक्त लक्षण शरीर में दो हफ़्तों से ज़्यादा समय तक बने रहते हैं तो चिकित्सक की सलाह तुरंत लेनी चाहिए जिससे शुरुआत में ही इलाज संभव हो सके ।

वैज्ञानिकों द्वारा किये जा रहे नित नये आविष्कारों ने चिकित्सकों को रोग की गहनता व विभिन्न आयामों व मापदंडों से जांच करने के लिए तमाम अत्याधुनिक प्रणालियां विकसित कर दी हैं, जिससे आजकल फेफड़े के कैंसर की जांच के लिए चिकित्सक विभिन्न तरीक़े अपना रहे हैं, जैसे–वायोप्सी, ब्रोन्कोस्कोपी, सी॰टी॰ स्कैन, फ्लूरोस्कोपी, मीडियस्टिनोस्कोपी आदि ।

एक बार रोगी में फेफड़े के कैंसर की पुष्टि हो जाने पर चिकित्सक परस्पर विचार-विमर्श व व्यापक दृष्टिकोण अपनाकर रोग का उपचार प्रारंभ करते हैं । जिससे इलाज बेहतरी से किया जा सके और रोगी पर उसके सकारात्मक प्रभाव पड़ें ।

प्रायः उपचार के लिए चिकित्सक तीन तरीक़े इस्तेमाल में लाते हैं–

- रेडिएशनथिरैपी : इसके अंतर्गत विकिरण किरणों का इस्तेमाल कैंसर ग्रस्त कोशिकाओं को मारने के लिए किया जाता है ।
- कीमोथिरैपी : इसमें दवाओं द्वारा रोग का उपचार किया जाता है ।
- शल्य चिकित्सा ।

कभी-कभी चिकित्सक रेडियोथिरैपी व कीमोथिरैपी का इस्तेमाल एक साथ भी करते हैं, पर यह रोग की गहनता पर निर्भर करता है ।

फेफड़े के कैंसर के उपचार हेतु दीर्घकालीन उपचार की ज़रूरत होती है, इसलिए कभी-कभी रोगी को इलाज के दौरान विभिन्न प्रकार के मानसिक व शारीरिक अनुभवों से गुज़रने के साथ-साथ शरीर पर भी काफ़ी अनचाहे प्रभाव झेलने पड़ते हैं । इसलिए रोगी को हमेशा अपना इलाज चिकित्सक की देख-रेख में ही कराना चाहिए । जिससे शरीर पर दवाओं का अगर कोई अनचाहा प्रभाव शारीरिक व मानसिक रूप से दृष्टिगोचर हो तो उसका निदान सही समय पर किया जा सके ।

चिकित्सकों व शोधकर्ताओं के अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि आजकल कैंसर तो जड़ से ही समाप्त कर दिये जाते हैं और व्यक्ति सामान्य जीवन जीता है । अगर लोग रोग के लक्षण दृष्टिगोचर होते ही प्रारंभिक अवस्था में मर्ज़ के प्रति गंभीरता का रुख़ अपना कर चिकित्सकों से परामर्श करें तो गंभीर से गंभीर कैंसर का सफ़ाया किया जा सकता है । किंतु लोगों की मानसिकता काफ़ी विचित्र होती है । जैसे ही पता चलता है कि उन्हें कैंसर है तो वे बजाय हिम्मत से काम लेने के हाथ-पैर फुला लेते हैं । घबराहट बढ़ने के

साथ-साथ उनकी भूख-प्यास भी ख़त्म होने लगती है और ये हालत न सिर्फ़ रोगी बल्कि उसके साथ-साथ परिवारजनों व इष्ट मित्रों की भी हो जाती है ।

हाल ही में किये गये एक शोध से यह परिणाम प्राप्त हुए हैं कि जो रोगी इलाज के दौरान बेहतर खान-पान रखते हैं उनमें रोग के प्रति प्रतिरोधक क्षमता आवश्यकतानुसार होती है । ऐसे रोगियों पर उपचार का अन्य रोगियों की तुलना में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।

यदि रोगी निम्न बातों पर अमल करे तो काफ़ी हद तक नकारात्मक भावनाओं से उबर सकता है–

- चिकित्सक से अपने रोग के बारे में खुलकर बातचीत कर संपूर्ण जानकारी हासिल कर लें ।
- क्रोध, अवसाद व तनाव मुक्त होकर स्वयं में रोग से लड़ने के लिए सकारात्मक सोच विकसित करें ।
- स्वयं को भावनात्मक रूप से मज़बूत करने के लिए 'कैंसर मनोवैज्ञानिक' से परामर्श लेने में हिचकिचाएं नहीं ।

लगभग 85 प्रतिशत लोगों में 'फेफड़े का कैंसर' धूम्रपान से होता है, जिनमें दस से बीस प्रतिशत तक वे लोग होते हैं जो वातावरण में मौजूद प्रदूषण युक्त हवा में सांस लेने के कारण इस रोग के शिकार हो जाते हैं । इस रोग की व्यापकता के पीछे तम्बाकू एक अहम कारण होने के कारण अनुसंधानकर्ता फेफड़े के कैंसर की रोकथाम हेतु प्रयत्नशील हैं । सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान में रोक और कैंसर की पूर्वावस्था की पहचान करके सम्यक् औषधियों द्वारा तथा आवश्यकतानुसार शल्य चिकित्सा करके कैंसर होने से रोकने की संभावना पैदा हो रही है । वर्तमान में कैंसर का प्रारंभिक अवस्था में निदान व उपचार ही सफलता का मूलमंत्र है ।

कान का ख़तरनाक रोग

कान के इस रोग को 'सिक्रिटरी ओटाइटिस मीडिया' (कान में पानी आ जाना) कहते हैं । इस रोग में कान के मध्य भाग में पानी आ जाता है, जिससे कान बन्द-सा महसूस होता है । ऐसी दशा में कम सुनाई देने लगता है, कान में हर समय अवरोध-सा अनुभव होता रहता है । इस रोग में न तो कान में दर्द होता है और न ही बहता है । वयस्कों में प्रायः यह तकलीफ़ ज़ुकाम के बाद होती है और अधिकतर एक ही कान में होती है ।

इस रोग में बच्चों के प्रायः दोनों ही कान प्रभावित हो जाते हैं तथा बहरापन ज़्यादा होता है । एडन्वायड से पीड़ित बच्चों में इसके होने की संभावना ज़्यादा रहती है । एडन्वायड, टॉसिल जैसी गांठ होती है जो नाक के पिछले हिस्से में तालू के ऊपर होती है । इसमें बच्चे को ज़ुकाम बना रहता है, नाक से सांस लेने में रुकावट होने लगती है और बच्चा मुंह से सांस लेने लगता है ।

यह 'सिक्रिटरी ओटाइटिस मीडिया' बच्चों में थोड़े समय से बहरेपन का मुख्य कारण होता है । वयस्क लोगों में कान का यह पानी पतला होता है तथा समय पर उचित औषधियों का प्रयोग होने से इस रोग पर जल्द क़ाबू पाया जा सकता है । दवाइयों से ठीक न होने की दशा में यह पानी निकाल दिया जाता है ।

बच्चों में कान का यह पानी गाढ़ा होता है । बच्चों में इसका मुख्य लक्षण कम सुनायी देना है जो प्रायः स्कूल टीचर या उसके परिवार के लोग जल्दी अनुभव करते हैं । बुलाने पर बच्चा स्वाभाविक रूप से सुन नहीं पाता या कक्षा में पीछे बैठने पर उसे सुनायी नहीं पड़ता । बच्चों में थोड़े समय से बहरेपन का प्रायः यही मुख्य कारण होता है ।

विशेष रूप से अगर बच्चा मुंह से सांस लेता है तथा अक्सर उसे ज़ुकाम रहता रहा हो । तब बच्चों में यह पानी गाढ़ा होता है तथा दवा से ठीक होने की संभावना कम रहती है । ऐसी स्थिति में प्रायः पानी निकालना पड़ता है । पानी निकालने के बाद दुबारा पानी बनने की आशंका बनी रहती है । इसलिए पानी निकालने के बाद, प्लास्टिक जैसे पदार्थ की एक बारीक ट्यूब जिसे 'ग्रोमेट' कहते हैं, कान के पर्दे में लगा दिया जाता है । 'ग्रोमेट' लगाने के बाद पानी दुबारा नहीं बनता । दो-ढाई महीने बाद ग्रोमेट अपने आप निकल जाता है ।

यदि बच्चा 'एडन्वायड' से पीड़ित है तो ऐसी दशा में कान से पानी निकालना, ग्रोमेट लगाना तथा एडन्वायड का ऑपरेशन एक साथ हो सकता है । 'एडन्वायड' का ऑपरेशन बेहोश करके होता है । कान से पानी निकालने तथा 'ग्रोमेट' लगाने में 5 से 10 मिनट का समय लगता है । वयस्कों में यह शून्य करने की एक सुई लगाकर (लोकल इनेस्थीसिया) किया जाता है । इसके लिए अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता नहीं है ।

● डॉ॰ आर॰ के॰ सिंह

कितना कम हुआ भ्रष्टाचार ?

● विविधा फ़ीचर्स

'न खाऊंगा, न खाने दूंगा' क्या आप बता सकते हैं कि तीन साल पहले चुनाव-प्रचार के दौरान कही गयी इस बात पर कितने लोग विश्वास करते हैं ? इस सवाल का जवाब जानने में आपकी मदद सेंटर ऑफ़ मीडिया स्टडीज (सी॰एम॰एस॰) का एक अध्ययन कर सकता है ।

विकास के मुद्दों पर शोध और मीडिया एडवोकेसी की इस संस्था के हालिया अध्ययन सी॰एम॰एस॰-इंडिया करप्शन स्टडीज के मुताबिक़ लगभग 40 फ़ीसद लोगों का विश्वास है कि मोदी सरकार सार्वजनिक सेवाओं में फैले भ्रष्टाचार को कम करने में जी-जान से जुटी हुई है, जबकि इतने (40 फ़ीसद) ही लोगों का कहना है कि केंद्र सरकार ने भ्रष्टाचार कम करने की कोशिश की तो है लेकिन एक सीमा तक ही । भ्रष्टाचार कम करने को लेकर लोगों के मन में जैसी धारणा केंद्र सरकार के बारे में है वैसी ही भाजपा शासित सूबों की सरकारों के बारे में नहीं ।

सर्वेक्षण में शामिल सभी 20 राज्यों के लोगों द्वारा 10 सार्वजनिक सेवाओं को हासिल करने में चुकाई गयी घूस की राशि को जोड़ दें तो रक़म 6350 करोड़ रुपये की आती है । 2005 में यह आंकड़ा 20500 करोड़ रुपये का था । हालांकि 58 प्रतिशत आम नागरिक आर॰टी॰आई॰ के बारे में जानते हैं लेकिन एक प्रतिशत से भी कम लोग सूचना मांगने के लिए आर॰टी॰आई॰ का इस्तेमाल करते हैं, जबकि इस क़ानून को लागू हुए एक दशक का समय हो रहा है ।

सी॰एम॰एस॰ के शोध-अध्ययन के मुताबिक़ जिन राज्यों में एक तिहाई (33 प्रतिशत) से ज़्यादा लोग मानते हैं कि सूबे की सरकार सार्वजनिक सेवाओं में भ्रष्टाचार कम करने को लेकर ज़रा भी प्रतिबद्ध नहीं उनमें राजस्थान, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर शामिल है ।

ग़ौरतलब है कि राजस्थान और हरियाणा में भाजपा की बहुमत की सरकार है, जबकि जम्मू-कश्मीर की पी॰डी॰पी॰ (जम्मू एंड कश्मीर पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी) सरकार में बी॰जे॰पी॰ गठबंधन के साथी के रूप में शामिल है । अध्ययन का एक दिलचस्प तथ्य यह भी है कि भ्रष्टाचार विरोधी अन्ना हजारे आंदोलन के लहर पर सवार होकर दिल्ली विधानसभा में प्रचंड बहुमत हासिल करने वाली आम आदमी पार्टी की सरकार के बारे में एक तिहाई से ज़्यादा लोगों का कहना है कि वह भ्रष्टाचार पर लगाम कसने को लेकर गंभीर नहीं जान पड़ती । डेवलपमेंट रिसर्च और मीडिया एडवोकेसी के मक़सद से काम करने वाली संस्था सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज का यह अध्ययन देश के 20 राज्यों के ग्रामीण और शहरी घरों के सर्वेक्षण पर आधारित है । इसमें चिकित्सा-सेवा, बिजली-आपूर्ति, पी॰डी॰ एस॰, न्यायिक और बैंकिंग सेवाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार के बारे में लोगों की राय जानी गयी है ।

सर्वेक्षण में शामिल सभी 20 राज्यों के लोगों द्वारा 10 सार्वजनिक सेवाओं को हासिल करने में चुकाई गयी घूस की राशि को जोड़ दें तो रक़म 6350 करोड़ रुपये की आती है । 2005 में यह आंकड़ा 20500 करोड़ रुपये का था । हालांकि 58 प्रतिशत आम नागरिक आर॰टी॰आई॰ के बारे में जानते हैं लेकिन एक प्रतिशत से भी कम लोग सूचना मांगने के लिए आर॰टी॰आई॰ का इस्तेमाल करते हैं, जबकि इस क़ानून को लागू हुए एक दशक का समय हो रहा है ।

बीते अक्तूबर-नवंबर (2016) में सर्वेक्षण में शामिल प्रत्येक राज्य के 2 ज़िलों के 150 घरों के सर्वेक्षण पर आधारित इस अध्ययन के मुताबिक़ 43 फ़ीसद लोगों का कहना है कि बीते एक साल में सार्वजनिक सेवाओं की उपलब्धता में भ्रष्टाचार बढ़ा है और कुल 6350 करोड़ रुपये की रक़म लोगों ने सार्वजनिक सेवा हासिल करने में घूस के रूप में चुकाई है । सरकारी स्कूल में दाख़िला देने, पी॰डी॰एस॰ का राशन कार्ड बनाने या फिर कोर्ट में मुक़दमे

की तारीख़ जल्दी तय करने के नाम पर लोगों से न्यूनतम 20 रुपये और अधिकतम 50 हज़ार रुपये तक की राशि घूस के रूप में मांगी गयी ।

रिपोर्ट अनुसार तुलनात्मक रूप से देखें तो साल 2005 से 2017 के बीच की अवधि में सार्वजनिक सेवाओं को हासिल करने के बारे लोगों में धारणा बनी है कि उनमें भ्रष्टाचार पहले की तुलना में कम हुआ है और उन्हें भ्रष्टाचार के अनुभव भी तुलनात्मक रूप से कम हुए हैं । सी॰एम॰एस॰-इंडिया करप्शन स्टडी के ताज़ा ग्यारहवें दौर के सर्वेक्षण से पता चलता है कि 20 राज्यों के लगभग 43 प्रतिशत परिवार मानते हैं कि उनके राज्य में बीते एक साल के दौरान सार्वजनिक सेवाओं को हासिल करने में भ्रष्टाचार बढ़ा है ।

सर्वेक्षण में शामिल आधे से ज़्यादा (तक़रीबन 56 प्रतिशत) लोगों का मानना है कि नोटबंदी के दौर (नवंबर-दिसंबर 2016) के दौरान सार्वजनिक सेवाओं की सुपुर्दगी में भ्रष्टाचार में कमी आयी । सी॰एम॰एस॰-इंडिया करप्शन स्टडी 2017 के मुताबिक़ 20 राज्यों के तक़रीबन एक तिहाई परिवारों ने कहा कि बीते एक साल में उन्हें किसी न किसी सार्वजनिक सेवा को हासिल करने में भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ा । सी॰एम॰एस॰-इंडिया करप्शन स्टडी 2005 में 53 फ़ीसदी लोगों ने कहा था कि उन्हें सार्वजनिक सेवाओं को हासिल करने में बीते एक साल में भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ा है ।

साल 2017 के करप्शन स्टडी से पता चलता है कि राज्यों में दी जा रही सार्वजनिक सेवाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार के संयुक्त औसत (31 प्रतिशत) की तुलना में कुछ राज्यों में बहुत ज़्यादा तादाद में लोग सार्वजनिक सेवाओं में भ्रष्टाचार की बात मानते हैं । ऐसे राज्य हैं कर्नाटक (77 प्रतिशत), आंध्र प्रदेश (74 प्रतिशत), तमिलनाडु (68 प्रतिशत), महाराष्ट्र (57 प्रतिशत), जम्मू और कश्मीर (44 प्रतिशत), पंजाब (42 प्रतिशत) और गुजरात (37 प्रतिशत) व जिन राज्य में दस प्रतिशत से भी कम लोगों ने कहा कि उन्हें बीते एक साल में सार्वजनिक सेवाओं को हासिल करने में भ्रष्टाचार का अनुभव हुआ, उनके नाम हैं हिमाचल प्रदेश (3 प्रतिशत) और केरल (4 प्रतिशत)।

सर्वेक्षण में शामिल सभी 20 राज्यों में तक़रीबन सभी परिवारों ने कहा कि जब भी सार्वजनिक सेवा प्रदान करने वाले अधिकारियों ने उनसे कहा कि आपको घूस देना होगा, उनके पास घूस देने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं था । घूस न देने पर सेवा न प्रदान करने की सबसे ज़्यादा घटना (3.5 प्रतिशत) भूमि संबंधी काग़ज़ात हासिल करने में हुई । इसके बाद सेवा प्रदान करने से इन्कार की सबसे ज़्यादा घटना पुलिस-सेवा (1.8 प्रतिशत) के मामले में देखने में आयी ।

सर्वेक्षण में शामिल परिवारों का यह भी कहना था कि पी॰डी॰एस॰ का राशन कार्ड बनवाने, बच्चे को सरकारी स्कूल में दाख़िल देने या फिर अदालती मामले में सुनवाई की तारीख़ जल्दी देने के लिए उनसे न्यूनतम 20 रुपये से लेकर अधिकतम 50 हज़ार रुपये तक की घूस मांगी गयी ।

दारुल मुसन्निफ़ीन का हिन्दी प्रकाशन

1.	अरब और सिंध के संबंध	–मौलाना सैयद सुलैमान नदवी	200/-
2.	अल-फ़ारूक़	–अल्लामा शिब्ली नोमानी	450/-
3.	रहमत-ए-आलम	–सैयद सुलैमान नदवी	60/-
4.	उत्तम आदर्श	–मौलाना सैयद सुलैमान नदवी	125/-
5.	मुहम्मद शिब्ली नोमानी	–डॉ॰ बाबर अशफ़ाक़ ख़ान	80/-
6.	हज़रत आयशा (रज़ि॰) की जीवनी	–मौलाना सुलैमान नदवी	230/-
7.	भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की निष्पक्षता, भाग-1	–सैयद सबाहुद्दीन	125/-
8.	भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की निष्पक्षता, भाग-2	–सैयद सबाहुद्दीन	180/-
9.	भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की निष्पक्षता, भाग-3	–सैयद सबाहुद्दीन	225/-

पता : दारुल मुसन्निफ़ीन शिब्ली एकेडमी, आज़मगढ़ (यू॰पी॰) 276008

Cont. : Fakharul Islam Sb., Mob. : 9935233940

विश्वास

15 सैनिकों का दल हिमालय की दुर्गम चौकी पर 3 महीने की तैनाती के लिए जा रहा था । रास्ता दुर्गम और बर्फ़ीला था । बीच-बीच में गिरती बर्फ़ ने उनका मार्ग और कठिन बना दिया था । वे तीन घंटे से लगातार चले जा रहे थे । बीच-बीच में बातें भी करते जा रहे थे । बातों के दौरान, साथ चल रहे मेजर ने कहा कि 'इस समय अगर एक कप गरमा-गरम चाय मिल जाए, तो बस मज़ा आ जाए ।' इस असंभव-सी कल्पना पर सब खिलखिला कर हंस पड़े और आगे बढ़ते रहे ।

लगभग एक घंटे चलने के बाद उन्हें दूर एक झोपड़ीनुमा ढांचा नज़र आया । नज़दीक पहुंचने पर लगा कि शायद चाय की गुमटी है । जब बिल्कुल पास पहुंच गये तो निराश हो गये । झोपड़ी के दरवाज़े पर ताला लटका हुआ था । टूटी हुई खिड़की से एक सैनिक ने अन्दर झांककर देखा तो उत्साहित होकर बोला 'सरजी, है तो चाय की दुकान ही । चाय का सामान भी दिख रहा है ।

ख़राब मौसम की मार और आगे के दुर्गम रास्ते के बारे में सोचकर सभी चुप एक-दूसरे का मुंह देख रहे थे । आख़िर मेजर की स्वीकृति मिल गयी कि ताला तोड़ दिया जाए । ताला तोड़कर अन्दर गये तो उनकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था । चाय के साथ कुछ बिस्कुट के पैकेट भी थे । सबने बिस्कुट खाए और चाय पी । लगभग एक घंटे के विश्राम के बाद वे आगे की यात्रा के लिए तैयार हो गये । जब चलने लगे तो मेजर ने कहा कि 'हमने किसी की दुकान से चाय और बिस्कुट लिए हैं । हमें इस तरह नहीं जाना चाहिए ।' उसने पर्स से एक हज़ार रुपये निकाले और दुकान के काउंटर पर रख दिये और उसके ऊपर चीनी का डिब्बा इस तरह रख दिया जिससे रुपये उड़े नहीं और दूकान मालिक की नज़र भी उस पर पड़ जाए । अब मेजर अपराध बोध से मुक्त हो गया था । उसने सैनिकों से कहा कि झोपड़ी का दरवाज़ा पहले के तरह बंद करके उस पर ताला लटका दिया जाए और आगे प्रस्थान किया जाए ।

तीन माह के बाद एक-दूसरे दल ने उनकी चौकी पर मोर्चा संभाला और जब वे उसी रास्ते से ख़ुशी-ख़ुशी वापस लौट रहे थे । इस दौरान दुश्मनों तथा मौसम दोनों ओर से कोई बड़ी घटना नहीं हुई थी, और वे सभी सुरक्षित थे । रास्ते में वे फिर उसी चाय की दूकान पर रुके । इस बार दूकान खुली हुई थी और दूकान का मालिक एक बूढ़ा भी दूकान में बैठा था । एकाएक 15 ग्राहकों को एक साथ देखकर उसकी आंखों में चमक आ गयी । उन्होंने बूढ़े से चाय और बिस्कुट लिए ।

बातों-बातों में उन्होंने बूढ़े से उसके बारे में और दूकान के बारे में पूछा कि 'इस दुर्गम और वीरान जगह पर चाय की दूकान क्यों चला रहा है । यहां क्या मिलता है और कैसे गुज़ारा होता है । बूढ़े ने उन्हें अपनी बहुत-सी बातें बतायी और उनमें प्रमुख थी उसका भगवान पर विश्वास ।

एक सैनिक ने कहा कि ''बाबा यदि भगवान होता तो तुम्हें यहां इस वीराने में ग़रीबी की हालत में क्यों रखता ?

बूढ़ा एकदम नाराज़ हो गया ''ऐसा मत बोलो साहब, अभी तीन महीने पहले की बात है । मेरा बेटा बीमार हो गया था । मैंने दूकान बंद की और उसे अस्पताल ले गया । डॉक्टर ने दवाइयां लिखकर दीं । मेरे पास पैसे नहीं थे । मैं दुखी मन से दूकान लौट रहा था और भगवान से मदद के लिए प्रार्थना करता आ रहा था । जब मैं दूकान पर पहुंचा तो देखा कि दूकान का ताला टूटा हुआ है । मैं और दुखी हो गया कि जो कुछ दूकान में था, वो भी गया । परन्तु साहब आप विश्वास नहीं करेंगे उस रात साक्षात भगवान मेरी पुकार सुनकर मेरी दूकान में आये । उन्होंने दूकान में चाय पी और कुछ बिस्कुट भी खाए और जाते हुए मेरे काउंटर पर एक हज़ार रुपये रख गये ।

'साहब, आपको मालूम नहीं कि वे हज़ार रुपये मेरे लिए क्या थे ? मैंने बेटे के लिए दवाई ख़रीदी, कुछ घर का सामान ख़रीदा और दूकान के लिए भी कुछ और सामान मैंने ख़रीद लिया । साहब मेरे काम पूरे हो गये और मेरी सारी परेशानी भगवान ने एक बार में दूर कर दी । उसकी आंखों में विश्वास की चमक थी ।

सभी सैनिकों की आंखें अब मेजर की ओर उठ गयीं थीं । मेजर उठा और उसने बूढ़े का कस कर आलिंगन किया और कहा, ''हां बाबा आप बिल्कुल ठीक कहते हो, भगवान सचमुच होता है ।'' सबका बिल चुकाते हुए उसने कहा ''बाबा आपकी चाय लाजवाब थी' और सैनिकों को चलने का आदेश दिया ।

प्रस्तुति : **डॉ॰ नीरा प्रसाद**
बेंगलूरू

भारतीय अर्थव्यवस्था पर जी॰एस॰टी॰ के प्रभाव

■ शाहिद इलियास

स्वतंत्र भारत के इतिहास का सबसे बड़ा कर सुधार कहा जा रहा 'गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (जीएसटी) एक जुलाई 2017 से लागू हो गया । 30 जून 2017 की मध्यरात्रि को संसद के सेंट्रल हॉल में आयोजित एक विशेष समारोह में राष्ट्रपति डॉ- प्रणब मुखर्जी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे लॉन्च किया । देश और राज्यों में फ़िलहाल लागू लगभग दर्जन भर अलग-अलग़ अप्रत्यक्ष करों का स्थान लेने जा रहे जीएसटी को लेकर सरकार का कहना है कि इससे 'एक देश, एक बाजार, एक करव्यवस्था' को अमली जामा पहनाया जा सकेगा । टैक्स किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए प्राणवायु (ऑक्सीजन) के समान है । उत्पादन और टैक्स ही वह धुरी है जिसके चारों ओर अर्थव्यवस्था की गाड़ी हमेशा चक्कर लगाती रहती है । देश का समग्र विकास इसी पर निर्भर करता है ।

आधुनिक भारत के इतिहास में 30 जून का दिन ऐतिहासिक रहा । संसद भवन के सेंट्रल हाल में एक विशेष कार्यक्रम में पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रिमोट से बटन दबाकर जीएसटी लागू किया । जीएसटी लागू करते समय यह दावा किया गया कि इससे पूरे देश में चीज़ों की क़ीमतों में एक रूपता आएगी और देश के किसी भी प्रदेश में सामान ख़रीदने पर उपभोक्ताओं को एक समान क़ीमत चुकानी होगी । जीएसटी आने के बाद बहुत-सी चीज़ें सस्ती हो जाएंगी, जबकि इससे पहले लगने वाले टैक्स से ज़्यादा जीएसटी लगने की वजह से कुछ चीज़ों व सेवाओं का इस्तेमाल महंगा हो जाएगा । जीएसटी में हर चीज़ के लिए टैक्स का अलग-अलग स्लैब तय किया गया है ।

जबकि सच्चाई यह है कि एक-डेढ़ महीने में ही इससे रोज़मर्रा के इस्तेमाल की चीज़ों की क़ीमतों में काफ़ी हद तक इज़ाफ़ा हो गया है और आम आदमी पर इसका नकारात्मक असर दीखने लगा है और जीएसटी का स्वागत व्यापारियों के विरोध से हो रहा है । छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स और देश भर में कुछ अन्य संगठनों ने इसके प्रति तीव्र विरोध जताया है ।

जीएसटी के लागू होते ही काग़ज़ों की ख़ाना पूर्ति का काम बहुत बढ़ गया । इसके नियमों का अनुपालन तो कठिन ही है । व्यापारी को माल एक स्थान से दूसरे स्थान भेजने के पहले बिल काट कर जीएसटी पोर्टल पर अपलोड करना होगा । इस बिल में माल की क्वालिटी, मात्र, विक्रेता की डिटेल तथा उस वाहन की डिटेल डालनी होगी, जिससे माल भेजा जा रहा है । इसके बाद व्यापारी को ई-वे बिल बनाना होगा, जैसे विगत में डिलेवरी चालान होता है । वाहन को अपने साथ इसे ई-वे बिल को रखना होगा । यदि माल का एक गाड़ी से दूसरी में पलटी किया जाता है, तो ट्रक ड्राइवर को नए ट्रक की डिटेल जीएसटी पोर्टल पर अपलोड करनी होगी और पोर्टल से नया ई-वे बिल निकाल ना होगा । उद्योगों के लिए काग़ज़ी काम बहुत बढ़ जाएगा । पिछले समय में इन्हें केवल एक काग़ज़ी बिल काटना होता था, जो कि पर्याप्त होता था । अब इस मे माल का पूरा विवरण तथा वाहन का डिटेल भी डाल ना होगा । इसके अलावा और भी कई तरह की कठिनाइयां व्यापार जगत और उपंभोक्ताओं को पेश आने की आशंका है ।

सरकार को समझना चाहिए कि ताले शरीफ़ों के लिए लगाये जाते हैं । चोर के लिए ताले को खोलना आसान काम होता है । टैक्स की चोरी बंद करने का मूलमंत्र नैतिक दबाव होता है । जनता को महसूस होना चाहिए कि टैक्स देना उसकी ज़िम्मेदारी है । उसे महसूस होना चाहिए कि टैक्स अदा न करना पाप होगा । यह नैतिक दबाव तब बनेगा, जब सरकार पारदर्शी तरीक़े से जनता को दिखा सकेगी कि वसूले गए राजस्व का जनहित में सदुपयोग हो रहा है । मोदी सरकार ने सरकारी धन के उपयोग में निश्चित रूप से सुधार लाया है ।

परन्तु राजस्व का एक बड़ा हिस्सा भ्रष्ट सरकारी कर्मियों को उत्तरोत्तर अधिक सुविधाएं मुहैया कराने में किया जा रहा है । जीएसटी के साथ-साथ मोदी सरकार की कर्मठता के अर्थव्यवस्था पर दो परस्पर विरोधी प्रभाव होंगे ।

कैसे दूर होगी किसानों की बदहाली ?

■ संजीव पांडेय

वर्ष 2014 और 2015 भारतीय किसानों के लिए बुरे थे । दो सालों तक लगातार ख़राब मानसून के चलते देश के ग्यारह राज्यों के ढाई सौ से ज़्यादा ज़िलों में सूखे की स्थिति रही । इस स्थिति में भी बिहार के औरंगाबाद ज़िले के चिल्हकी गांव के किसान ख़ुशहाल थे । वे आज भी ख़ुशहाल हैं । औरंगाबाद-डाल्टेनगंज रोड पर स्थित पिछड़ी जाति बहुल इस गांव की ख़ुशहाली का कारण गांव के ही कुछ दिहाड़ी मज़दूर हैं, जो कुछ साल पहले तक हरियाणा के कृषि फार्मों में मज़दूरी करते थे ।

उन्होंने वहां कृषि फार्म में स्ट्रॉबेरी की खेती करना सीखा और वापस अपने गांव जाकर स्ट्रॉबेरी उगाने का फ़ैसला किया । ये मज़दूर अपने गांव में एक-दो एकड़ के सीमांत किसान थे । अब उन्हें देखकर गांव के कई किसानों ने स्ट्रॉबेरी की खेती शुरू कर दी है । इस स्ट्रॉबेरी के ख़रीदार कोलकाता के व्यापारी हैं, जो किसानों को अग्रिम धनराशि दे जाते हैं । बिहार सरकार इस गांव की खेती से इतनी प्रसन्न है कि इसे आदर्श गांव घोषित कर दिया है ।

आज पूरे देश के किसान बदहाल हैं । इनकी बदहाली के कारण कई हैं । ख़ुद किसान ग़लतियां कर रहे हैं । उधर सरकारों ने ख़राब मानसून के बावजूद इनकी बदहाली रोकने के लिए कोई उपाय नहीं किया । सरकार बड़े घरानों के क़र्ज़ वसूली पर चुप्पी साधे रहती है, वहीं किसानों की क़र्ज़ माफ़ी पर रिजर्व बैंक से लेकर सरकार तक सख़्त हो गयी है । जबकि किसानों की बदहाली को ठीक करने के लिए सरकारों को फ़िज़ूलख़र्ची और भ्रष्टाचार रोकना होगा । इस तरह बचाई गयी धनराशि किसानों के कल्याण पर ख़र्च की जा सकती है ।

हाल ही में उत्तर प्रदेश में एक मंत्री ने जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का दौरा किया । यहां बनाए जा रहे अतिथि गृह में महंगे पत्थर और महंगे वृक्ष लगाए जाने पर ख़ुद मंत्री हैरान थे । अतिथिगृह में विएतनामी पत्थर लगाए जा रहे थे । एक पत्थर की क़ीमत नौ सौ रुपये थी । यही नहीं, यूरोप से महंगे पेड़ मंगवाए गये थे । एक पेड़ की क़ीमत लाखों में बतायी गयी । उत्तर प्रदेश के किसानों का हाल काफ़ी अरसे से बुरा है ।

बुंदेलखंड में बारिश और सिंचाई के अभाव में लगभग पांच लाख परिवार तबाह हो गये । पर उत्तर प्रदेश में सरकार का ध्यान बुंदेलखंड में भूख से मर रहे किसानों की तरफ़ नहीं था । बल्कि बुंदेलखंड से कुछ दूरी पर आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे बनाने पर था, जिसकी उपयोगिता पर ही सवाल है । इस एक्सप्रेस-वे पर तेरह हज़ार करोड़ रुपये तब ख़र्च किये गये, जब इसके समांतर राष्ट्रीय राजमार्ग-2 स्थित है । एक्सप्रेस-वे बनाने का एक उद्देश्य सरकार ने किसानों का कल्याण भी बताया था । सवाल है कि जिस राज्य में किसान भूख और क़र्ज़ से परेशान हों, वे महंगे एक्सप्रेस-वे पर कैसे सफ़र करेंगे ?

आंकड़े बताते हैं कि 2016 में बुंदेलखंड में सूखे के कारण कुछ महीनों में ही तीन लाख पशुओं की मौत हो गयी थी । क्योंकि सूखे के कारण इलाक़े में चारे का अभाव था । इस इलाक़े के लाखों लोग पलायन कर रोज़ी-रोटी के चक्कर में महानगरों में पहुंच गये । उनके पास खाने के लाले थे । दूसरी तरफ़ सरकारें किसानों के विकास का तर्क देकर एक्सप्रेस-वे का निर्माण करती रहीं । देश की बदहाली बुलेट ट्रेन और एक्सप्रेस-वे से दूर नहीं होगी । देश की बदहाली कृषि क्षेत्र का विकास ही दूर करेगा, जिसके ऊपर देश की पचास प्रतिशत आबादी निर्भर करती है ।

देश के कई राज्यों में किसानों की हालत ख़राब है । लेकिन सरकारों की शाहख़र्ची में कोई कमी नहीं आयी है । जब किसानों की क़र्ज़ माफ़ी की बात होती है तो सरकारी ख़ज़ाना ख़ाली होने का बहाना बनाया जाता है । कहा जाता है कि अगर क़र्ज़ माफ़ होंगे तो सरकारों को अन्य विकास योजनाओं में कटौती करनी होगी ।

दूसरी तरफ़ रिजर्व बैंक और क़र्ज़ देने वाले बैंकों का तर्क होता है कि किसानों की क़र्ज़ माफ़ी से ग़लत संदेश

जाएगा । जो व्यक्ति क़र्ज़ लौटाना चाहता है, वह भी ऐसे फ़ैसले से क़र्ज़ वापस नहीं करता । यह तर्क अजीब है । क्या चार-पांच लाख करोड़ रुपये का क़र्ज़ डकारने वाले देश के पूंजीपतियों ने क़र्ज़ न लौटाने की प्रेरणा किसानों से ली है ?

पंजाब में मुख्यमंत्री के क़ाफ़िले में इस्तेमाल होने वाली गाड़ियों पर पिछले दस सालों में क़रीब सौ करोड़ रुपये ख़र्च किये गये । जब मुख्यमंत्री पर शाही ख़र्च हो रहा है, तो राज्य की नौकरशाही पीछे कैसे रहती ! जिन अधिकारियों को दस लाख रुपये तक की गाड़ी इस्तेमाल करने की अनुमति थी, उनके लिए सरकारी ख़ज़ाने से पंद्रह लाख रुपये क़ीमत वाली इनोवा और अन्य लग्जरी गाड़ियां ख़रीदी गयीं । यही नहीं, पंजाब के कई इलाक़ों को दुबई की तर्ज पर विकसित करने के लिए हाई-वे के बीच और किनारे पर महंगे पेड़ लगाए गये । इन पेड़ों पर आये ख़र्च से सरकारी अधिकारियों की जेबें काफ़ी भर गयी थीं । क्योंकि इन पेड़ों पर भी करोड़ों रुपये ख़र्च किये गये । जबकि एक तरफ़ राज्य के किसानों पर साठ हज़ार क़रोड़ रुपये के क़रीब क़र्ज़ हैं । क़र्ज़ के बोझ तले दबकर हज़ारों किसान आत्महत्या कर चुके हैं ।

पंजाब की राह पर महाराष्ट्र भी है । यहां हज़ारों किसान क़र्ज़ के कारणं आत्महत्या कर चुके हैं । किसानों की क़र्ज़ माफ़ी के लिए सरकार के पास पैसे नहीं हैं । वहीं राज्य में छत्तीस सौ करोड़ रुपये की लागत से शिवाजी मेमोरियल बनाया जा रहा है ।

किसानों की हालत सुधारने के लिए सरकारों को विशेष प्रयास करना होगा । किसानों की क़र्ज़ माफ़ी को लेकर पूरे देश में क़दम उठाने का वक़्त आ गया है । अगर किसान बर्बाद हुए तो देश के चमकते महानगर भी बर्बाद हो जाएंगे । उत्तर प्रदेश सरकार ने किसानों की क़र्ज़ माफ़ी का फ़ैसला कर साहसिक क़दम उठाया है । देश के दूसरे राज्यों में बदहाल होते किसानों का क़र्ज़ जल्द माफ़ होना चाहिए । वहीं समय रहते किसानों को भी चौकस रहना होगा । कई राज्यों में किसानों की दुर्दशा का कारण अकेला क़र्ज़ नहीं है । इसका उदाहरण पंजाब और हरियाणा के किसान हैं । समय रहते किसानों ने अपनी उत्पादन प्रणाली नहीं बदली तो स्थिति शायद ही बदले ।

हरित क्रांति की शुरुआत के बाद के चार दशक बहुत अच्छे थे । इसके प्रभाव में गेहूं और चावल के उत्पादन ने शुरुआती चार दशक में पंजाब के किसानों की तक़दीर बदल दी । लेकिन उस समय देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं था । समय के साथ देश के दूसरे राज्यों में चावल और गेहूं का अच्छा उत्पादन शुरू हुआ । यहीं से पंजाब और हरियाणा के किसानों की दुर्दशा शुरू हो गयी । आज जब पंजाब की ज़रूरत फल और सब्ज़ी की खेती है, तब भी किसान चावल और गेहूं की खेती कर रहे हैं । चावल की खेती पंजाब और हरियाणा के किसानों के लिए घाटे का सौदा है । लागत से कम पैसे किसानों को मिल रहे हैं । वहीं हरियाणा और पंजाब के पर्यावरण को भी भारी नुक़सान पहुंचा है ।



सफलता कैसे प्राप्त करें ?

सफलता के रास्तो में कई बार असफलता भी देखनी पड़ती है । एक इन्सान सफलता पाने के लिए अपनी कई आदतों का त्याग करता है और कई नयी आदतें अपनाता है । आइए जानते हैं सफलता के लिए 10 ज्ञान की बातें-

1. सुबह पर अपना क़ब्ज़ा कर लें

जहां कम सफल लोग सोते हैं वहीं सफल लोग रोज़ अपने नये-नये इरादों के साथ आगे बढ़ते चले जाते हैं । सुबह के समय जल्दी उठकर पूरी सुबह को ही अपने क़ब्ज़े में कर लें, ताकि आप अच्छे से अच्छा काम कर सकें । एक स्वस्थ नाश्ते के साथ अपने शरीर को बनाएं और एक अच्छी किताब के साथ अपने मस्तिष्क को । जब दुनिया में बाक़ी लोग पलंग पर आराम कर रहे होते हैं, तभी आपको अपने ये सारे काम कर लेने चाहिए और सुबह को अपने क़ब्ज़े में कर लेना चाहिए ।

2. अपना हर दिन एक उद्देश्य के साथ शुरू करें

अपने दिन की शुरुआत एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ करने से आप आसानी से अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। सफल इन्सान अपना हर एक काम किसी न किसी सकारात्मक उद्देश्य के साथ ही करता है । कोई भी काम आप क्यों कर रहे हैं, इस बात को जानना, आपमें आपके लक्ष्य को पाने की अपार ऊर्जा निर्माण करता है ।

3. दूसरों की सलाह लें

बहुत से लोग इस बात से नफ़रत करते हैं कि वे जो कुछ भी कर रहे हैं उसके प्रतिउत्तर में लोग उन्हें ग़लत बोलें और कुछ नया करने की सलाह दें । दूसरे के सलाह को स्वीकार करना कोई आसान काम नहीं है, लेकिन यदि आप ये निर्णय ले लें कि आप उनकी सलाह को सुनेंगे और अपने कार्य में सुधार की कोशिश करेंगे, तो आपका प्रदर्शन और भी ज़्यादा अच्छा होने लगेगा ।

हम यहां यह नहीं कह रहे हैं कि सभी की सलाह को सुनें और उनके अनुसार ही आगे बढ़ते रहें । बल्कि हमारा मतलब है कि आप अपने जीवन में कुछ अच्छे और सफल इन्सानों का चुनाव करें, जिनके बारे में आप सब कुछ जानते हों, या जो आपको दिल से चाहते हों और आपकी सफलता के अभिलाषी हों । उनकी सलाह को सुनकर, उनके द्वारा बताये गये उपायों पर चलने की कोशिश करें । ऐसा करने से ही आपमें आंतरिक और शारीरिक बदलाव होगा, और आपके प्रदर्शन में भी सुधार आएगा । इस अवसर पर यह बताना महत्वपूर्ण है कि मनुष्य का सबसे बड़ा शुभचिंतक और हितैषी उसका रचयिता और पालनहार है, उसने क़दम-क़दम पर हमारा मार्गदर्शन किया है । ज़रूरत है कि हम उन आदेशों और निर्देशों तक पहुंचें और उन्हें अपनाएं ।

4 . असफलता को स्वीकार करें

असफलता निश्चित ही मुश्किल होती है, कोई भी ज़िंदगी में असफल नहीं बनना चाहता । कई बार सफल इन्सान भी सफलता के रास्ते में असफल होते हैं, लेकिन वे भावनाओं में बहकर वहीं रुक नहीं जाते, बल्कि वे तो असफलता से सीखते हैं । असफलता उन्हें सिखाती है कि उन्हें अपने प्रदर्शन में क्या बदलाव करना चाहिए, कहां सुधार करना चाहिए और असफलता से ही सीखकर वे दोबारा उस ग़लती को सुधारते हैं, जो उन्होंने पहले की थी ।

5. थोड़ा-सा ज़्यादा करने की कोशिश करें

हमारा हर दिन पिछले दिन से अच्छा होना चाहिए । अगर हम जिममें 10 रेप्स मारते हैं तो 11 मारने की कोशिश करें । ऑफ़िस में जितना काम करते हैं उससे ज़्यादा करें । आप कोई ऐसा उपयोगी काम कर रहे हों, जो आपको पसंद नहीं है, तो उसे एक और बार करने की कोशिश कीजिए, इससे आपकी मानसिक विचारधारा बदलेगी । आप जानते हैं कि आपको वह काम करना पसंद नहीं लेकिन बार-बार करते रहने से उसमें आपकी रुचि निर्माण होते चली जाती है । थोड़ा-सा ज़्यादा करने की कोशिश करें, जो आमतौर पर नहीं किया जाता ।

6. अपने रवैये का चुनाव करें

किसी भी दिन घर से बाहर पहला क़दम रखने से पहले आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यही होती है कि अपने दिन का सामना करने के लिए आप किस रवैये को अपनाते हैं । नकारात्मक रवैया आपके दिन को बुरा, बहुत बुरा बना सकता है । लेकिन एक सकारात्मक रवैया आपके जीवन में

अच्छे और महान विचारों की वर्षा कर सकता है । इसीलिए हमेशा घर से बाहर निकलने से पहले अपने रवैये को निश्चित कर लें, क्योंकि जितना अच्छा रवैया आप अपनाएंगे, उतना ही अच्छा आपका दिन होगा ।

७. मुश्किल कामों को करने की कोशिश करें

जहां दुनिया में लोग सबसे सरल, तेज़ और आसान रास्ता अपनाकर सफल बनना चाहते हैं, वहीं आपने मुश्किल से मुश्किल रास्तों को अपनाकर सफल बनने की कोशिश करनी चाहिए । मुश्किलों से दूर भागकर आप अपनी सफलता को खुद से और भी दूर करते चले जाते हैं । आपको सफलता के रास्ते में आने वाली हर मुश्किल का सामना करना चाहिए ।

8. अपने लक्ष्य को रोज़ पुनर्स्थापित करें

यदि आप अपने लक्ष्य को रोज़ पुनर्स्थापित करते रहे तो आपके लिए सबसे अच्छी बात यही होगी कि आप आसानी से उसे प्राप्त कर सकते हो । जब आप अपनी ज़रूरत के अनुसार काम करते हैं, तभी आप अपने आपको सशक्त बना सकते हैं ।

9. कोई आपको भयभीत नहीं कर सकता

कभी भी कोई बड़ा काम करने में डर न महसूस करें, यह न सोचें कि आपके पास अनुभव नहीं है । आपमें भी बहुत अनुभव है और आप इससे भी बड़ा काम कर सकते हैं । दूसरों को अपने से ज़्यादा बुद्धिमान समझना अच्छा है, लेकिन इससे अपने आपमें विश्वास और हिम्मत कम नहीं होनी चाहिए ।

10. हमेशा धैर्य रखें

अच्छी बातें या चीज़ें उन्हीं के रास्तों में आती हैं जो सब्र करते हैं, और सफल व्यक्ति इस बात को अच्छी तरह जानते हैं । एक ही रात में सफलता बहुत ही कम लोगों को प्राप्त होती है और यह स्वभाविक नहीं है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

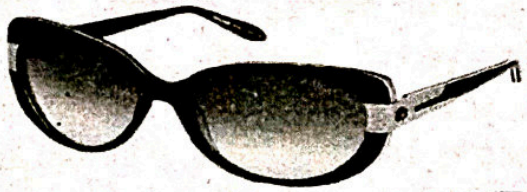


Asian Optics

a multibrand showroom

SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184

Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

SHALIMAR

RESTAURANT



Special Items

CHICKEN

- Murg Mumtaz
- Chicken Malaysia
- Jalwa Kabab
- Tiranga Kabab
- Seekh Kabab
- Multani Kaban

SEA FOOD

- Fish Tandoori
- King Prawns Tandoori
- Fish Angara

VEG

- Paneer Tikka



CHICKENS KABABS

- Chicken Tandoori
- Chicken Liver Takka
- Chicken Tikka
- Murg Kohinoor
- Reshmi Kabab
- Sholay Kabab
- Pahadi Kabab
- Khazana Kabab
- Chaurangi Kabab
- Sonali Kabab

Exclusively at : Shalimar Corner, Bhendi Bazar,Mumbai-400003
E-mail : info@shalimargroup.com, www.shalimargroup.com
Tel. : 23456630/34, Fax : 23456629

Posted on 20-21 August 2017
September 2017
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.08.2017
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017
Posted at DELHI R.M.S. Delhi-6



Shiraz

GOLDEN RESTAURANT





Home Delivery Menu

135, Park Street, Kolkata - 700 017
Phone : 2286-6806, 2286-6795, 2286-7272, 2286-7273
Mob. : 9831599258
shiraz.golden1412@gmail.com